भारतीय जीवन बीमा निगम
LIFE INSURANCE CORPORATION OF INDIA

*हर पल आपके साथ*

# सद्भावना

## राजभाषा पत्रिका

वर्ष 2026

भारतीय जीवन बीमा निगम, केंद्रीय कार्यालय, मुंबई

# हर पल आपके हाथ

## आपकी पॉलिसियां, भुगतान और मन की शांति अब एक ही जगह पर।

- 360° पॉलिसी विवरण
  सभी जानकारी एक ही स्थान पर
- तुरंत पॉलिसी खोजें और खरीदें
  सरल, तेज़ और डिजिटल
- तुरंत पेपरलेस पॉलिसी लोन
- तेज़, सुरक्षित, पेपरलेस ई-केवाईसी
- प्रीमियम का तुरंत भुगतान करें
- पॉलिसी लाभों की त्वरित जानकारी
- पॉलिसी को ऑनलाइन अपडेट कीजिए
- बंद पॉलिसी को ऑनलाइन
  पुनर्चलित (रिवाइव) कीजिए

**और भी कई विशेषताएँ...**

LIC/R1/2026-27/01/Hin

क्यूआर कोड स्कैन कीजिए और ऐप अभी डाउनलोड कीजिए!

App Store पर उपलब्ध

Google Play पर इसे प्राप्त कीजिए

हमें यहाँ फ़ॉलो करें: LIC India Forever | IRDAI Regn No.: 512

LIC
भारतीय जीवन बीमा निगम
LIFE INSURANCE CORPORATION OF INDIA

हर पल आपके साथ

## संपादक मंडल

**संरक्षक**

गिरिजा सुकुमारन

कार्यकारी निदेशक (मा.सं.वि. एवं प्रशिक्षण)

**प्रधान संपादक**

त्रिलोकानन्द मिश्र

सचिव (राजभाषा)

**संपादक**

संजय भिसे

अनुज मिश्र

परविंदर कुमार

**सहयोग**

प्रज्ञा कुलकर्णी

नीलम राशि लगुन

## निगम गीत

आओ प्यारे साथ हमारे
जन सेवा हित सांझ सकारे ।

सम्यक संचय और निवेशन
जन जन का ही हित संवर्धन
निगम नीति का उच्च लक्ष्य है
व्यक्ति और परिवारोत्थान ।

लोक हितैषी सेवा दीक्षा
जन मन प्रेरित सतत सुरक्षा
योगक्षेम ही परमध्येय है
निगम हमारा प्रिय संस्थान ।

उठो निगम के सच्चे सेवक
अभिकर्ता जन और प्रबंधक
बुला रहे हैं कार्य लोकहित
तुम पर निर्भर जन कल्याण ।

आओ प्यारे साथ हमारे
जन सेवा हित सांझ सकारे ।

भारतीय जीवन बीमा निगम
LIFE INSURANCE CORPORATION OF INDIA

भारतीय जीवन बीमा निगम
केन्द्रीय कार्यालय की
राजभाषा पत्रिका वर्ष-2026

पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं, संपादक या भारतीय जीवन बीमा निगम का उनसे सहमत होना जरुरी नहीं है।

# अनुक्रमणिका


| क्रमांक | | पृष्ठ क्रमांक |
|---|---|---|
| 1 | सीईओ एवं एमडी महोदय का संदेश | 5 |
| 2 | प्रबंध निदेशक गणों का संदेश | 6-8 |
| 3 | कार्यकारी निदेशक (मा.सं.वि. एवं प्रशिक्षण) महोदया का संदेश | 9 |
| 4 | संपादकीय | 10 |
| 5 | आर्थिक सशक्तिकरण में बीमा उद्योग की भूमिका ... कुलभूषण शर्मा | 11 |
| 6 | विकसित भारत @2047-आत्मनिर्भरता से वैश्विक नेतृत्व की यात्रा ... अइशा बेगम | 13 |
| 7 | निरंतर विस्तार में राजभाषा की भूमिका ... मनीषा अग्रवाल | 17 |
| 8 | बदलती वैश्विक अर्थव्यवस्था के ध्रुवीकरण के परिदृश्य में भारत ... निशा अश्वनी कुमार | 19 |
| 9 | ब्रेकअप और अन्य कहानियां (लघुकथाएं) ... देवेन्द्र सिंह सिसौदिया | 21 |
| 10 | सनकीदा मोड़ से गुज़रते हुए (कहानी) ... मुकेश नौटियाल | 23 |
| 11 | स्पेशल बर्थडे (कहानी) ... प्रतिभा शर्मा | 25 |
| 12 | विश्वास के 70 वर्ष : प्रगति, परंपरा और राजभाषा के साथ एलआईसी की स्वर्णिम यात्रा ... परविंदर कुमार | 26 |
| 13 | नारी शक्ति एवं समाज में महिलाओं की भूमिका ... चित्रा दिलीप मांद्रेकर | 27 |
| 14 | एल आय सी के सत्तर साल (कविता) ... संजीव शेखर | 28 |
| 15 | पंढरपुर की एक दिवसीय वारी - एक अविस्मरणीय अनुभव ... माधुरी बाड | 29 |
| 16 | हिंदी दिवस -2025 | 31 |
| 17 | केंद्रीय कार्यालय को प्राप्त पुरस्कार -2025-26 | 32 |
| 18 | राजभाषा पुरस्कार वर्ष 2025 | 33 |
| 19 | संसदीय राजभाषा समिति द्वारा निरीक्षण एवं समन्वय कार्य | 34 |
| 20 | जुहू समुद्र तट - प्रकृति का वरदान ... अनुपमा तांबे | 35 |
| 21 | 'परम पूज्य' मुफ्तराम ... सुविधा विवेक शहाने | 37 |
| 22 | मेरे दो गोविंद (कविता) ... एन. आर. श्रीधर 'अविनाश' | 38 |
| 23 | योगक्षेमं वहाम्यहम् से जेन बीटा तक: विश्वास की अनंत यात्रा ... हेमन्त भाटी | 39 |
| 24 | कथक - एक साधना ... रुता रेडकर | 40 |
| 25 | आगाज़ (कविता) ... दुलीचन्द | 41 |
| 26 | कोई काम छोटा नहीं होता और कोई भी काम करने वाला छोटा नहीं होता ... नयना उपाध्याय | 42 |
| 27 | पश्चिम क्षेत्र का निरीक्षण ... अजय कुलकर्णी | 43 |
| 28 | बने रहना प्रथम स्थान, निगम का ऊंचा होता रहे मान ... युगल किशोर शर्मा | 45 |
| 29 | सादा जीवन उच्च विचार ... संजीवनी जी. फडनीस | 46 |
| 30 | नदी मेरी माँ ... श्रीकांत कांबले | 48 |
| 31 | अंत से अनंत तक (कविता) ... वृषाली आनंद लाड | 49 |
| 32 | स्वस्थ जीवन शैली ... गिरिजा सी. जी | 50 |
| 33 | एक नन्ही बच्ची ने सिखाया 'माइंडस्पेस' का असली अर्थ ... ऋषिकेश आंबये | 51 |
| 34 | राजभाषा पुरस्कार प्राप्त करने का सरल मार्ग ... रोहित सोनुर्लेकर | 52 |
| 35 | भाग्यशाली जन्मदिन (कविता) ... दीपा आगाशे | 56 |
| 36 | भावना से सद्भावना तक (कविता) ... भारती निकुंभ | 57 |
| 37 | संसदीय राजभाषा समिति निरीक्षण हेतु विशेष दिशा निर्देश | 58 |
| 38 | संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उपसमिति द्वारा निरीक्षण | 59 |

# सीईओ एवं एमडी महोदय का संदेश

प्रिय साथियों,

मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि भारतीय जीवन बीमा निगम के केंद्रीय कार्यालय की राजभाषा पत्रिका "सद्भावना" के वर्ष 2026 के अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। वर्ष 2026 निगम के लिए विशेष गौरव का वर्ष है, क्योंकि हमने अपनी स्थापना के 70 गौरवशाली वर्ष पूर्ण किए हैं। सात दशकों की यह यात्रा देशवासियों के विश्वास, सेवा और समर्पण की प्रेरणादायी गाथा है। निश्चित रूप से इस यात्रा में हिंदी सहित समस्त भारतीय भाषाओं ने निगम को देश के जन-जन से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

राजभाषा हिंदी हमारे लिए केवल कार्यालयीन कार्य की भाषा नहीं, बल्कि सरल, स्पष्ट और प्रभावी संवाद का माध्यम है। निगम का कार्य सीधे देश के करोड़ों पॉलिसीधारकों और उनके परिवारों से जुड़ा है। ऐसे में हमारी सेवाओं, योजनाओं और प्रक्रियाओं की जानकारी सरल हिंदी में उपलब्ध कराना हमारे कार्य को अधिक जनोन्मुख और प्रभावी बनाता है। अतः हमें हिंदी के प्रयोग को केवल राजभाषा विभाग के कार्य तक सीमित न रखते हुए दैनिक कामकाज और व्यावसायिक गतिविधियों का स्वाभाविक हिस्सा बनाना चाहिए।

आज डिजिटल प्रौद्योगिकी हमारे कार्य करने के तरीके को तेजी से बदल रही है। निगम की इस वर्ष की थीम "लक्ष्य से प्रेरित-सेवा में समर्पित" हमें आगामी वर्षों में भी ग्राहकोन्मुख दिशा में कार्य करने के लिए प्रेरित करती है और राजभाषा हिन्दी का उपयोग हमें ज़्यादा सकारात्मक परिणाम देगा।

मुझे विश्वास है कि निगम के सभी अधिकारी और कर्मचारी हिंदी के अधिकाधिक एवं प्रभावी प्रयोग के प्रति अपनी प्रतिबद्धता बनाए रखेंगे। "सद्भावना" का यह अंक इसी भावना को सशक्त करने और हिंदी के प्रति हमारी कार्यगत प्रतिबद्धता को नई ऊर्जा देने का माध्यम बनेगा तथा सभी पाठकों के लिए ज्ञानवर्धक, उपयोगी और प्रेरणादायी सिद्ध होगा।

हिन्दी दिवस एवं इस अंक के लिए आप सभी को मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ ।

**आर. दुरैस्वामि**
(सीईओ एवं एमडी)

# प्रबंध निदेशक महोदय का संदेश

प्रिय साथियों,

केंद्रीय कार्यालय के राजभाषा अनुभाग की पत्रिका 'सद्भावना' के माध्यम से आप सभी से जुड़ते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। यह पत्रिका हिंदी के बढ़ते प्रयोग के साथ-साथ निगम के विचारों, रचनात्मकता और अभिव्यक्ति को साझा करने का एक सार्थक मंच है।

निगम ने अपनी यात्रा के इन सात दशकों में देश के करोड़ों लोगों का विश्वास अर्जित करते हुए सुरक्षा और सेवा के क्षेत्र में अपनी विशिष्ट पहचान बनाई है। इस यात्रा में हिंदी ने निगम को जन-जन से जोड़ने और ग्राहकों के साथ सहज संवाद स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

विगत 70 वर्षों की उपलब्धियों से प्रेरणा लेते हुए निगम भविष्य की ओर नई ऊर्जा और नई सोच के साथ आगे बढ़ रहा है। आज के डिजिटल युग में हिंदी और तकनीक का समन्वय निगम की सेवाओं को और अधिक सरल, सहज एवं व्यापक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

निगम के सभी कर्मचारी एवं अधिकारीगण हिंदी के प्रयोग को अपनी कार्य-संस्कृति का स्वाभाविक हिस्सा बनाते हुए राजभाषा के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को सुदृढ़ करें। 'सद्भावना' का यह अंक इसी भावना को नई ऊर्जा प्रदान करेगा और सभी सहकर्मियों को हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग के लिए प्रेरित करेगा।

'सद्भावना' पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ। आशा है कि यह अंक सभी पाठकों के लिए ज्ञानवर्धक एवं प्रेरणादायी सिद्ध होगा।

शुभकामनाओं सहित,

**दिनेश पंत**

प्रबंध निदेशक

# प्रबंध निदेशक महोदय का संदेश

प्रिय साथियों,

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि केंद्रीय कार्यालय के राजभाषा अनुभाग द्वारा राजभाषा पत्रिका 'सद्भावना' के वर्ष 2026 के अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। यह केवल एक पत्रिका नहीं, बल्कि निगम में हिंदी के प्रति हमारी प्रतिबद्धता, रचनात्मकता और सामूहिक सहभागिता का सशक्त मंच है।

हिंदी हमारी राजभाषा होने के साथ-साथ हमारे कार्यों और संवादों को सरल, सहज और प्रभावी बनाने का माध्यम भी है। हमारे निगम के दैनिक कार्यों में हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग हमारी संवैधानिक जिम्मेदारी के साथ-साथ हमारी कार्यसंस्कृति का भी अभिन्न हिस्सा होना चाहिए। टिप्पणियों, पत्राचार, बैठकों, कार्यालयीन कार्यों तथा डिजिटल माध्यमों में हिंदी के सहज और प्रभावी प्रयोग से न केवल कार्यकुशलता बढ़ेगी, बल्कि राजभाषा के प्रति हमारी प्रतिबद्धता भी सुदृढ़ होगी।

भारत सरकार द्वारा निर्धारित राजभाषा लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए हमें निरंतर प्रयासरत रहना है। राजभाषा का प्रभावी क्रियान्वयन तभी संभव है, जब प्रत्येक अधिकारी और कर्मचारी इसमें अपनी सक्रिय भूमिका निभाए।

मुझे विश्वास है कि 'सद्भावना' का यह अंक निगम में हिंदी के प्रति नई ऊर्जा और उत्साह का संचार करेगा तथा हमारे साथियों की रचनात्मक प्रतिभा को भी एक सार्थक मंच प्रदान करेगा।

'सद्भावना' के इस नवीन अंक के प्रकाशन पर राजभाषा अनुभाग एवं सभी रचनाकारों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ। आइए, हम सभी मिलकर हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने और निगम के कार्यों में इसकी गरिमा एवं उपयोगिता को और सुदृढ़ करने का संकल्प लें।

शुभकामनाओं सहित,

**रत्नाकर पटनायक**
प्रबंध निदेशक

# प्रबंध निदेशक महोदय का संदेश

प्रिय साथियों,

यह मेरे लिए अत्यंत हर्ष और प्रसन्नता का विषय है कि केंद्रीय कार्यालय के राजभाषा अनुभाग द्वारा वर्ष 2026 की राजभाषा पत्रिका 'सद्भावना' का प्रकाशन किया जा रहा है। 'सद्भावना' हमारे निगम की रचनात्मकता, संवेदनशीलता और हिंदी के प्रति हमारी सामूहिक प्रतिबद्धता का सुंदर प्रतिबिंब है।

आज का कार्य परिवेश तेजी से बदल रहा है। तकनीक, डिजिटल माध्यम और नई कार्यप्रणालियाँ हमारे दैनिक कार्यों का अभिन्न हिस्सा बन चुकी हैं। हमारा लक्ष्य यह होना चाहिए कि हिंदी का प्रयोग किसी औपचारिक दायित्व तक सीमित न रहे, बल्कि हमारे कार्य-व्यवहार और संवाद का सहज हिस्सा बने। जब हम अपनी कार्यक्षमता, आधुनिक तकनीक और हिंदी - इन तीनों का समन्वय करते हैं, तब राजभाषा का प्रयोग केवल बढ़ता ही नहीं, बल्कि उसकी उपयोगिता और प्रभावशीलता भी बढ़ती है।

'सद्भावना' का यह अंक इसी सकारात्मक सोच और रचनात्मक ऊर्जा को अभिव्यक्त करता है। इसमें सम्मिलित रचनाएँ और विविध विषय निश्चय ही पाठकों को ज्ञान, विचार और प्रेरणा के नए आयामों से परिचित कराएँगे। इस पत्रिका के माध्यम से अपने विचार और सृजनात्मक प्रतिभा को साझा करने वाले सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों का योगदान विशेष रूप से सराहनीय है।

मुझे विश्वास है कि 'सद्भावना' का यह अंक हिंदी के प्रति हमारे विश्वास को और दृढ़ करेगा तथा निगम में हिंदी के अधिकाधिक, सहज और प्रभावी प्रयोग के लिए नई प्रेरणा प्रदान करेगा।

शुभकामनाओं सहित,

**आर. चंदर**
प्रबंध निदेशक

# कार्यकारी निदेशक महोदया का संदेश

प्रिय साथियों,

यह मेरे लिए अत्यंत हर्ष और प्रसन्नता का विषय है कि केंद्रीय कार्यालय के राजभाषा अनुभाग द्वारा वर्ष 2026 की राजभाषा पत्रिका 'सद्भावना' का प्रकाशन किया जा रहा है। सत्तर वर्ष किसी संस्था के लिए केवल समय की गणना नहीं होते, वे उसके साथ चलने वाले लाखों-करोड़ों लोगों के विश्वास की कहानी भी होते हैं। हमारे निगम की 70 वर्षों की यात्रा में अनेक बदलाव आए, नई तकनीकें आईं, कार्यप्रणाली बदली, लेकिन लोगों से जुड़ने की हमारी भावना आज भी उतनी ही महत्वपूर्ण है। राजभाषा हिंदी इसी जुड़ाव और संवाद का सहज माध्यम रही है।

इसी भावना की एक खूबसूरत अभिव्यक्ति है 'सद्भावना'। वर्ष 2026 का यह अंक मेरे लिए इसलिए विशेष है कि इसमें निगम के अपने लोगों की आवाज़ सुनाई देती है। किसी की कविता, किसी की कहानी, किसी का विचार, किसी की कल्पना और किसी का अनुभव - इन सबको एक साथ पिरोकर यह पत्रिका हमारी कार्यालयीन संस्कृति और हिंदी के प्रति लगाव की एक सुंदर तस्वीर प्रस्तुत करती है।

इसलिए राजभाषा के रूप में हिंदी का प्रयोग हमारे लिए किसी औपचारिक दायित्व से अधिक, अपने विचारों को सहजता और प्रभाव के साथ व्यक्त करने का अवसर है।

आज जब हमारी कार्यालयीन कार्यप्रणाली तेजी से डिजिटल हो रही है, तब हिंदी के लिए भी नए रास्ते खुल रहे हैं। हमें यह सुनिश्चित करना है कि डिजिटल माध्यमों में भी हिंदी का प्रयोग सहज, सरल और प्रभावी हो। तकनीक बदल सकती है, माध्यम बदल सकते हैं, लेकिन अपनी बात अपनी भाषा में कहने की जरूरत कभी नहीं बदलती।

'सद्भावना' के इस अंक को संभव बनाने वाले राजभाषा अनुभाग और सभी सहयोगियों को मेरा धन्यवाद। आशा है, इसके पन्नों पर मिले विचार आपको कहीं रुककर सोचने, कुछ नया जानने और हिंदी भाषा को अपने कार्य-व्यवहार में और अधिक अपनाने के लिए प्रेरित करेंगे। 'सद्भावना' निरंतर नई ऊँचाइयाँ प्राप्त करे और हिंदी के माध्यम से हमारे बीच संवाद, सृजन एवं सद्भाव की भावना को और सशक्त करे - इसी कामना के साथ...

शुभकामनाओं सहित,

**गिरिजा सुकुमारन**
कार्यकारी निदेशक (मा.सं.वि. एवं प्रशिक्षण)

# संपादकीय

प्रिय मित्रों,

भारतीय जीवन बीमा निगम के गौरवशाली 70वें वर्ष में केंद्रीय कार्यालय की राजभाषा पत्रिका 'सद्भावना' का यह अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अपार हर्ष एवं गौरव की अनुभूति हो रही है। यह अंक राजभाषा हिंदी के प्रति हमारी गहरी प्रतिबद्धता, आत्मीयता और आस्था का सुंदर प्रतिबिंब है।

हिन्दी एक सरल, समर्थ एवं वैज्ञानिक भाषा है। यह केवल संवाद का माध्यम नहीं, बल्कि देश के विभिन्न क्षेत्रों, संस्कृतियों और समुदायों को आत्मीयता के सूत्र में जोड़ने वाली सशक्त कड़ी है। हमारे दैनिक कार्यों और कार्यालयीन कामकाज में हिंदी का सरल, सहज और स्वाभाविक प्रयोग न केवल कार्य-संस्कृति को अधिक आत्मीय बनाता है, बल्कि सहकर्मियों एवं सेवाग्राहियों के साथ संवाद को भी अधिक प्रभावी बनाता है। हिंदी के माध्यम से हम अपने संविधान में निहित बंधुत्व और एकता की भावना को और सुदृढ़ कर सकते हैं।

'सद्भावना' का यह अंक हमारे निगम के विभिन्न क्षेत्रों और कार्यालयों में कार्यरत सहकर्मियों की सृजनात्मक प्रतिभा का परिचायक है। इसमें उनकी कविताएँ, कहानियाँ, वैचारिक आलेख और चित्र शामिल हैं। इन रचनाओं ने मिलकर इस अंक को केवल एक पत्रिका नहीं, बल्कि हमारे अपने रचनाकार सहकर्मियों की संवेदनाओं, विचारों और सृजनशीलता का उत्सव बना दिया है।

इस अंक को आकार देने में राजभाषा अनुभाग के मेरे सहयोगियों तथा विभिन्न कार्यालयों से जुड़े रचनाकार सहकर्मियों ने जिस उत्साह, समर्पण और परिश्रम के साथ योगदान दिया है, वह निश्चय ही सराहनीय है। उनके इस रचनात्मक सहयोग के लिए मैं हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ।

मुझे विश्वास है कि 'सद्भावना' का यह अंक आपको रुचिकर लगेगा, आपकी संवेदनाओं को स्पर्श करेगा और हिंदी के प्रति आपके अनुराग को और गहरा करेगा। आपकी प्रतिक्रियाएँ एवं सुझाव इस पत्रिका की आगामी यात्रा के लिए सदैव हमारा मार्गदर्शन करते रहेंगे।

**त्रिलोकानन्द मिश्र**
सचिव (राजभाषा)

# आर्थिक सशक्तिकरण में बीमा उद्योग की भूमिका

**कुलभूषण शर्मा**
प्रादेशिक प्रबंधक (पें.एवं स.यो.),
उत्तर क्षेत्रीय कार्यालय

प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में उसके प्रियजनों के संदर्भ में दो महत्वपूर्ण आयाम हैं - भावनात्मक स्वरूप, जो व्यक्ति के पारिवारिक संबंध एवं सामाजिक महत्व से जुड़ा है तथा वित्तीय स्वरूप जो व्यक्ति के आश्रय-प्रदाता अथवा आश्रित होने के रूप में परखा जाता है। विभिन्न घटनाक्रम सुख-दु:ख की अनुभूति लेकर आते हैं। प्रत्याशित एवं अप्रत्याशित घटनाएं जीवन के विभिन्न पड़ावों पर न केवल भावनात्मक उतार-चढ़ाव रूपी प्रभाव डालती हैं बल्कि वित्तीय आयाम अर्थात आजीविका एवं जीवनयापन हेतु धनोपार्जन भी इस से अछूते नहीं हैं। यदि किसी व्यक्ति के धनोपार्जन के सामार्थ्य पर कुठाराघात होता है तो उसके साथ उस पर आश्रित व्यक्तियों तथा सामाजिक व्यवस्था पर भी संकट की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। व्यक्ति के जीवन में भौतिक वस्तुओं, धन-संपदा एवं संपत्ति का भी विशेष महत्व है। यदि किसी कारणवश इन पर आघात अथवा इनका ह्रास होता है तो भी व्यक्ति के जीवन में स्थाई अथवा अस्थाई संकट उत्पन्न हो जाता है।

शुद्ध बाह्य कारणों अथवा कारकों से हुई जान अथवा माल की हानि से जनित वित्तीय-क्षति, आजीविका संकट अथवा भविष्य की अनिश्चितता से सुरक्षा के लिए बीमा की व्यवस्था है। बीमा वित्तीय सेवाओं के क्षेत्र में होनी-अनहोनी घटनाओं के कारण हुई आर्थिक क्षतिपूर्ति के वित्तीय समाधान का विपणन है।

चूंकि बीमा एक अमूर्त उत्पाद होने के कारण भौतिक स्वरूप में देखा, छुआ, चखा अथवा परखा नहीं जा सकता है, इसके विपणन के लिए समाधान केन्द्रित वार्तालाप, असीम अनुभव, प्रभावशाली प्रचार, सटीक प्रस्तुतीकरण तथा अद्भुत विक्रय कौशल की आवश्यकता होती है। एक बीमा विशेषज्ञ के अनुसार "बीमा बेचना एक गंजे व्यक्ति को कंघा बेचने के समान कठिन" होता है। अत: बीमा क्षेत्र में विक्रय को अत्यन्त चुनौतीपूर्ण कठिन एवं जटिल मान बीमा के प्रचार-प्रसार एवं बीमा सेवाओं के विपणन में अनेकोनेक पग उठाए गए हैं। वर्ष 1956 में बीमा क्षेत्र के राष्ट्रीयकरण से लेकर वर्ष 2001 में बीमा क्षेत्र में ग्राहकोन्मुख पारदर्शिता के लिए विनियामक की नियुक्ति बीमा बाजार में स्पर्धा हेतु बहुराष्ट्रीय कंपनियों एवं निजी क्षेत्र का पदार्पण 2017 तथा 2022 में राष्ट्रीय बीमा कंपनियों का विनिवेश कर पूंजी बाजार में प्रवेश तथा इस वर्ष जीवन बीमा प्रीमियम को जीएसटी मुक्ति ऐसे ही ऐतिहासिक निर्णय हैं। राजकीय व्यवस्थाएं न केवल बीमा उद्योग को सुचारू रूप से संचालित अथवा क्षेत्र संगठित करने की दिशा में केन्द्रित हैं बल्कि सामान्य नागरिकों को सार्थक बीमा सुरक्षा उपलबध करवाने के लिए भी बचनबद्ध हैं।

यद्यपि वित्तीय समावेशन की दिशा में विभिन्न ऐतिहासिक पड़ावों पर यथासमय सार्थक पग उठाए जाते रहे हैं तथा भारतीय रिजर्व बैंक की वर्ष 2005 की वार्षिक नीति कथन में खान-समिती प्रतिवेदन में उल्लेखित आधार पर "नो फ्रिल्स" खातों का प्रावधान किया गया था, फिर भी वर्ष 2014 में वित्तीय समावेशन के लिए 'प्रधानमंत्री जन धन योजना' के रूप में निर्विवाद रूप से एक संरचित एवं स्पष्ट परिभाषित व्यवस्था के संचालित किए जाने का शुभारम्भ हुआ। इस अभियान में जनधन बैंक खातों के अतिरिक्त दो बीमा योजनाओं अर्थात् 'प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना' तथा 'प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना' के अंतर्गत अल्प दर पर बैंकिंग सुविधा तथा बीमा सुरक्षा उपलब्ध करवाई गई।

**प्रत्यक्ष रूप में आर्थिक सशक्तिकरण में बीमा उद्योग की भूमिका के विभिन्न आयाम हैं :**

(क) **व्यक्तिगत आर्थिक सशक्तिकरण :** व्यक्तिगत स्तर पर मानव जीवन पर शीघ्र मृत्यु, विलम्ब से मृत्यु तथा जीवित मृत्यु के जोखिम हैं। प्राकृतिक कारणों अथवा दुर्घटनावश शीघ्र मृत्यु होने की दशा में जीवन बीमा, विलम्ब से मृत्यु की दशा में पेंशन बीमा तथा स्वास्थ्य बीमा तथा अस्वस्थता अथवा अपंगता के कारण जीवित मृत्यु की दशा में स्वास्थ्य बीमा तथा पेंशन बीमा समाधान उपलब्ध हैं। इसके अतिरिक्त साधारण बीमा सुरक्षा भी प्रासंगिक है। यदि व्यक्तिगत जीवन बीमा सुरक्षा के साथ-साथ परिसंपत्तियों की बीमा सुरक्षा भी उपलब्ध है, तो परिवार को आर्थिक सहायता के अतिरिक्त अकस्मात व्यय के निपटारे में सहायता प्राप्त हो जाती है। व्यक्ति को अपनी वित्तीय योजना में किसी भी प्रकार के निवेश के अपरिपक्व अथवा समयपूर्व नकदीकरण के रूप में मध्य वर्ग के कारण क्षति नहीं उठानी पड़ती है।

(ख) **सामाजिक आर्थिक सशक्तिकरण :** समाज का निर्माण व्यक्तियों के समूह से होता है। अतः व्यक्तिगत आर्थिक सशक्तिकरण अंततः सामाजिक सशक्तिकरण के रूप में ही परिलक्षित होता है। इसके अतिरिक्त समाज के किसी भी व्यक्ति अथवा उसकी परिसंपत्तियों के बीमित न होने की दशा में अन्य व्यक्तियों के अनावश्यक सामाजिक उत्तरदायित्व का बोझ भी समाप्त हो जाता है।

(ग) **राष्ट्रीय आर्थिक सशक्तिकरण :** व्यक्तिगत समूह बीमा अथवा परिसंपत्ति बीमा गतिविधियों से नकदी-प्रवाह, कर-जनित आय, राजस्व तथा सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि होती है। इससे न केवल व्यक्तिगत एवं सामाजिक आर्थिक सुरक्षा उत्पन्न होती है, बल्कि अधिशेष निधि के दीर्घकालिक निवेश से राष्ट्र निर्माण के लिए पूंजी भी उपलब्ध होती है।

परोक्ष रूप में भी बीमा उद्योग जन-जन के आर्थिक सशक्तिकरण में सहायक है। बीमा एक व्यवसाय के रूप में नागरिकों को विपणन एवं प्रशासन के क्षेत्र में अभिकर्ता, कर्मचारी, अधिकारी, प्रबंधक, परामर्शदाता, प्रशिक्षक, नियंत्रक, अंकेक्षक निरीक्षक, विनियामक विधि द्वारा तथा अन्य संबंधित भूमिकाओं में आजीविका एवं "करियर" के अवसर उपलब्ध करवाता है। बीमा से जुड़ी प्रचार-प्रसार व्यवस्था, शैक्षणिक व्यवस्था, कर व्यवस्था तथा अन्य गतिविधियों के लिए भी मानव संसाधनों की आवश्यकता होती है। गत वर्ष प्रधान मंत्री महोदय द्वारा "बीमा सखी" योजना का शुभारंभ कर इस दिशा में महिलाओं की भागीदारी भी सुनिश्चित की गई है।

भारतीय अर्थव्यवस्था की प्रगति में बीमा क्षेत्र का असीम योगदान सर्वविदित है। इस दिशा में अपार संभावनाएं भी ज्ञात हैं। वर्ष 2024 की बीमा पैठ हर 3.70% गत वर्ष की 4.00% के साथ-साथ वैश्विक दर 7.00% से भी कम है। जीवन बीमा पैठ दर 2.80% तथा गैर जीवन बीमा पैठ दर मात्र 1.00 रही। प्रीमियम राशि की वृद्धि दर जीवन बीमा प्रीमियम में 6.06% तथा गैरजीवन बीमा प्रीमियम में 12.80% रही।

संक्षेप में, व्यक्तिगत आर्थिक सशक्तिकरण में वित्तीय समावेशन महत्वपूर्ण प्रक्रिया है और अभियान की सफलता बीमा- जीवन एवं गैर जीवन - बिना अधूरी है। बीमा कवच व्यक्ति के जीवन में आत्मविश्वास एवं सुरक्षा की भावना की अनुभूति करवाने के साथ-साथ समाज तथा राष्ट्र को भी सुदृढ़ करता है।

# विकसित भारत @2047- आत्मनिर्भरता से वैश्विक नेतृत्व की यात्रा

**अइशा बेगम**
कार्यकारी अभियंता, अभियांत्रिकी विभाग,
दक्षिण मध्य क्षेत्रीय कार्यालय, हैदराबाद

**अमृत काल का उदय**

वर्ष 2047 भारतीय स्वतंत्रता की शताब्दी का प्रतीक है। जैसे-जैसे भारत अपनी स्वतंत्रता की शताब्दी के करीब पहुंच रहा है, दृष्टिकोण केवल अस्तित्व बनाए रखने से हटकर 'समृद्धि की ओर मुड़ गया है। एक 'विकासशील' भारत से 'विकसित' भारत में परिवर्तन मात्र जीडीपी (GDP) आंकड़ों में बदलाव नहीं है; यह जीवन की गुणवत्ता, आर्थिक मजबूती और वैश्विक प्रभाव में एक मौलिक बदलाव है।

विकसित भारत - 2047 महज एक राजनीतिक नारा नहीं है; यह भारत को 30 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था में बदलने का एक व्यापक रोडमैप है। इस परिवर्तन का केंद्र बिंदु भारतीय अर्थव्यवस्था का "वित्तीयकरण" है। किसी राष्ट्र को वैश्विक नेतृत्व हासिल करने के लिए, उसकी वित्तीय धमनियों (बैंक और बीमा) को मात्र सेवा प्रदाता होने के बजाय विकास, नवाचार और सामाजिक सुरक्षा के इंजन के रूप में विकसित होना होगा।

**ऐतिहासिक संदर्भ: भारतीय वित्त का विकास**

2047 के दृष्टिकोण को समझने के लिए, 1947 से अब तक की कठिन यात्रा को समझना आवश्यक है।

❖ **बैंकिंग का विकास: वर्ग से जनसमूह की ओर:**

- **स्वतंत्रता के बाद का युग (1947-1969):** निजी बैंकिंग का युग, जिसमें ऋण काफी हद तक शहरी औद्योगिक घरानों तक ही सीमित था।
- **राष्ट्रीयकरण (1969 और 1980):** एक महत्वपूर्ण बदलाव जिसने ग्रामीण भारत में बैंकिंग को पहुंचाया, और विशुद्ध रूप से वाणिज्यिक हितों के बजाय "सामाजिक बैंकिंग" को प्राथमिकता दी।
- **उदारीकरण (1991):** निजी और विदेशी कंपनियों के प्रवेश ने प्रौद्योगिकी और प्रतिस्पर्धा को जन्म दिया, जिससे आधुनिक युग की नींव पड़ी।
- **डिजिटल क्रांति (2014-वर्तमान):** जन धन-आधार-मोबाइल (JAM) की त्रिमूर्ति ने पहुंच में क्रांति ला दी, जिससे "क्लास बैंकिंग" से "मास बैंकिंग" की ओर बदलाव आया।

❖ **बीमा का सफर: एकाधिकार से बाज़ार तक:**

- **एलआईसी का राष्ट्रीयकरण (1956):** भारत के हर कोने में जीवन बीमा पहुंचाने के लिए 245 बीमा कंपनियों को एक इकाई में समेकित किया गया।
- **जीआईसी का राष्ट्रीयकरण (1972):** औद्योगिक और ग्रामीण संपत्तियों की सुरक्षा के लिए सामान्य बीमा को चार सहायक कंपनियों के तहत एकीकृत किया गया।
- **मल्होत्रा समिति और इरडा IRDAI (1999):** इस क्षेत्र को निजी कंपनियों के लिए फिर से खोल दिया गया, और एक मज़बूत नियामक ढाँचा स्थापित किया गया, जो "सभी के लिए बीमा" को अनिवार्य बनाता है।

**$30 ट्रिलियन का लक्ष्य: विकास का इंजन ("इंजन रूम")**

भारत का लक्ष्य $30 ट्रिलियन की अर्थव्यवस्था बनना है, और यह लक्ष्य काफी हद तक इसके बैंकिंग और बीमा क्षेत्रों पर निर्भर करता है। अकेले बैंकिंग क्षेत्र को ही एक विकसित राष्ट्र की बुनियादी ढांचागत और औद्योगिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अपने पूंजी

आधार को अनुमानित 4 ट्रिलियन डॉलर तक बढ़ाना होगा। "अमृत काल" कहे जाने वाले इस सफर के चार स्तंभ हैं।

i. **युवा:** बुनियादी साक्षरता से हटकर AI, ब्लॉकचेन और हरित ऊर्जा जैसे उच्च-तकनीकी कौशल की ओर अग्रसर होकर वैश्विक कार्यबल का नेतृत्व करना।

ii. **गरीब:** वित्तीय समावेशन और उद्यमिता के माध्यम से "गरीबी उन्मूलन" से "धन सृजन" की ओर बढ़ना।

iii. **महिलाएँ:** वित्तीय स्वतंत्रता के माध्यम से श्रम बल में अपनी भागीदारी बढ़ाना, जो GDP के लिए एक विशाल इंजन का काम करेगी।

iv. **अन्नदाता (किसान):** कृषि को उच्च तकनीक वाले, निर्यात-उन्मुख क्षेत्र में बदलना, जो सटीक बीमा और निर्बाध ऋण द्वारा समर्थित हो।

हालांकि, इन स्तंभों को शक्ति प्रदान करने वाला संरचनात्मक "इंजन रूम" वित्तीय क्षेत्र यानी बैंकिंग क्षेत्र है।

**बैंकिंग प्रणाली और बीमा क्षेत्र:**

- **क्रेडिट मल्टीप्लायर:** $30 ट्रिलियन के लक्ष्य तक पहुँचने के लिए, अकेले बैंकिंग क्षेत्र को ही अपनी पूंजी आधार का काफी विस्तार करना होगा, ताकि आवश्यक विशाल बुनियादी ढांचा और औद्योगिक ऋणों को सहारा दिया जा सके।
- **सामाजिक सुरक्षा जाल:** बीमा के बिना उच्च-आय की स्थिति टिकाऊ नहीं है। "सभी के लिए बीमा" सुनिश्चित करने से यह सुनिश्चित होता है कि एक भी चिकित्सा आपात स्थिति या फसल खराब होने से कोई परिवार गरीबी में वापस न धकेल दिया जाए, जिससे अर्थव्यवस्था मजबूत बनी रहे।

**बैंकिंग क्षेत्र: $30 ट्रिलियन की रीढ़ की हड्डी:**

1947 से 2047 तक बैंकिंग क्षेत्र का सफ़र एक ऐसे क्षेत्र की कहानी है, जो अस्तित्व बनाए रखने से लेकर फलने-फूलने और फिर नेतृत्व करने तक का सफर तय कर चुका है। "अमृत काल" में, बैंकिंग क्षेत्र अब केवल जमा-पूँजी का संरक्षक नहीं रह गया है; यह आकांक्षाओं का निर्माता है। जैसे-जैसे भारत एक विकसित राष्ट्र बनता जा रहा है, यह क्षेत्र तीन प्रमुख स्तंभों की ओर अग्रसर हो रहा है:

- **सार्वभौमिक वित्तीय समावेशन:** जन धन योजना से शुरू हुई यह यात्रा 2047 में 100% 'सार्थक' समावेशन के साथ अपने चरम पर पहुंचेगी। इसका अर्थ है कि प्रत्येक नागरिक के पास न केवल खाता होगा, बल्कि उसे ऋण, धन प्रबंधन और डिजिटल परामर्श की सुविधा भी प्राप्त होगी।
- **डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर (DPI):** भारत का "इंडिया स्टैक" (आधार, UPI और अकाउंट एग्रीगेटर फ्रेमवर्क) पहले से ही एक वैश्विक मानक बन चुका है। 2047 तक, यह एक ऐसे निर्बाध और AI-संचालित इकोसिस्टम में विकसित हो जाएगा, जहाँ 'यूनिफाइड लेंडिंग इंटरफ़ेस' (ULI) के माध्यम से ऋण तक पहुँच को सभी के लिए सुलभ बनाया जाएगा, जिससे MSMEs के लिए "बिना किसी गारंटी के" (collateral-free) ऋण प्राप्त करना एक हकीकत बन जाएगा।
- **ग्रीन फाइनेंसिंग:** जैसे-जैसे भारत वैश्विक जलवायु परिवर्तन के प्रयासों में नेतृत्व की भूमिका निभाएगा, बैंक ही नवीकरणीय ऊर्जा और टिकाऊ बुनियादी ढाँचे के वित्तपोषण के लिए मुख्य माध्यम बनेंगे, जो भारत की "नेट ज़ीरो" प्रतिबद्धताओं के अनुरूप होगा।

**बीमा क्षेत्र: एक राष्ट्र की ढाल**

भारतीय बीमा नियामक एवं विकास प्राधिकरण द्वारा निर्धारित "2047 तक सभी के लिए बीमा" शायद भारत के इतिहास की सबसे महत्वपूर्ण सामाजिक सुरक्षा पहल है। वर्तमान में, भारत में बीमा की उपलब्धता में भारी कमी है। 2047 के विज़न का उद्देश्य बीमा को एक ऐसे उत्पाद से बदलना है जो लोगों को आकर्षित करता है, पुश प्रोडक्ट से "पुल प्रोडक्ट"। इस क्षेत्र का लक्ष्य बीमा की पहुंच को वर्तमान लगभग 4% से बढ़ाकर 10%-12% करना है, जो वैश्विक औसत से अधिक है। 2047 के बीमा विज़न के प्रमुख घटक बीमा ट्रिनिटी और पैरामीट्रिक बीमा है।

❖ **बीमा ट्रिनिटी:** $30 ट्रिलियन के लक्ष्य तक पहुँचने के लिए, भारत ने "बीमा ट्रिनिटी" लॉन्च की है, जो 'इंडिया स्टैक' की सफलता की ही तरह है:

i. **बीमा सुगम:** एक "वन-स्टॉप शॉप" डिजिटल प्लेटफॉर्म जो बीमा संबंधी सभी जरूरतों जैसे खरीद,

सेवा और दावों के लिए एक ई-कॉमर्स मार्केटप्लेस के रूप में कार्य करता है। यह बिचौलियों को समाप्त करता है, कमीशन कम करता है और पॉलिसियों को सस्ता बनाता है।

ii. **बीमा विस्तार:** जीवन, स्वास्थ्य और संपत्ति को कवर करने वाला एक किफायती और व्यापक उत्पाद। यह सुनिश्चित करता है कि सबसे कम आय वाले परिवारों को भी एक "सुरक्षा आधार" मिले।

iii. **बीमा वाहक:** प्रत्येक ग्राम पंचायत में तैनात एक कार्यबल, जिसमे मुख्य रूप से महिलाएं शामिल है। यह सुनिश्चित करता है कि तेजी से डिजिटल हो रही दुनिया में भी "मानवीय जुड़ाव") बना रहे, जिससे उच्च बीमा कवरेज के लिए आवश्यक विश्वास का निर्माण होता है।

❖ **पैरामीट्रिक बीमा:** पारंपरिक क्षतिपूर्ति से आगे बढ़कर तकनीक-आधारित ट्रिगर्स (जैसे, जब वर्षा एक निश्चित मिलीमीटर से कम हो जाती है तो किसानों को स्वचालित भुगतान) की ओर बढ़ना, जिससे लंबी सर्वेक्षण प्रक्रियाओं के बिना तत्काल राहत सुनिश्चित हो सके।

**बैंक-एश्योरेंस: 2047 के भारत के भविष्य के लिए एक सुनहरा पुल:**

बैंक-एश्योरेंस, बैंकों और बीमा कंपनियों के बीच एक रणनीतिक साझेदारी है। सभी लोगों तक बीमा की पहुँच सुनिश्चित करने में यह एक (अहम कारक) की भूमिका निभाता है। यह बीमा उत्पादों के वितरण के लिए बैंको के विशाल भौतिक और डिजिटल नेटवर्क का लाभ उठाता है। 2047 के लिए बैंक-एश्योरेंस की मुख्य विशेषताएं:

- **ओपन आर्किटेक्चर:** हाल ही में हुए नियामकीय बदलावों से बैंको को कई बीमा कंपनियों के साथ साझेदारी करने की अनुमति मिली है। इससे ग्राहकों के लिए एक प्रतिस्पर्धी "वित्तीय सुपरमार्केट" यानी 'वन-स्टॉप-शॉप' का निर्माण होता है।
- **हाइपर-पर्सनलाइज़ेशन:** 'बिग डेटा' का उपयोग करके, कोई भी बैंक ग्राहक के जीवन के मौजूदा चरण का विश्लेषण कर सकता है और अपने मोबाइल ऐप के माध्यम से तुरंत उसे उसकी ज़रूरतों के अनुसार तैयार किया गया बीमा उत्पाद पेश कर सकता है।
- **विश्वास ही असली पूंजी:** ग्रामीण भारत में, स्थानीय बैंक की शाखा अक्सर सबसे भरोसेमंद संस्था मानी जाती है। स्वास्थ्य और जीवन बीमा बेचने के लिए इस विश्वास का उपयोग करना, बीमा सुरक्षा के अंतर को पाटने का सबसे तेज़ तरीका है; साथ ही, यह उस "गलत बिक्री" (mis-selling) की समस्या को भी कम करता है, जिसने अतीत में इस क्षेत्र को काफी नुकसान पहुँचाया था।

**वैश्विक तुलना: "भारत मॉडल" बनाम विश्व**

2047 तक, भारत न केवल वैश्विक वित्तीय मानकों का पालन करेगा, बल्कि उन्हें निर्धारित भी करेगा।

- **पश्चिमी मॉडल:** पारंपरिक रूप से यह पुरानी बुनियादी सुविधाओं वाले, ज़्यादा लागत वाले और बिचौलियों से भरे सिस्टम पर निर्भर रहता है।
- **भारत मॉडल:** एक डिजिटल-केंद्रित, समावेशी और किफ़ायती ढाँचा, जो ओपन-सोर्स सार्वजनिक बुनियादी सुविधाओं पर आधारित है। इस मॉडल को अन्य विकासशील और विकसित देशों में भी निर्यात किया जाएगा, जिससे भारत की "विश्व मित्र" के रूप में भूमिका और मजबूत होगी।

**जोखिम प्रबंधन और चुनौतियाँ:**

जैसे-जैसे भारत वैश्विक नेतृत्व की ओर बढ़ रहा है, वह वैश्विक बाज़ारों के साथ और अधिक एकीकृत होता जा रहा है। इससे कुछ जोखिम भी उत्पन्न होते हैं:

- **साइबर लचीलापन:** 100% डिजिटल बैंकिंग और बीमा के साथ, अर्थव्यवस्था पूरी तरह से डिजिटाइज़ होने के साथ ही साइबर सुरक्षा राष्ट्रीय सुरक्षा का एक अहम मुद्दा बन जाएगी।
- **जलवायु परिवर्तन:** "जलवायु अनुकूलन" में बीमा एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। जोखिम का सटीक मूल्यांकन करके, बीमा कंपनियाँ व्यवसायों को अधिक लचीला बुनियादी ढाँचा बनाने के लिए प्रोत्साहित करेंगी।
- **दीर्घायु जोखिम:** जैसे-जैसे स्वास्थ्य सेवाएँ बेहतर होंगी और लोग अधिक समय तक जीवित रहेंगे, बीमा उद्योग का "पेंशन" क्षेत्र सामाजिक सुरक्षा का सबसे बड़ा प्रदाता बन जाएगा, जिससे

यह सुनिश्चित होगा कि बुज़ुर्ग लोग गरिमा के साथ जीवन जी सकें।

- **वित्तीय साक्षरता:** डिजिटल धोखाधड़ी को रोकने के लिए प्रौद्योगिकी और उपयोगकर्ता के बीच साक्षरता के अंतर को पाटना।
- **नियामक तत्परता:** RBI और IRDAI को तीव्र नवाचार और प्रणालीगत झटकों को रोकने के लिए आवश्यक स्थिरता के बीच संतुलन बनाए रखना होगा।

**आत्मनिर्भरता से वैश्विक नेतृत्व तक का सफर:**

विकसित भारत - 2047 का सफर सिर्फ़ $30 ट्रिलियन के लक्ष्य की ओर एक दौड़ नहीं है; यह भारतीय सामाजिक-आर्थिक ताने-बाने की एक बुनियादी पुनर्कल्पना है। इस बदलाव के केंद्र में एक परिष्कृत, डिजिटल-आधारित वित्तीय इकोसिस्टम है, जहाँ बैंकिंग और बीमा प्रगति के प्रमुख इंजन के रूप में कार्य करते हैं। आत्मनिर्भरता ही इसकी शुरुआत थी - अपने खुद के भुगतान तंत्र और अपने खुद के बीमा नियामक बनाना। हालाँकि, वैश्विक नेतृत्व ही इसका अंतिम लक्ष्य है।

2047 तक, भारत न सिर्फ़ वैश्विक वित्तीय मानकों का पालन करेगा, बल्कि उन्हें स्थापित भी करेगा। डिजिटल प्रथम, समावेशी और किफायती वित्त का "भारत मॉडल" अन्य विकासशील और विकसित देशों को निर्यात किया जाएगा, जिससे "विश्व मित्र" (दुनिया के दोस्त) के रूप में भारत की भूमिका और मज़बूत होगी। इसके अलावा, बैंकाश्योरेंस का रणनीतिक एकीकरण यह सुनिश्चित करता है कि यह विकास समावेशी हो, और विश्वसनीय संस्थागत माध्यमों से देश के सबसे दूरदराज के कोनों तक पहुँचे। 'बीमा त्रिमूर्ति' (सुगम, विस्तार और वाहक) भारत के अनूठे दृष्टिकोण का एक प्रमाण है: ज़मीनी स्तर की समस्याओं को हल करने के लिए विश्व-स्तरीय तकनीक का उपयोग करना।

जैसे-जैसे भारत अपने "अमृत काल" में कदम रख रहा है, वित्तीय क्षेत्र ही वह आधार बनेगा जिस पर $30 ट्रिलियन की अर्थव्यवस्था की इमारत खड़ी होगी। 1.4 अरब लोगों के जीवन और आजीविका को सुरक्षित करके, बीमा और बैंकिंग उद्योग न सिर्फ़ अर्थव्यवस्था को सहारा दे रहे हैं बल्कि वे एक ऐसे राष्ट्र के सपनों की भी रक्षा कर रहे हैं, जो वैश्विक नेतृत्व के लिए ही बना है।

"एक विकसित भारत वह है जहाँ हर जोखिम को कम किया जाता है, हर प्रतिभा को वित्तपोषित किया जाता है और प्रत्येक नागरिक राष्ट्र की समृद्धि में एक समान भागीदार होता है।"

**निष्कर्ष: मज़बूत भविष्य**

$30 ट्रिलियन का लक्ष्य सिर्फ़ एक संख्यात्मक उद्देश्य नहीं है, बल्कि यह देश की मज़बूती का एक पैमाना है। $30 ट्रिलियन की अर्थव्यवस्था एक साहसिक लक्ष्य है, लेकिन बैंकिंग और बीमा के तालमेल से इसे हासिल किया जा सकता है। जब किसी नागरिक को पता होता है कि उसका स्वास्थ्य बीमा से सुरक्षित है और उसके बिज़नेस को एक मज़बूत बैंक का सहारा है, तो उसे कुछ नया करने और बड़े सपने देखने की "जोखिम उठाने की क्षमता" मिलती है।

"यदि बैंकिंग क्षेत्र $30 ट्रिलियन की GDP की प्रत्यक्ष रीढ़ है, तो बीमा क्षेत्र इसकी जीवनदायिनी शक्ति है। एक क्षेत्र विकास के लिए संरचनात्मक आधार प्रदान करता है, जबकि दूसरा क्षेत्र व्यवस्थागत झटकों से बचने के लिए आवश्यक जीवनरक्षक लचीलापन और सुरक्षा प्रदान करता है। इन दोनों के तालमेल के बिना 'विकसित भारत' का सपना असंभव ही रहेगा, इनके साथ यह एक अनिवार्यता बन जाता है।"

2047 में, भारत की सफलता का माप प्रत्येक नागरिक को प्रदान की जाने वाली सुरक्षा से होगा, जब वह वैश्विक मानकों का अनुसरण करने वाले देश से आगे बढ़कर एक ऐसा "विश्व मित्र" बनेगा जो बाकी दुनिया के लिए मिसाल कायम करेगा। यह यात्रा इस बात को सुनिश्चित करने के बारे में है कि एक सदी की प्रगति किसी एक संकट से नष्ट न हो जाए। जिस प्रकार बैंकिंग विकास को गति प्रदान करता है और बीमा सुरक्षा कवच प्रदान करता है, उसी प्रकार भारत वैश्विक आर्थिक महाशक्ति के रूप में अपनी स्थिति को पुन: प्राप्त करने की दिशा में आगे बढ़ रहा है।

"2047 के विकसित भारत में, समृद्धि का मापन केवल हमारे द्वारा सृजित धन से नहीं, बल्कि प्रत्येक नागरिक को प्रदान की जाने वाली सुरक्षा से किया जाएगा।"

# निरंतर विस्तार में राजभाषा की भूमिका

**मनीषा अग्रवाल**
उ.श्रे. स. (मधुगिरि शाखा),
बेंगलोर मंडल कार्यालय -I

भाषा किसी भी राष्ट्र की आत्मा होती है। यह केवल संप्रेषण का माध्यम नहीं बल्कि संस्कृति, परंपरा और पहचान का दर्पण भी होती है। भारत जैसे बहुभाषी और बहुसांस्कृतिक देश में भाषा का महत्व और भी अधिक बढ़ जाता है। संविधान द्वारा हिन्दी को राजभाषा का दर्जा दिया गया है, वहीं अंग्रेजी को सह-राजभाषा के रूप में मान्यता मिली है। राजभाषा का उद्देश्य केवल सरकारी कार्यों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह राष्ट्र की एकता और प्रगतिशीलता का भी आधार है। निरंतर विस्तार और बदलते समय में राजभाषा की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है।

### राजभाषा का ऐतिहासिक परिपेक्ष्य

स्वतंत्रता संग्राम के दौरान भाषा ने भारतीय जनमानस को एक सूत्र में पिरोने का कार्य किया। महात्मा गांधी, लोकमान्य तिलक, भारतेन्दु हरिश्चंद्र जैसे अनेक नेताओं और साहित्यकारों ने हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं को आम जनता से जोड़ने का कार्य किया। स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरांत जब संविधान सभा ने भारत संबंधी प्रश्न पर विचार किया तो हिन्दी को राजभाषा घोषित करने का ऐतिहासिक निर्णय लिया गया।

संविधान के अनुच्छेद 343 में स्पष्ट किया गया कि भारत की राजभाषा हिन्दी होगी और देवनागरी लिपि में लिखी जाएगी। साथ ही अंग्रेजी को संक्रमणकालीन अवधि के लिए सह-आधिकारिक भाषा के रूप में रखा गया। इस निर्णय ने हिन्दी को एक सशक्त पहचान दी और राजकीय कार्यों में इसके प्रयोग का मार्ग प्रशस्त किया।

### निरंतर विस्तार और बदलता परिदृश्य

आज का युग वैश्वीकरण और तकनीकी विस्तार का है। इंटरनेट मोबाईल और कृत्रिम बुद्धिमत्ता जैसी तकनीकों ने दुनिया को एक गांव में बदल दिया है। ऐसे समय में राजभाषा की भूमिका केवल सरकारी पत्राचार या प्रशासकीय कामकाज तक सीमित नहीं रह गई है, बल्कि यह शिक्षा, विज्ञान, प्रौद्योगिकी, मीडिया, व्यवसाय और अंतरराष्ट्रीय मंच तक विस्तारित है।

### प्रशासनिक क्षेत्र में भूमिका

प्रशासन में राजभाषा का प्रयोग जनसामान्य को लोकतंत्र से जोड़ने का प्रभावी साधन है। राजभाषा हिन्दी के माध्यम से सरकारी नीतियां और योजनाएं सरलता से आम नागरिक तक पहुंच सकती हैं। यदि सरकारी आदेश, परिपत्र और कानून जनता की भाषा में प्रस्तुत हो तो उनका पालन और समझना कहीं अधिक आसान हो जाता है।

### शिक्षा के क्षेत्र में भूमिका

शिक्षा का प्राथमिक उद्देश्य ज्ञानार्जन और बौद्धिक विकास है। यदि शिक्षा अपने ही मातृभाषा या राजभाषा में प्राप्त हो, तो यह अधिक प्रभावी और आत्मसात करने योग्य बनती है। नई शिक्षा नीति भी मातृभाषा और स्थानीय भाषाओं में शिक्षा पर जोर देती है। राजभाषा हिन्दी विद्यालयों, विश्वविद्यालयों में उच्च ज्ञान, विज्ञान और तकनीकी विषयों के अध्ययन का माध्यम बन सकती है।

### विज्ञान और प्रौद्योगिकी में भूमिका

विज्ञान और तकनीकी क्षेत्र में अधिकांश साहित्य अंग्रेजी में उपलब्ध है। लेकिन ग्रामीण एवं अर्धशहरी क्षेत्रों के लोग अंग्रेजी भाषा में दक्ष नहीं होते। यदि वैज्ञानिक और तकनीकी जानकारियां राजभाषा हिन्दी में उपलब्ध कराई जाएं तो व्यापक जनसमुदाय उससे लाभ उठा सकेगा।

### मीडिया और संचार में भूमिका

आज का समय सूचना और संचार का है। समाचार पत्र, टेलीविजन, रेडियों, सोशल मीडिया में राजभाषा हिन्दी व्यापक रूप से प्रयोग की

जा रही है। हिन्दी मीडिया का विस्तार इसे न केवल राष्ट्रीय बल्कि अतंर्राष्ट्रीय पहचान भी दिलाता है। हिन्दी समाचार चैनल और वेब पोर्टल विश्वभर में लोकप्रिय हैं। इसने हिन्दी को वैश्विक मंच तक पहुंचाया है। राजभाषा ने जनसंपर्क और जानकारी के लोकतंत्रीकरण में अहम् भूमिका निभाई है।

**अंतरराष्ट्रीय मंच पर भूमिका**

विश्व स्तर पर हिन्दी की पहचान दिनोंदिन मजबूत हो रही है। संयुक्त राष्ट्र संघ से लेकर विभिन्न अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों तक हिन्दी का स्वर सुनाई देने लगा है। प्रवासी भारतीयों और भारतीय समुदाय ने विदेशों में हिन्दी का परचम लहराया है।

- कई देशों के विश्वविद्यालयों में हिन्दी अध्ययन विभाग
- अंतरराष्ट्रीय हिन्दी सम्मेलनों का आयोजन
- विदेशों में भारतीय सांस्कृतिक केन्द्रों द्वारा हिन्दी का प्रचार-प्रसार

कूटनीतिक भाषा के रूप में हिन्दी की संभावनाएं, राजभाषा का महत्व इसलिए और बढ़ जाता है क्योंकि :

- ये देश की बहुसंख्यक आबादी को सीधे जोड़ती है।
- यह प्रशासन और नागरिकों के बीच की दूरी को कम करती है
- यह तकनीकी और सांस्कृतिक विस्तार में भारतीय पहचान को बनाए रखने में सहायक है।
- सरकारी पत्र-व्यवहार और अधिसूचनाओं में हिन्दी का उपयोग, अधिकारी - कर्मचारियों को हिन्दी में कार्य करने को प्रेरित करता है।
- विधानसभाओं में हिन्दी के बढ़ते प्रयोग, हिन्दी अनुवाद का समुचित प्रावधान, राजभाषा के प्रशासनिक स्तर पर प्रयोग को दर्शाता है।
- हिन्दी माध्यम में विविध विषयों की पाठ्यपुस्तकें उपलब्ध कराना, शोध और नवाचार को हिन्दी में प्रोत्साहन, ग्रामीण और शहरी छात्रों के बीच ज्ञान की खाई कम करना, तकनीकी शिक्षा में हिन्दी का योगदान, शिक्षा के क्षेत्र में राजभाषा के योगदान को दर्शाता है।
- हिन्दी में विज्ञान सामग्री और ई-लर्निंग प्लेटफॉर्म का विकास, तकनीकी शब्दावली का सृजन और मानकीकरण, अनुसंधान पत्रों का हिन्दी अनुवाद, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और मशीन ट्रांसलेशन में हिन्दी का स्थान, विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में राजभाषा की भूमिका को दर्शाता है।

**चुनौतियां**

भले ही राजभाषा हिन्दी की भूमिका निरंतर विस्तार पा रही है, लेकिन इसके समक्ष कुछ चुनौतियां भी विद्यमान हैं:-

- अंग्रेजी केन्द्रित मानसिकता और उसकी वर्चस्ववादी स्थिति
- हिन्दी तकनीकी संसाधनों की कमी
- क्षेत्रीय भाषाओं के साथ सामंजस्य की चुनौती
- आधुनिक ज्ञान-विज्ञान की हिन्दी में अपर्याप्त उपलब्धता

**समाधान और सुझाव**

राजभाषा का प्रभावी क्रियान्वयन तभी संभव है जब इसके प्रयोग को प्रशासनिक औपचारिकता से आगे बढ़ाकर जनजीवन का स्वाभाविक हिस्सा बनाया जाए।

- हिन्दी में उच्च स्तरीय तकनीकी और वैज्ञानिक साहित्य उपलब्ध कराना।
- सरकारी और गैर-सरकारी संस्थानों में हिन्दी का समान रूप से प्रयोग।
- भारतीय भाषाओं के साथ सामंजस्य स्थापित कर हिन्दी को सेतु बनाना।
- डिजिटल माध्यमों पर हिन्दी सामग्री को प्रोत्साहन देना।

**उपसंहार**

"राजभाषा केवल शासन का उपकरण नही, बल्कि राष्ट्र की संस्कृति स्वाभिमान और एकता का प्रतीक है।"

निरंतर बदलते वैश्विक परिदृश्य में हिन्दी राजभाषा के रूप में एक सशक्त और जीवंत भाषा बनकर उभर रही है। यदि हम विज्ञान, तकनीकी, शिक्षा और प्रशासन के हर क्षेत्र में हिन्दी को समान रूप से स्थान दें, तो यह न केवल राष्ट्र की एकता में सहायक होगी बल्कि विश्व पटल पर भारत की पहचान को भी और सशक्त बनाएगी ।

# बदलती वैश्विक अर्थव्यवस्था के ध्रुवीकरण के परिदृश्य में भारत

**निशा अश्वनी कुमार**
उच्च श्रेणी सहायक (कार्मिक),
मंडल कार्यालय, चण्डीगढ़

विश्व अर्थव्यवस्था निरंतर गतिशील स्वरूप ग्रहण करती रहती है। परंतु 21वीं सदी का वर्तमान परिदृश्य निश्चय ही एक नए आर्थिक ध्रुवीकरण का परिचायक है। शीतयुद्ध के बाद जिस एकध्रुवीय आर्थिक व्यवस्था का वर्चस्व अमेरिका के नेतृत्व में दिखा, वह अब धीरे-धीरे संतुलित होते हुए बहुध्रुवीय दिशा में अग्रसर है। इस पृष्ठभूमि में भारत का उभरना विशेष महत्व रखता है क्योंकि भारत न केवल तीव्र आर्थिक विकास दर प्राप्त कर रहा है, बल्कि वह लोकतांत्रिक मूल्यों, जनसंख्या लाभांश और भू-राजनीतिक स्थिति जेसे बहुआयामी तत्वों के कारण वैश्विक समीकरणों का अभिन्न अंग बनता जा रहा है।

**वैश्विक अर्थव्यवस्था का बदलता स्वरूप :**

विश्व अर्थव्यवस्था में आज शक्ति संतुलन पुनर्निर्मित हो रहा है।

- 'अमेरिका' अब भी तकनीकी, वित्तीय बाजारों और सैन्य ताकत के बल पर अग्रणी है, परंतु उसके प्रभुत्व को चीन खुली चुनौती दे रहा है।
- 'चीन' ने अपनी विशाल विनिर्माण क्षमता, 'बेल्ट एवं रोड इनिशिएटिव' तथा निर्यात-आधारित वृद्धि से आर्थिक ध्रुव के रूप में स्थान बनाया है।
- 'यूरोपीय संघ' हरित ऊर्जा, तकनीकी शोध और नियामकीय शक्तियों से स्वयं को विशिष्ट ध्रुव के रूप में स्थापित कर रहा है।
- 'रूस' ऊर्जा स्त्रोतों और सामरिक सामर्थ्य द्वारा वैश्विक अर्थव्यवस्था पर निर्णायक प्रभाव डालता है।
- 'उभरते राष्ट्र और ब्राजील, दक्षिण अफ्रीका, खाड़ी देश तथा आसियान' क्षेत्र भी अब वैश्विक निवेश और व्यापार में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

इन परिस्थितियों में किसी एक ध्रुव का वर्चस्व अब संभव नहीं है। परिणामत: विश्व आर्थिक व्यवस्था धीरे-धीरे बहुध्रुवीय और आपूर्ति श्रृंखलाओं में विविधीकृत स्वरूप धारण कर रही है। यह वातावरण प्रतिस्पर्धा के साथ-साथ नए अवसरों का द्वार भी खोलता है ।

**भारत की स्थिति और ताकतें :**

भारत दुनिया की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है, जिसने 2025 में 3.7 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर का सकल घरेलू उत्पाद अर्जित किया। इसकी औसत विकास दर 6-7% के बीच बनी हुई है, जो विकसित अर्थव्यवस्थाओं की तुलना में कहीं अधिक है।

- **जनसांख्यिकीय लाभांश :** भारत के पास 65% से अधिक जनसंख्या युवा है। यह श्रम और उपभोग दोनों ही दृष्टि से उसे विशाल शक्ति प्रदान करती है।
- **तकनीकी ओर डिजिटल ताकत :** सूचना प्रौद्योगिकी, सॉफ्टवेयर निर्यात और स्टार्टअप क्रांति ने भारत को डिजिटल ध्रुव बना दिया है। 'यूनिफाइड पेमेंट्स इंटरफेस (यूपीआई) जैसी प्रणालियां वैश्विक स्तर पर अनुकरणीय मानी जा रही हैं।
- **भूराजनीति :** भारतीय महासागर के केन्द्रीय स्थान पर स्थित होने से भारत हिन्द-प्रशांत क्षेत्र की स्थिरता का प्रमुख प्रहरी है।
- **हरित परिवर्तन :** भारत 2070 तक नेट-जीरो कार्बन उत्सर्जन का लक्ष्य रखता है और विश्व की सबसे बड़ी सौर ऊर्जा परियोजनाओं में योगदान दे रहा है।
- **लोकतांत्रिक व्यवस्था :** भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र है, जो शासन और नीति की पारदर्शिता से विश्वास अर्जित करता है।

**बदलते परिदृश्य में चुनौतियां :**

इन संभावनाओं के साथ-साथ चुनौतियां भी उतनी ही गंभीर हैं :-

1 **आर्थिक असमानता :** विकास दर ऊंची निरंतर है, परंतु भारत को आय और अवसर की असमानताओं से जूझना पड़ रहा है।

2 **अवसंरचना की कमी :** परिवहन, ऊर्जा, लॉजिस्टिक और शिक्षा-स्वास्थ्य क्षेत्र में अभी बहुत कुछ सुधार की जरूरत है।

3 **भू-राजनीतिक संकट** : रूस-यूक्रेन युद्ध, पश्चिमी एशिया की अस्थिरता और अमेरिका-चीन प्रतियोगिता भारत को प्रभावित करती है।

4 **वैश्विक संरक्षणवाद :** बढ़ते टैरिफ, व्यापार युद्ध और सप्लाई चेन खतरों से निर्यात को दबाव झेलना पड़ता है।

5 **पर्यावरणीय खतरे :** जलवायु परिवर्तन से कृषि, उद्योग और नागरिक जीवन प्रभावित होता है।

**भारत की रणनीति और नेतृत्वकारी भूमिका :**

भारत इन कठिनाईयों को अवसर में बदलने की दिशा में सक्रिय है :-

- जी-20 अध्यक्षता (2023) ने भारत को विश्व नीति-निर्माण में केन्द्रीय नेतृत्व दिया। "एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य" का मंत्र वैश्विक सहयोग की नई राह दिखाता है।
- **ब्रिक्स (BRICS) और दक्षिण सहयोग :** भारत ने ब्रिक्स के विस्तार का समर्थन कर विकासशील राष्ट्रों की आवाज को मजबूती दी है।
- **'मेक इन इंडिया', 'आत्मनिर्भर भारत' :** ये पहलें घरेलू उत्पादन को मजबूत कर भारत को वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला की महत्वपूर्ण कड़ी बनाने पर केंद्रित हैं।
- **डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना :** 'आधार', डिजिलॉकर, और यूपीआई जैसी पहल ने दुनिया के सामने एक नया भारत मॉडल प्रस्तुत किया है।
- **हरित ऊर्जा:** भारत इंटरनेशनल सोलर अलायंस का संस्थापक है, जो जलवायु परिर्वतन के समाधान में केन्द्रीय भूमिका निभा रहा है।

**भारत और एशिया-अफ्रीका - लेटिन अमेरिका :**

भारत की रणनीति केवल पश्चिम और विकसित विश्व तक ही सीमित नहीं है। उसने एशिया - अफ्रीका – लैटिन अमेरिका में बुनियादी ढांचे, दवाइयों, आई.टी. और शिक्षा से जुड़ी परियोजनाओं के जरिये स्वीकार्यता प्राप्त की है। विशेषकर अफ्रीका में दवाईयां व शिक्षा सहयोग भारत की विशिष्ट पहचान बना रहे हैं।

बदलते ध्रुवीकरण में भारत के लिए कुछ प्रमुख कदम आवश्यक हैं :-

1 **निरंतर आर्थिक सुधार :** श्रम सुधार, भूमि सुधार, वित्तीय क्षेत्र में पारदर्शिता।

2 **मानव संसाधन विकास :** शिक्षा और कौशल विकास पर निवेश बढ़ाना।

3 **सतत विकास :** हरित प्रौद्योगिकी व स्वच्छ ऊर्जा पर अनुसंधान।

4 **आर्थिक कूटनीति :** व्यापार समझौतों और रणनीतिक साझेदारी का विस्तार।

5 **सांस्कृतिक कूटनीति :** भारत की सभ्यता, संस्कृति और लोकतांत्रिक आदर्शों को वैश्विक मंचों पर प्रस्तुत करना।

भारत के इस उभरते स्वरूप को कवि की दृष्टि से देखें तो यह यथार्थ प्रतीत होता है कि - "जहां सूरज का प्रकाश नए युग की भोर जगाए, भारत अपने सपनों को वैश्विक आसमान पर सजाए"।

स्पष्ट है कि बदलते वैश्विक ध्रुवीकरण के दौरे में भारत न केवल उभरते ध्रुव के रूप में शक्ति संचय कर रहा है, बल्कि संतुलनकारी शक्ति के रूप में भी कार्य कर रहा है। अमेरिका और चीन के बीच नई शीतयुद्ध जैसी स्थिति में भारत विश्व के लिए मध्यपथ की राह प्रस्तुत कर सकता है। यदि भारत नवाचार, समावेशिता, हरित विकास और लोकतांत्रिक आदर्शों पर आधारित राह अपनाता है, तो वह 21वीं सदी का आर्थिक और नैतिक ध्रुव बनने में निश्चित रूप से सफल होगा।

"विश्व की बदलती दिशा में, भारत बनेगा प्रकाश - सद्भाव, समृद्धि और संतुलन का नया प्रयास ।"

लघुकथाएं

# ब्रेकअप और अन्य कहानियां

**देवेन्द्र सिंह सिसौदिया**
प्र.अ. (सेवा-निवृत),
मंडल कार्यालय, इंदौर

### 1. ब्रेकअप

प्रो. समीर कुछ माह पूर्व ही कॉलेज में स्थानांतर होकर आए थे। वे हिंदी के प्राध्यापक थे, शृंगार की रचनाएँ बड़ी रुचि से पढ़ाते थे। कुछ ही दिनों में वे विद्यार्थियों के चहेते हो चुके थे। सभी बच्चों को उनसे पढ़ने में बहुत आनंद आने लगा था।

खाली पीरियड में वे स्टाफरूम में आकर चुपचाप अपनी किताब पढ़ते रहते थे। न किसी से बात करते थे और न ही किसी के साथ रहते थे। डॉ. वर्मा को उनके इस व्यवहार पर आश्चर्य होता था। चूंकि वे साहित्य से जुड़ी थीं, इसलिए उनके भावों को समझने की कोशिश कर रही थी। एक दिन उन्होंने प्रो. समीर से उनकी उदासी का कारण पूछ लिया। उन्होंने टालने का प्रयास किया परंतु डॉ. वर्मा के सामने वो हार गए। उन्होंने बताया कि दो वर्ष पूर्व उनका ब्रेकअप हुआ है। डॉ. वर्मा उनके दिल की हालत को अच्छे से समझ गईं कि ब्रेकअप के बाद कैसी स्थिति होती है। दोनों की समान परिस्थिति ने उनको नजदीक आने का अवसर दिया और एक दिन दोनों का ब्रेक अप टूट गया।

### 2. नई बहू

नई बहू का गृह प्रवेश होने के पश्चात् अधिकांश रिश्तेदार निकल चुके थे, कुछ करीबी रिश्तेदार ही बचे थे। आंगन में रस्में चल रही थीं, हंसी-मजाक का माहौल था। दुल्हा-दुल्हन के बीच खेले जाने वाले पारम्परिक गेम्स का खूब आनंद लिया जा रहा था, जो वैवाहिक जीवन की हार-जीत को निर्धारित करते हैं। सभी रस्में संपन्न होने के पश्चात मिसेज अरोरा नई नवेली दुल्हन से बोलीं "बहू, अब आज का पहला भोजन तुम बनाओ।" बहू उठती, उसके पहले ही बेटी स्मिता उठी और किचन में जाते हुई बोली "माँ, भाभी को हमारे घर का पहला स्वादिष्ट भोजन, मैं अपने हाथों से बना कर खिलाऊँगी, भाभी के हाथ का बना तो हम हमेशा ही खायेंगे।"

### 3. प्रदर्शन

सड़क किनारे लगी मटकों की दुकान के पास आकर एक चमकीली एस.यू.वी. कार रुकी। कुछ युवा उसमें से उतरे और मटकों के भाव पूछने लगे।

"क्यों भाई, मटके क्या भाव दिए?"

मंगू ने जवाब दिया "बाबूजी, अस्सी रुपये का एक।"

उनमें से एक लड़के ने गर्वीली आवाज़ में पूछा "भैया, एक दर्जन लेंगे तो कैसे दोगे?" मंगू ने खुश होते हुए पूछा "बाबूजी, क्या प्याऊ खोल रहे हो? यदि हाँ, तो एक दर्जन पर एक मटका फ्री दूँगा।"

एक लड़का बोला "अरे प्याऊ व्याऊ के लिए नहीं चाहिए।"

मंगू ने फिर पूछा "तो फिर बाबूजी ?"

उनमें से नेता टाइप का एक लड़का बोला, "हम लोग पानी की माँग के लिए जंगी प्रदर्शन कर रहे हैं, बस उसी के लिए चाहिए। हम, इन मटकों को सड़क पर फोड़ कर विरोध प्रदर्शन करेंगे।"

मंगू हाथ जोड़ते हुए बोला "अच्छा, तो बाबूजी ये मटके फोड़ने के लिए चाहिए... बाबूजी, माफ करना, हम मटके आपको नहीं बेच सकते। ये हमारा खून-पसीना है, इन मटकों को हमने रात-दिन लगकर किसी की प्यास बुझाने के लिए बनाया है, न कि विरोध प्रदर्शन के लिए..."

### 4. आस

अमित अपनी बेटी की फीस जमा करने स्कूल के रिसेप्शन पर खड़ा था। इस बीच अंदर से प्राचार्य महोदया का फोन आया कि "जूली, हमारे यहाँ किसी शिक्षक का पद रिक्त नहीं है, अब किसी से भी आवेदन नहीं लेना है।"

जूली रसीद बना ही रही थी, इसी बीच एक बीस-इक्कीस साल की लड़की आई और बोली "मैडम, क्या आपके यहाँ टीचर की जरूरत है?" जूली मुस्कराते हुए बोली "आप आवेदन दे दीजिए।"

अमित आश्चर्यचकित था... अभी तो इन्हें मना किया था कि आवेदन नहीं लेना है ! अमित से रहा नहीं गया। उसने पूछ ही लिया, "मैडम, आपको तो अभी प्रिंसिपल मैडम ने मना किया था?"

जूली मुस्करा कर बोली "इतनी दूर से आस लिए आई थी, अगर मैं मना कर देती तो निराश हो जाती, उसके नसीब में होगा, तो जरूर जगह बन जाएगी।"

इस बीच विद्यालय की एक वरिष्ठ शिक्षिका प्राचार्य कक्ष में गईं और कुछ ही देर में कक्ष से निकल कर रिसेप्शन पर आईं और बोलीं, "लो जूली मिठाई खाओ... मेरा दूसरे स्कूल में हेडमिस्ट्रेस पद पर सिलेक्शन हो गया है... और अब मैं जा रही हूँ...।"

जूली, अमित की ओर देख मुस्कराते हुए उस लड़की का आवेदन ले कर प्राचार्य कक्ष की ओर चल पड़ी... एक आस के साथ।

**5. मजबूरी**

संगीता रोज की तरह बगीचे में मॉर्निंग वॉक कर रही थी कि अचानक उसे वहाँ सलोनी दिखाई दी। सलोनी एक प्यारे से पपी के साथ सैर कर रही थी। सैर के दौरान पपी अपने नित्य कर्म भी बड़ी ही सहजता से निपटा रहा था। चलते-चलते दोनों सलोनी के घर के सामने पहुँच गईं।

सलोनी, संगीता से घर आने के जिद्द करने लगी... "आओ, चाय पी कर जाना।" संगीता उसके आग्रह को अस्वीकार नहीं कर पाई। सलोनी के साथ-साथ पपी पूरे घर में घूम रहा था। सलोनी चाय-बिस्कुट लेकर आ गई। इधर-उधर की बातें होने लगीं। जाते-जाते संगीता ने पूछ ही लिया, "इस पपी को अभी लाई हो... बड़ा प्यारा है... बहुत हिल-मिल गया है।"

सलोनी नाक सिकुड़ाते हुए बोली, "अरे, नहीं यार, तुझे तो पता है न मैं ये सब पसंद नहीं करती... मेरा बस चल जाए तो अभी इसे नौ-दो-ग्यारह कर दूं।" इस बीच पपी सलोनी की गोद में आकर बैठ गया। उसकी पूंछ तेजी से हिल रही थी।

सलोनी ने पपी के सर पर हाथ फेरते हुए बोला "क्या है संगीता, कुछ ही दिनों में हमारा प्रमोशन राउंड आने वाला है, हमारे बॉस, कुछ दिनों के लिए बाहर गए हैं, वे ही छोड़ गए हैं.. मजबूरी में इसे रखना पड़ा..." पपी, सलोनी का मुँह चाटने लगा...।

**6. रिश्ते**

मिसेज गुप्ता ने अपनी मेड सविता को फोन लगा कर पूछा, "सविता, आज भी तुम काम पर नहीं आई...?"

सविता गहरी साँस लेते हुए बोली, "क्या बताऊँ मैडम जी, परसों, जब से आप के घर से आई, तभी से हल्का बुखार आ रहा है।" मिसेज गुप्ता ने चिंतित होकर पूछा, "अरे तुमने कुछ दवाई वगैरह ली या नहीं?"

सविता कराहते हुए बोली, "हाँ मैडम जी, वो आशा कार्यकर्ता आई थीं, उन्होंने कुछ दवाइयाँ दी हैं, वही हम दोनों ले रहे हैं।"

मिसेज गुप्ता आश्चर्य से बोलीं, "दोनों मतलब?"

"जी मैडम, गुड्डू के पापा और मैं- हम दोनों को बुखार है।"

थोड़ी देर बाद मिसेज गुप्ता सविता के घर पहुँच गई। सविता बोली, "मैडम जी, आपको भरोसा नहीं हुआ, आप तो घर देखने आ गए?"

"मिसेज गुप्ता बोलीं" अरे नहीं, सविता मैं तो तुम्हारी तबीयत देखने आई।"

सविता मुस्कुराते हुए बोली, "अरे मैडमजी, आप हमारी तबीयत देखने आई!" मिसेज गुप्ता हाथ बढ़ाते हुए बोली "हाँ तो, ये लो टिफिन, तुम लोग खा लेना।"

"मैडम जी, मैं आप के यहाँ खाना बनाती हूँ और आप मेरे लिए खाना बना लाई।" सविता बोली।

"सविता कैसी बात कर रही हो, वर्षों से तुम्हारे हाथ का भोजन कर रहे हैं, तो क्या एक दिन, मैं तुम्हें खिला नहीं सकती? अब तुम आराम से खाना खा लेना और किसी बात की चिंता न करना और कुछ जरूरत हो तो बताना..." बोलते हुए मिसेज गुप्ता घर से बाहर आने लगीं।

सविता की आँखों से आँसू लुढ़कते हुए नौकर और मालिक के रिश्ते को सिंचित करने लगे।

कहानी

# सनकीदा मोड़ से गुज़रते हुए

**मुकेश नौटियाल**
उ.श्रे.स. (का.एवं औ.सं.विभाग),
मण्डल कार्यालय, देहरादून

जिस इलाके से मेरा ताल्लुक़ है, वहां मुख्य बाजार से ज़रा पहले राष्ट्रीय राजमार्ग से दस-एक किलोमीटर लंबा एक बाईपास निकलता है। यात्रा काल में वाहनों को बाज़ार की भीड़ से बचाने के प्रयोजन से बने इस उपमार्ग पर जब आप तिमूरधार पहुंचते हैं, तो सनकीदा मोड़ मुड़कर मुख्य राजमार्ग की तरफ़ आते हैं। सनकीदा मोड़ पहाड़ों के सबसे तीखे मोड़ों में शुमार होता है। हमारे यहां कहावत है कि जो चालक सनकीदा मोड़ को पहली बार में पार कर जाए, वह पहाड़ की सर्पीली सड़कों पर फिर कभी मात नहीं खा सकता। कई चालक तीन-चार बार गाड़ी आगे-पीछे कर सनकीदा मोड़ पार कर पाते हैं।

आज सनकीदा मोड़ के आस-पास आपको कुछ होटल और रिजॉर्ट नज़र आ जाएंगे, लेकिन हमारे बचपन के दिनों में यह इलाका बियाबान था। उस ज़माने में यह उपमार्ग नहीं बना था। पहाड़ी के शीर्ष पर हमारा गांव था और नीचे अलकनंदा के तट पर बाज़ार। दोनों के बीच सीढ़ीदार खेतों की पूरी श्रृंखला थी। पूर्वी किनारे से होकर बहती थी पुंडार गंगा, जो नीचे उतर कर अलकनंदा में जा मिलती थी। ऐसी छोटी जलधाराओं को पहाड़ों में 'गधेरा' कहा जाता है। पहाड़ों की अधिकतर जलधाराओं की तरह यह गधेरा लगभग सूख गया है, लेकिन उस जमाने में यह नदी के माफिक उफनता था।

गांव और बाज़ार के ठीक बीच में इसी जगह चैतराम जी का मकान होता था। मकान क्या था, पत्थर -मिट्टी का एक कच्चा ढांचा भर था। वह गांववालों के खेतों में हल लगाते थे। यही उनकी जीविका थी।

उम्र के उत्तरार्ध में पता नहीं चैतराम जी को क्या सूझी कि उन्होंने गधेरे से अपने घर की तरफ एक नहर का निर्माण शुरू कर दिया। एक अकेले आदमी के लिए यह असंभव-सा काम था। जहां से उन्होंने नहर खोदनी शुरू की, वहां से उनका घर लगभग सात-आठ सौ मीटर दूर रहा होगा। मैदानों में ज़मीन खोदना आसान होता है, पर पहाड़ों में यह खासा मुश्किल होता है। आप नहीं जानते कि कहां मिट्टी सख्त हो जाएगी और कहां पर चट्टान अड़कर आपकी खुदाई रोक देगी। चैतराम इन चुनौतियों से अनजान नहीं थे, बावजूद इसके, उन्होंने नहर खोदने का अभियान ज़ारी रखा। मज़े की बात यह कि वह सिंचाई के लिए नहर नहीं खोद रहे थे। इसका प्रयोजन यह था कि गधेरे की मछलियां नहर से होकर उनके तालाब में आने लग जाएं। नहर खोदने से पहले उन्होंने अपने घर के ठीक बाईं तरफ एक गहरा तालाब खोद डाला था। तालाब से एक पतली गूल (नाली) उतरकर फिर से गधेरे से जा मिलती थी ताकि पानी का प्रवाह बना रहे और तालाब से पानी ओवरफ्लो न हो सके।

चैतराम जी ने जब यह पहल शुरू की तब स्वाभाविक रूप से लोगों ने उनका ख़ूब मज़ाक उड़ाया। सभी ने इसे उनकी बुढ़भस का प्रभाव माना। कुछ ने उनको समझाने की चेष्टा भी की, पर चैतराम कहते, "मेरा फावड़ा और सब्बल तो अब तभी रुकेंगे जब नहर मेरे तालाब तक पहुंच जाएगी।"

गाँव वालों के खेतों में हल लगाना उनके लिए अब दूसरी प्राथमिकता बन गया। उनका अधिकतर समय नहर खोदने में चला जाता था। इस अभियान में उनकी अकेली मददगार उनकी पत्नी कमलीदेई थी। कभी-कभार उनके बेटे -बेटियां भी हाथ बंटा लेते थे।

लोगों को लगता था कि जब चैतरामजी का अकेले नहर खोदने की चुनौतियों से पाला पड़ेगा तो हौसले पस्त हो जाएंगे और वह अपनी पुरानी जीविका की तरफ़ लौट आएंगे, लेकिन यह अंदेशा गलत साबित हुआ। दो सालों तक लगातार ज़मीन तोड़कर उन्होंने नहर को अपने तालाब से जोड़ दिया। गधेरे से तालाब तक ढाल इतना शानदार था कि पानी की रवानगी देखते ही बनती थी।

जैसे ही यह सूचना मिली कि नहर तालाब से जुड़ गई है और पानी तालाब तक पहुंचने लगा है वैसे ही चैतराम जी के चौक में गाँव वालों की भीड़ जमा हो गई। सभी यह देखने को उत्सुक थे पानी तो आ गया

पर तालाब तक कोई मछली भी पहुंचती है कि नहीं ! पूरे दिन कोई मछली नहीं आई, अलबत्ता देर शाम एक मोटा सांप रेंगता हुआ तालाब में आ धमका। भीड़ में हंसी के फव्वारे फूट पड़े। चैतराम जी की सनक की मज़ाक उड़ाते हुए लोग-बाग घर लौट आए। तीन-चार दिन बाद फिर सूचना मिली कि तालाब तक एक बड़ी रोहूआ पहुंची है। एक बार फिर इलाके के स्त्री-पुरुष और बच्चे चैतराम जी के चौक में आ जुटे। उस दिन उनके चेहरे पर सफलता की दीप्ति देखी जा सकती थी। चैतराम जी विजेता की तरह तालाब के छोर पर खड़े कभी भीड़ को और कभी तैरती रोहू को देख रहे थे।

गधेरे की मछलियों की यह प्रवृत्ति होती है कि एक बार अगर उन्होंने दिशा बदल दी तो बार-बार उसी दिशा में आगे बढ़ती रहती हैं। उनका यही स्वभाव चैतराम जी के तालाब को समृद्ध बना गया। वह हमारे गांव सहित बाजार को भी मछलियों की आपूर्ति करने लगे। पौ फटते ही ग्राहक उनके द्वार पर खड़े होते थे। नए व्यवसाय ने चैतराम जी को इलाके के समृद्ध लोगों की कतार में ला खड़ा किया। जिनके खेतों में वह हल चलाते थे, अब उन्हीं के मददगार बनकर नई भूमिका में आ गए थे।

युग बीता। पहाड़ों में नए-नए बाजार विकसित हुए। हमारा कस्बा भी बद्रीनाथ यात्रा का प्रमुख पड़ाव बन गया। यात्राकाल में बाज़ार में लगनेवाले जाम से निजात दिलाने के लिए बाईपास मार्ग बनाने की शुरुआत हुई। जब सड़क कटकर तिमूरधार तक आई तो पता चला कि आगे पहाड़ रेतीला है जिस पर बनी सड़क कभी भी धंस सकती है। काम बीच में रुक गया। तभी चैतराम जी ने सड़क बनानेवाले ठेकेदार को सुझाव दिया कि तिमूरधार से सड़क को सीधे आगे न बढ़ाकर ढलान की तरफ मोड़ दिया जाए तो रेतीले पहाड़ को छेड़ना ही नहीं पड़ेगा।

"लेकिन ऐसा करने से आपका मकान सड़क की भेंट चढ़ जाएगा।"

ठेकेदार ने कहा "तुम्हारा मकान सरकारी ज़मीन पर है। सरकार अपनी ज़मीन पर सड़क बना रही है ।"

चैतराम तब उम्र के आख़िरी पड़ाव पर आ पहुंचे थे। उनके बच्चे शहरों में स्थापित हो चुके थे। पुंडार गंगा का पानी सूखने से तालाब सालों पहले सूख चुका था। लोगों को एक बार फिर एहसास हुआ कि चैतराम जी की पुरानी सनक लौट आई है। आखिर कौन सड़क के लिए अपना घर कुर्बान करता है, वह भी बिना मांगे! लेकिन उन्होंने सड़क को आगे बढ़ाने की दिशा दी और स्वयं दृश्य से गायब हो गए।

इस कहानी को समेटूं, इससे पहले इसमें इतना जोड़ना शेष रह गया है कि चैतराम जी ने नहर खोदने की शुरुआत करते ही अपना मूल नाम खो दिया था। लोगों ने उनको जो नया नाम दिया वह था - सनकी। उन्होंने और उनके परिवार ने बड़ी सहृदयता से यह नया नाम स्वीकार कर लिया। वह जानते थे कि अभेद्य लक्ष्यों पर निशाना साधने की जुर्रत करने वाला सनकी ही कहलाएगा। हमारे बड़े -बुजुर्ग उनको 'सनकी दा' कहकर पुकारते थे। पहाड़ों में 'दा' बड़े भाई को कहते हैं। जब यह सड़क बनी तब इस मोड़ को 'सनकी दा मोड़' कहा गया। बाद में होटल और रिजॉर्ट वालों ने अपने बोर्डों में सनकी और दा को मिलाकर एक कर दिया। इस तरह तिमूरधार से यहां तक का यह इलाका 'सनकीदा मोड़' के नाम से जाना जाने लगा।

सनकीदा का तीखा मोड़ पीढ़ियों को याद दिलाता रहेगा कि अंतस में अनायास उपजी कोई सनक कभी जीवन को ऐसा मोड़ दे देती है कि पथरीला रास्ता भी आबाद हो जाता है और रेतीला नज़र आने वाला भविष्य भी चमकने लगता है।

कहानी

# स्पेशल बर्थडे

**प्रतिभा शर्मा**
उ.श्रे.स. (का.एवं औ.संबंध विभाग),
मंडल कार्यालय, अजमेर

मम्मी! जल्दी लंच बॉक्स पैक करो ना, बस वाला दो बार हॉर्न दे चुका है। अरे बाबा लाई, ये लो बेटा! सबसे पहले तो हैप्पी 15वाँ बर्थडे मेरी प्यारी गुड़िया, और ये पकड़ो तुम्हारा लंच बॉक्स और वाटर बॉटल। और सुन! लंच पूरा खत्म करके ही लाना, नहीं तो मैं कल से लंच बनाना ही बंद कर दूंगी- नंदिनी ने बनावटी गुस्सा दिखाते हुए बोला। मां की वही घिसी-पिटी झूठी धमकी सुनकर रैना अपने पापा की तरफ देखकर हंसती हुई स्कूल बस पकड़ने के लिए घर से चल पड़ी।

ये बच्ची पता नही कब सुधरेगी, रोज अपना खाना सहेलियों को खिला आती है और आकर मुझे अपनी सहेलियों के टिफिन ना लाने के बहानों की लिस्ट बताने लगती है। रसोई समेट कर नंदिनी नाश्ता टेबल पर ले आई और आकाश के साथ चाय की चुस्की लेते हुए बोली, अरे सुनो! आज शाम को आते समय केक लेते आना और सारे जरूरी सामान की लिस्ट मैं आपको वॉट्सएप पर भेज दूंगी, वो भी लेते आना। आज रैना का 15वाँ जन्मदिन है और मैं उसके जन्मदिन को कुछ खास अंदाज में मनाना चाहती हूं। ठीक है बाबा, ले आऊंगा, बोलकर आकाश लैपटॉप पर ऑफिस का कुछ काम करने में व्यस्त हो गया। नंदिनी कल की पार्टी के लिए जरूरी सामान के बारे में सोचते हुए आकाश के टिफिन की तैयारी करने लगी।

दिन के दो बज गए थे। रैना की स्कूल बस आने का समय हो गया था। नंदिनी गली में बस के आने की राह देख रही थी, तभी उसका मोबाइल बजा। उसने फोन उठाया तो फोन पर आवाज आई, हेलो! क्या आप रैना शर्मा की मां बोल रही है? जी हां, मैं उसकी मां बोल रही हूं। सामने से आवाज आई कि हम सिटी हॉस्पिटल से बोल रहे हैं, आप जल्दी से यहां आ जाइए। कुछ जरूरी काम है। इतना बोलकर सामने वाले ने फोन काट दिया। नंदिनी हेलो, हेलो करती रही। उसका दिल जोरों से धड़कने लगा। उसने बिना समय गंवाए आकाश को फोन करके हॉस्पिटल से फोन आने वाली बात बताई और सिटी हॉस्पिटल आने के लिए बोला। वो खुद भी स्कूटी उठाकर तेज गति से हॉस्पिटल की ओर चल पड़ी।

पता नहीं क्या अनहोनी हो गई है, कहीं रैना को... ये खयाल आते ही उसकी रूह कांप गई। जैसे-तैसे वो हॉस्पिटल पहुंची, तो गेट पर ही रैना एक बुजुर्ग दंपती के साथ खड़ी मम्मी का इंतजार करते हुए दिखाई दी। उसने गाड़ी साइड में लगाई और दौड़कर रैना को गले लगा लिया। रैना बोली अरे मम्मी! क्या हो गया, ऐसे क्या फिल्मी एक्सप्रेशन्स दे रही हो। मुझे कुछ नहीं हुआ है, मैं बिलकुल ठीक हूं। गले लगाना हो, तो इन अंकल-आंटी को लगाओ, जिनकी वजह से मैं आज आपके सामने सुरक्षित और जीती-जागती खड़ी हूं। नंदिनी बोली, मैं कुछ समझ नहीं पाई। रैना! साफ-साफ बता ना, यहां मेरी जान को बन आई थी और तू पहेलियां बुझा रही है। इतने में आकाश भी आ गया और प्रश्न भरी निगाहों से मां- बेटी को देखने लगा।

रैना ने दोनों को परेशान देखकर बोला, अरे! पापा मम्मी मैं पूरी बात बताती हूं। आज जब मैं स्कूल बस पकड़ने के लिए रोड क्रॉस कर रही थी, तभी एक अनियंत्रित ऑटो मेरी तरफ आता दिखा। मैं तो उसकी चपेट में आने ही वाली थी, तभी इन अंकल ने मुझे पीछे खींच लिया और इसी चक्कर में ये नीचे गिर पड़े और इन्हें पैर में चोट आ गई। मैं बस वाले अंकल की मदद से अंकल-आंटी को हॉस्पिटल ले आई और इनकी डॉक्टर से मरहम पट्टी करवा दी। साथ ही हॉस्पिटल के रिसेप्शन पर आपका नंबर देकर कॉल करने का भी मैंने बोल दिया था ताकि आप मुझे यहां से पिक कर लो।

नंदिनी ने कृतज्ञ नजरों से वृद्ध दंपत्ति को देखा और उन्हें दिल से धन्यवाद बोला। फिर वो बुजुर्ग से उनकी चोट के बारे में पूछने लगी। बातों ही बातों में उसे पता चला कि वे लोग गुजरात से अजमेर दरगाह शरीफ मत्था टेकने आए हैं। नंदिनी ने आकाश को गाड़ी लाने ले लिए बोला और रैना के जन्मदिन का हवाला देकर दंपत्ति से घर चलने के लिए आग्रह किया। आकाश को उन लोगों को गाड़ी में बिठाकर घर ले आने का बोलकर नंदिनी स्कूटी से पीछे-पीछे चल पड़ी।

घर जाकर नंदिनी ने गरम-गरम खाना बनाकर दोनों को प्यार से खिलाया। शाम को रैना ने केक काटकर सबके साथ अपना जन्मदिन मनाया। अगले दिन सभी ने दरगाह शरीफ दर्शन करने के बाद नंदिनी और आकाश ने खुशी-खुशी दंपत्ति को ट्रेन में बिठाकर गुजरात के लिए विदा किया।

घर आते ही रैना बोली, मम्मी, पापा बता रहे थे कि आप इस बार मेरा बर्थडे कुछ स्पेशल तरीके से मनाना चाह रही थीं, तो देखो भगवान ने अंकल आंटी को स्पेशल गेस्ट बनाकर मुझे नया जीवन देने के लिए भेजा था, ताकि मेरा ये जन्मदिन हमेशा हमें याद रहे। नंदिनी ने मन ही मन उन स्पेशल बर्थडे गेस्ट बुजुर्ग दंपति को और भगवान को दिल से धन्यवाद दिया और रैना को गले लगाते हुए बोली सच में बेटा! ये जन्मदिन बहुत स्पेशल था।

# विश्वास के 70 वर्ष : प्रगति, परंपरा और राजभाषा के साथ एलआईसी की स्वर्णिम यात्रा

**परविंदर कुमार**
राजभाषा अधिकारी,
केंद्रीय कार्यालय, राजभाषा अनुभाग

**"योगक्षेमं वहाम्यहम्"**
**आपकी समृद्धि और सुरक्षा हमारी जिम्मेदारी।**
विश्वास, सुरक्षा और समर्पण के 70 गौरवशाली वर्ष

वर्ष 2026 भारतीय जीवन बीमा निगम (एलआईसी) के लिए एक ऐतिहासिक और गौरवपूर्ण पड़ाव है। इस वर्ष निगम अपनी स्थापना के 70 वर्ष पूर्ण कर रहा है। सात दशकों की इस स्वर्णिम यात्रा में एलआईसी ने करोड़ों भारतीय परिवारों को आर्थिक सुरक्षा, विश्वास और उत्कृष्ट सेवाएँ प्रदान करते हुए देश के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। अपनी सुदृढ़ कार्य-संस्कृति, ग्राहक-केंद्रित दृष्टिकोण और निरंतर नवाचार के बल पर एलआईसी आज भी देश की सबसे विश्वसनीय जीवन बीमा संस्था के रूप में प्रतिष्ठित है।

समय के साथ एलआईसी ने आधुनिक तकनीक, डिजिटल सेवाओं और नवीन बीमा उत्पादों को अपनाकर अपनी सेवाओं को अधिक सरल, सुलभ और प्रभावी बनाया है। यही दूरदर्शिता और निरंतर प्रगति की भावना एलआईसी को नई ऊँचाइयों तक पहुँचा रही है।

### वित्तीय उत्कृष्टता की नई मिसाल

वित्त वर्ष 2026-27 की प्रथम तिमाही के परिणाम एलआईसी की सुदृढ़ वित्तीय स्थिति और प्रभावी व्यावसायिक रणनीति को रेखांकित करते हैं। इस अवधि में कर पश्चात लाभ (PAT) 22.81 प्रतिशत बढ़कर ₹13,492 करोड़ तथा नए व्यवसाय का मूल्य (VNB) 61.32 प्रतिशत बढ़कर ₹3,136 करोड़ हो गया। वीएनबी मार्जिन 22.9 प्रतिशत तक पहुँच गया, जो व्यवसाय की बढ़ती गुणवत्ता और लाभप्रदता का संकेत है। इसी अवधि में कुल प्रीमियम आय 6.75 प्रतिशत बढ़कर ₹1,27,250 करोड़ रही। प्रबंधनाधीन परिसंपत्तियाँ (AUM) लगभग ₹59.39 लाख करोड़ के स्तर पर पहुँच गईं। ये उपलब्धियाँ ग्राहकों के अटूट विश्वास, सुदृढ़ वित्तीय प्रबंधन और एलआईसी की दीर्घकालिक विकास यात्रा को नई गति प्रदान करती हैं।

### राजभाषा : विश्वास और संवाद का सशक्त माध्यम

एलआईसी की विकास यात्रा में राजभाषा हिंदी ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। हिंदी ने ग्राहकों, कर्मचारियों और संस्था के बीच संवाद को अधिक सहज, सरल और प्रभावी बनाया है। भारत सरकार की राजभाषा नीति के अनुरूप निगम कार्यालयीन कार्य, प्रशिक्षण, प्रकाशनों, डिजिटल सेवाओं तथा ग्राहक संचार में हिंदी के प्रयोग को निरंतर प्रोत्साहित कर रहा है। इससे कार्यकुशलता के साथ-साथ ग्राहकों का आत्मीय जुड़ाव भी सुदृढ़ हुआ है।

### आगे की राह

70 वर्षों की यह गौरवगाथा विश्वास, सेवा, समर्पण और उत्कृष्टता की सतत यात्रा का प्रतीक है। वित्तीय सुदृढ़ता, तकनीकी नवाचार, ग्राहक-केंद्रित सेवाएँ और राजभाषा हिंदी के प्रभावी प्रयोग के साथ एलआईसी भविष्य में भी प्रगति के नए आयाम स्थापित करती रहेगी तथा करोड़ों भारतीयों के सुरक्षित और समृद्ध भविष्य की विश्वसनीय साथी बनी रहेगी।

**"70 वर्षों का विश्वास: सुरक्षित वर्तमान, सशक्त भविष्य।"**

# नारी शक्ति एवं समाज में महिलाओं की भूमिका

**चित्रा दिलीप मांद्रेकर**
प्र.अ. (प्रबंधन विकास केंद्र),
केंद्रीय कार्यालय

नारी को सृष्टि की जननी और जीवनदायिनी माना गया है। भारतीय संस्कृति में तो नारी देवी स्वरुप है। नारी शक्ति त्याग, करुणा, धैर्य और साहस का प्रतीक है।

ये जीवन तो बहती धारा जैसा है, जो जलतत्त्व से मन्डित है। जलतत्त्व अर्थात् स्त्रीतत्त्व। जब भी पुरुषप्रधान विचारधाराओं ने महिलाओं की प्रगति खंडित करने की कोशिश की, तब महिलाओं ने सकारात्मक कार्य की ज्योति सदैव जलाए रखी। समाज और परिवार की आधारशिला होती हैं महिलाएं। आज की महिलाओं ने सभी क्षेत्र विजित किये हैं जैसे कि राजनीति, शिक्षा, विज्ञान, खेल, साहित्य और कला इत्यादि।

प्राचीन भारत में भी महिलाओं को सम्मानजनक स्थान प्राप्त था तथा वे शिक्षा और ज्ञान के क्षेत्र में भी अग्रणी थीं। गार्गी और मैत्रेयी जैसी विदुषियों ने वैदिक काल में भी ज्ञानक्षेत्र में विशेष योगदान दिया। संत मीराबाई की रचनाएं तो सर्वविदित हैं। मराठी साहित्य में भी संत मुक्ताबाई, संत जनाबाई, बहिणाबाई चौधरी, शांता शेळके, डॉ. लक्ष्मीबाई टिळक आदि अग्रणी साहित्यकार थीं। हिन्दी भाषा तो डॉ. सुभद्राकुमारी चौहान, डॉ. महादेवी वर्मा, अमृता प्रीतम आदि की रचनाओं से समृद्ध है। तस्लीमा नसरीन के जाज्वल्य कथापुष्प महिलाओं के उत्पीडन और उससे उठी असहकारिता के लिए प्रसिध्द हैं।

भारतीय इतिहास में झांसी की रानी लक्ष्मीबाई, सावित्रीबाई फुले, सरोजिनी नायडू जैसी महिलाओं ने स्वतंत्रता संग्राम में समाज और राष्ट्र के लिए महान कार्य किए। राजनीति से लेकर वाणिज्य तथा व्यापार उद्यमशीलता में भी इंदिरा गांधी, अरुंधती रॉय, इंद्रा नूयी, उषा सांगवान, सुनीता शर्मा जी ने अपनी सकारात्मक कार्य की ज्योति जलाए रखी है। गान तपस्विनी लता मंगेशकर और आशा भोसले जी की महिमा तो सारी दुनिया गाती है। पाश्चात्य इतिहास में भी जोआन ऑफ आर्क, मारी क्युरी और रोजा पर्क्स जैसी महिलाओं ने पूरे विश्व को अपनी उप्लब्धियों एवं साहस से प्रेरित किया।

आधुनिक युग में भी महिलाएं अंतरिक्ष, प्रशासन, व्यापार, सेना और तकनीकी क्षेत्र में सफलता प्राप्त कर रही हैं। नयी पीढी के लिए कल्पना चावला और सुनीता विलियम्स जैसी महिलायें आदर्श हैं। अंजली वेदपाठक जैसी धनुर्धर या क्रीडा क्षेत्र में उच्च पताका लहराने वाली क्रीडानिपुण साक्षी, सिंधु, दीपा और स्मृति मंधाना, शेफाली वर्मा जैसी भारत-कन्याएं उच्चतर पदक एवं सम्मान पाती हैं।

प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य है कि महिलाओं के प्रति सुरक्षा, सम्मान और समानता दिखाए। महिलाओं को शिक्षा, रोजगार एवं निर्णय लेने के समान अवसर मिलें। नारी सम्मान से ही परिवार, समाज एवं राष्ट्र का विकास संभव है।

अगर देखें तो स्त्री के आंगन की परिसीमाएं अभी भी बडी सीमित हैं। समाज में आज भी महिलाओं के विरुद्ध भेदभाव, घरेलू हिंसा, दहेज प्रथा, बाल विवाह और उत्पीड़न जैसी समस्याएं मौजूद हैं। सोदाहरण देखा जाए तो :-

1) राजस्थान के देवराला में सती प्रथा से जुडा रुपकुंवर का मामला,
2) भंवरीदेवी कांड, जिस मामले में "विशाखा दिशानिर्देश" बनने की राह बनाई,
3) निर्भया हत्याकांड 2012, दिल्ली, जिसके बाद महिलाओं की सुरक्षा से जुड़े कानूनों में महत्त्वपूर्ण बदलाव किये गये,
4) तलाकशुदा मुस्लिम महिलाओं के भरण पोषण के अधिकार से जुडा ऐतिहासिक मामला,
5) उत्तरप्रदेश के इम्राना कांड का बहुचर्चित मामला, जो महिलाओं के न्याय और अधिकारों पर व्यापक चर्चा करता है,
6) बचपन में हुए विवाह और बाद में हिंसा का सामना करने वाली महिला "फूलनदेवी", जो बाद में एक खतरनाक महिला डाकू बनी,

7) अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर एक और उदाहरण "नुजूद अली".

महिलाओं पर होने वाले अत्याचार मानवाधिकारों का उल्लंघन हैं और इनके विरुद्ध कठोर कार्रवाई अपेक्षित है। अगर हम ऐतिहासिक काल में भी देखें तो रानी पद्मावती का जौहर सब के मन को दुख दे गया। अपितु दूसरी ओर कल्याण प्रांत के सूबेदार की बहुरानी को शिवाजी महाराज ने बड़े सम्मानपूर्वक उनके प्रांत में विदा किया, उनके अपनों को सौंपा, वो रोचक कहानी तो सब को ही विदित है।

महिलाओं का सम्मान, सुरक्षा और सशक्तिकरण ही एक विकसित और सभ्य समाज की पहचान है। महिला सशक्तिकरण से ही समाज अधिक प्रगतिशील, न्यायपूर्ण और समृद्ध बनता है। देवताओं का वास भी वही होता है, जहाँ नारी का सम्मान होता है।

"यत्र नार्यस्तु पूज्यंते, रमंते तत्र देवता"

जाते जाते मेरी ही एक कविता की पंक्तियाँ उद्धृत करना चाहूंगी:

"अपने मन की सोच हमेशा जीवित रखना,
बदलती मानसिकता का जम के प्रचार करना।
तुम्हारी सराहना सबको भायेगी ही ऐसा नहीं,
तुम्हें सराहना पात्र ठहरायेंगे ही ऐसा नहीं।
लेकिन ध्येयप्रति बढना - आगे-आगे चलना मत भूलना।
सखी, तू खुद के पंख लहराना मत भूलना
सखी, तू खुद के पंख लहराना मत भूलना।

कविता

# एल आय सी के सत्तर साल

एल आय सी के सत्तर साल
चढ़ते गए सौ-सौ सोपान ।
बीमित हों सुरक्षा पाएँ
गढ़ते गए नित नए कीर्तिमान ।।

साल 1956 में हुआ गठन
एल आय सी का चमका सूरज ।
हम सबके लिए जीवन बीमा
रोशन उत्तर, दक्षिण, पश्चिम, पूरब।।

जरूर बोलिए, एल आय सी लीजिए
हर प्लान जैसे है सारा समाधान ।
एल आय सी है आपके अपने द्वार
बीमा से करें राष्ट्र-उत्थान ।।

जीवन लक्ष्य और जीवन आज़ाद
चुनें जीवन लाभ या नव जीवन आसान ।
जीवन शांति और सरल पेंशन
या लो चिल्ड्रेन मनी बैक प्लान ।।

यूलिप योजनाओं के क्या कहने
निवेश प्लस, प्रोटेक्शन प्लस प्लान।
अपनाएँ इंडेक्स प्लस और पेंशन प्लस
करते जाते जीवन में महती योगदान ।।

जीवन साथी, जीवन उत्सव
जरूरत का भावी निदान।
एक नहीं, अनेक योजनाएँ
सुखमय जीवन का सामान।।

जन-जन बीमा लक्ष्य हमारा
आश्रितों का समुचित ध्यान ।
छोटी प्रीमियम, बड़ी सुरक्षा
एल आय सी से समाज कल्याण।।

इकोनोमी को संभालता यह
ऊंची उठती जाती अपनी शान ।
देश-विदेश में फहरे तिरंगा
अपनी धरती, अपना आसमान ।।

हर हालात अनुकूल बन जाए
चाहे नया परिवेश, नया विधान।
जुड़ते जाते रोज़ नए आयाम
नया नजरिया और नई उड़ान ।।

जीवन के साथ भी, जीवन के बाद भी
आइये, समझें इसका मतलब महान।
लाइफ इन्शुरेंस माने बस एल आई सी
घर-घर है एल आय सी की पहचान।।

**संजीव शेखर**
प्र.अ. (विधि),
पूर्व मध्य क्षेत्रीय कार्यालय, पटना

# पंढरपुर की एक दिवसीय वारी - एक अविस्मरणीय अनुभव

**माधुरी बाड**
उ.श्रे.स. (का.से./ वे.ब.यो.विभाग),
नगर शाखा क्र. 3, बेलगांवी

सचमुच मैं स्वयं को भाग्यशाली समझती हूँ कि मुझे आषाढ़ी एकादशी को पंढरपुर पहुँचने वाली वारी में एक दिन का पैदल प्रवास करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इस वारी की जानकारी मुझे मेरी बुआ की लड़की जो पुणे में रहती है, उससे मिली, जो वारी में पिछले साल शामिल हुई थी।

मैं भी अगले वर्ष उस वारी में सम्मिलित होना चाहती थी, अत: मैंने बहन से वारी की पूरी जानकारी ली और जब उसने बताया अगले साल अप्रैल महीने में तुम्हारा नाम 'माऊली' नामक वारी समूह में रजिस्टर कराना पड़ेगा और उसके बाद वे मुझे माऊली समूह के वॉट्सऍप ग्रुप में शामिल करेंगे। वहाँ से वारी की सही तिथि तथा पूरी जानकारी जून-जुलाई महीने में हमें मिलेगी। बस फिर क्या था, मैं इंतजार करती रही अप्रैल महीने का और अप्रैल महीने में मेरी बहन की सिफारिश से मेरा नाम 'माऊली' वॉट्सऍप समूह में दर्ज हो गया। अब इंतजार था वारी के दिन का। तब तक वॉट्सऍप ग्रुप में वारी की तिथि, कैसे वारी के आरंभ स्थान में पहुँचना होगा, क्या चीजें हमें अपने साथ लानी पडेंगी, इसकी पूरी जानकारी हमें दिन-प्रतिदिन 'माऊली समूह' में मिल रही थी।

मैं वारी के एक दिन पहले बेलगांव से पुणे गई। मेरी भाभी भी उस वारी में शामिल हुई थी। हम दोनों सुबह एक बजे उठकर करीब - करीब दो ढाई बजे हमारे घर से (चिंचवड) बस स्थानक पर पहुँचे जहाँ पहले से ही हमारी बस खड़ी थी। हम तुरंत उस बस में बैठ गए। बस के उस समूह के नेता ने हमारा स्वागत किया, परिचय लिया / दिया और 5-10 मिनट में बस निकल पड़ी सन सिटी पुणे की ओर, जहाँ हम जैसी और 8-9 बसें खडी थीं और बहुत से लोग बस से उतरकर नीचे खड़े थे और वारी के बारे में वार्तालाप कर रहे थे। मुझे मेरी बहन वहाँ मिली जो दूसरी बस से उस स्थान पर पहुँची थी। सब बसों पर नंबर और वारी की पताका / पोस्टर लगे हुए थे। अधिकतर लोगों ने श्वेत वस्त्र परिधान किए हुए थे। केसरी-फेटा, केसरी ओढणी, केसरी उपरणे भी कुछ लोगों ने पहने थे। वारी के कुछ छोटे सेवकों ने हमारे माथे पर वैष्णव तिलक लगाया, अब हम सच्चे वारकरी लग रहे थे। सब अपनी बस के सामने खड़े रहकर हाथ में वारी का झंडा लिए फोटो खिंचवा रहे थे, हमने भी फोटो खिंचवाई। बस 20-25 मिनट के अवकाश के बाद सारी 10 बसें अपने गंतव्य यानी वाल्हे के लिए निकल पड़ीं। बस में हमें नाश्ता, दोपहर के भोजन के दो पैकेट, एक बोतल साफ पानी तथा पेड़ के बीजों के दो गोले दिए गए, जो हमें रास्ते में खुली जगह पर फेंकने थे, ताकि वहाँ बारिश आने पर पेड़ उग आए। शायद 50-60 कि मी. का अंतर पार करके हमारी बसें सुबह 5-30 - 6:00 के करीब वाल्हे पहुँची। रिम-झिम बारिश शुरु थी। सबके छाते और रेनकोट बाहर निकल आए। वहाँ पर हमने करीब 1-2 घंटे पालखी का इंतजार किया। ठंड एवं बारिश में ठिठुरते हुए हमने करीब ही एक ठेले से गरमा-गरम चाय और बिस्कुट खाए, तब शरीर में थोड़ी गर्मी औए चुस्ती आई।

वहाँ उपस्थित दस बसों के सहयात्रियों ने विठोबा भगवान के भजन, अभंग गाना शुरु किया। मंजिरा, चिपळी के संग सब लोग उस अनूठे भजन कार्यक्रम में शामिल हुए। गोलाकार में सभी महिलाएं घूमते हुए ताली बजाकर पांडुरंग जय जय हरी, ज्ञानोबा माऊली, तुकाराम का गजर करते हुए, विठ्ठल - विठ्ठल रखुमाई का घोष करते हुए फुगड़ी खेल रही थीं,भजन गा रही थीं । एक भक्तिमय वातावरण की अनुभूति ने हमें रोमांचित कर दिया। पालकी के इंतजार के पल कैसे खतम हुए पता ही नहीं चला।

आलंदी से संत ज्ञानेश्वर महाराज की पालकी 5-6 दिन पहले से निकली हुई थी। आलंदी से पुणे, सासवड, जेजुरी करते हुए करीब-करीब 90 कि.मी. का अंतर पैदल चलते हुए विठ्ठल नाम का गजर करते हुए वह पालखी सुबह 7:30 बजे वाल्हे पहुँची। हमारी इंतजार की घड़ी खत्म हुई। हमने दूर से ही पालकी के दर्शन लिए और निकल पड़े पालकी के पीछे पैदल। हमारे साथ के दस बसों के सहयात्री भी संग थे। अपने थैले, छाते, रेनकोट, करताल लेकर सब वारी पर निकल पड़े।

वारी में सभी आयु के पुरुष, महिलाएं, बच्चे, बूढ़े, नौजवान विठ्ठल - विठ्ठल नाम लेकर पालकी के आगे-पिछे चल रहे थे। सभी गांवो, कसबों, शहरों से लोग छोटे-छोटे समूह में दिंडी बनाकर इस वारी में शामिल होते हैं । अमीर-गरीब, ऊँच-नीच, धर्म-जाति का भेदभाव भुलाकर सब एक ही विठ्ठल भगवान के रंग में रंग जाते हैं। आजकल तो युवा पीढ़ी, इंजीनिअर, डॉक्टर, आईटी क्षेत्र के युवा भी इसमें भारी संख्या में शामिल हुए दिखाई देते हैं। कुछ विदेशी भी भारत की इस अद्भुत विठोबा वारी में माथे पर वैष्णवी टीका लगाकर, धोती पहने, गले में तुलसी माला पहने हरी भजन गाते हुए नजर आते हैं।

महिलाएं अपने सिर पर तुलसी का बिरवा (जिसे वृंदावन कहते हैं) लिए भक्तिभाव से इस वारी में प्रयाण करती हैं। कुछ छोटे बच्चों को भगवान विठ्ठल, देवी रखुमाई, वारकरी के वेष में वेशांतर कर वारी में शामिल होते देख सचमुच में हर्ष और आश्चर्य होता है।

वारकरी परंपरा जिनके घर में है वे लोग वर्षों से दादा-परदादा काल से इस वारी में सम्मिलित होते हैं। कड़ी धूप, ठंड हो या जोरों की बारिश, हर वारकरी इसी उत्साह से, हर साल अपने अपने घर से, गांव से, छोटे समूह में या अकेले पैदल निकलकर इस वारी में सम्मिलित होता है। हमें अक्सर बेलगाम, खानापुर तथा आस-पास के गावों से वारी पर निकले इन वारकरियों का दर्शन आषाढ़ मास में होता है। इन वारकरियों की चलने की गति अत्यंत तेज होती है। कोई-कोई हाथ में एक लाठी लिए सर-सर बिजली की गति से आगे बढ़ते हैं, हम उन्हें देखते ही रह जाते हैं। उनकी चाल, उनकी सहनशक्ति, उनकी भक्ति, तेज सब अद्भुत होता है।

सुबह करीब 11-11:30 बजे हमारे सहयात्री नाश्ता करने के लिए एक धर्मशाला में रुके। हम सभी ने हमें दी गई पूरी, चटणी, दही और मुंगफली के लड्डू का नाश्ता किया, पानी पिया और थोड़े आराम के पश्चात फिर निकल पड़े वारी के साथ, विठ्ठल नाम लेते हुए। वारकरियों के उत्साह से हम सब भी इतने प्रभावित थे कि थोड़ी धूप, रिम-झिम बारिश या निरंतर 2-3 घंटे के पैदल चलने की थकान बिल्कुल भी हमारे तन-मन में नहीं दिख रही थी। कुछ वारकरियों से पता चला कि आगे चलकर एक जगह संत तुकाराम की पालकी, जो देहू (पुणे के समीप) से निकली है, इस संत ज्ञानेश्वर जी के पालकी से जुड जाती है। उसी तरह संत निवृत्तिनाथ, सोपानदेव, मुक्ताबाई, एकनाथ, जनाबाई आदि संतों की पालकियाँ एक-एक करके मुख्य पालकी से जुड जाती हैं। यह जनसागर, जनसंगम जिनमें 15 से 20 लाख यात्री शामिल होकर इसके स्वरूप को विशालकाय बना देते हैं। 400 तक दिंडीयाँ / छोटे समूह इस वारी में शामिल होते हैं ।

इन वारीयों का भी दिनक्रम सुबह की काकड़ आरती से प्रारंभ होकर, पालकी पूजा, हरिपाठ, नामस्मरण से आगे बढता है। अभंग, करताल, मंजीरा, मृदंग की आवाज, फुगड़ी खेलते पुरुष और महिलाएं, कीर्तन, प्रवचन और भजन से भक्ति रस धारा निरंतर बहती रहती है। वारी की एक घटना अर्थात रिंगण जहाँ पर पालकी का एक सुडौल अश्व एक पूर्व निर्धारित जगह पर सीधे या गोलाकार रूप में दौड़ता है और सब लोग अत्यंत भक्ति-भाव से इस अनुपम दृश्य को देखते हुए उस जगह की पवित्र माटी को अपने मस्तक पर लगाकर धन्य होते हैं। यह पल, यह क्षण बहुत ही भावपूर्ण और भक्तिमय होता है।

वारी में आगे बढ़ते हुए कब दोपहर के 1:30 -2:00 बज गए, हमें पता ही नहीं चला। अब पेट में चूहे दौडने लगे थे, अत: हम सबने एक पेड़ की छांव में बैठने का निश्चय किया। बारिश थोड़ी थम सी गई थी, इसलिए हमने हमारे माऊली समूह द्वारा दिए गए दूसरे पैकेट को खोलकर चपाती-सब्जी, दही और चटणी का नाश्ता किया, पानी पीकर वही पेड़ की छांव में थोड़ा सुस्ताने की सोची। एक घंटे के आराम के पश्चात हम फिर तरो-ताजा महसूस कर रहे थे। शायद निरंतर 3-4 घंटे पैदल चलने की आदत हमें नहीं थी, पर आस-पास का वातावरण, वारकरियों के उत्साह, हरिनाम का संकीर्तन और चारों तरफ बहती भक्तिरस की धारा ने हमें भी उत्साहित और प्रफुल्लित कर दिया था।

रास्ते में अनेक जगह उस गांव के लोग जहाँ से वारी, पालकी गुजर रही थी, लोगों में लड्डू, केले आदि का प्रसाद बांट रहे थे। कहीं पर मुफ्त भोजन का आयोजन किया गया था। कुछ समूह पानी की बोतलें वारकरियों को थमा रहे थे। सबसे विहंगम मुझे दो दृश्य लगे, जहाँ कुछ युवा लड़के तथा लड़कियाँ हाथ में दर्द निवारक तेल, स्प्रे आदि लेकर वारकरियों के पैर दबा रहे थे। 2-3 डॉक्टर तथा नर्सों की टीम वारकरियों के स्वास्थ्य की पूछ-ताछ कर उन्हें आवश्यक गोलियां, दवाईयां दे रही थी। सचमुच, इस समाज सेवा से मेरा दिल बाग-बाग हो गया। मुझे वारी में शामिल, इन स्वयंसेवकों पर गर्व महसूस हो रहा था, जो अन्नदान, पीने का पानी, चिकित्सकीय सेवा, औषधि और रहने की भी व्यवस्था आदि का इंतजाम कर हर तरह इन वारकरियों की सेवा कर रहे थे। यह सिर्फ एक धार्मिक यात्रा न रहकर सामाजिक उत्सव का जीवंत उदाहरण बन गया था।

सचमुच पंढरपूर की यह एक दिवसीय वारी अपने आप में एक अजूबा है। इस वर्ष इस वारी में 20 लाख से अधिक यात्रियोंने शामिल होकर गिनिज बुक ऑफ वर्ल्ड रेकॉर्ड बनाया है। हम पांडुरंग जय -जय हरी का जाप करते हुए शाम को करीब 8:00 बजे अपने गंतव्य स्थान लोणंद पहुँचे, जहाँ पर पालकी तथा वारकरी उस रात का ठहराव कर दूसरे दिन सुबह आगे निकलते हैं। वहाँ पर हमें चाय और भेल का हल्का-फुल्का नाश्ता माऊली समूह ने दिया और वारी में उपस्थित सबसे वरिष्ठ आयुवाले तथा सबसे छोटे उम्र के बाल वारकरियों का सत्कार किया। कुछ लोगों ने भाषण किए और फिर हम हमारे घर (चिंचवड) की ओर बस में निकल पड़े।

वारी में यात्रियों के अनुशासन, भक्ति, एक दूसरे के प्रति प्रेम-भाव एवं आदर को देखकर मन भाव-विभोर हो गया। बिना ऊँच-नीच, स्त्री-पुरुष, अमीर-गरीब, जातिभेद किए सभी वारकरी एक होकर अपने ध्येय विठ्ठल का आषाढी एकादशी को दर्शन, पंढरपूर पहुँचने की लालसा यह एक मात्र ध्येय लिए रात-दिन, अंधेरा-उजाला, गर्मी-सर्दी बरसात की परवाह किए बिना विठ्ठल नाम का गजर करते हुए आगे निरंतर बढ़ते हैं। वारी का यह विहंगम दृश्य, भक्तिमय वातावरण हमेशा मेरे मानस पटल पर अंकित रहेगा। हर साल मैं इस वारी का आतुरता से इंतजार करूँ, विठ्ठल भगवान का अपने दर्शन का बुलावा मेरे मन में मिले और मैं इस भक्ति के अथांग सागर में पुन:पुन: डुबकी लगाऊँ - यही मेरी पांडुरंग के चरणों, में विनती है।

। जय जय पांडुरंग हरी ।

# हिंदी दिवस -2025

श्री आर. दुरैस्वामि, सी.ई.ओ. एवं प्रबंध निदेशक

दीप प्रज्वलन

राजभाषा पत्रिका 'सद्भावना' 2025 का विमोचन

मंचासीन माननीय वरिष्ठ अधिकारी गण

हिन्दी दिवस सम्मेलन समारोह में उपस्थित अधिकारी एवं कर्मचारी

# केंद्रीय कार्यालय को प्राप्त पुरस्कार -2025-26

भारत सरकार/ Government of India
वित्त मंत्रालय/ Ministry of Finance
वित्तीय सेवाएं विभाग/ Department of Financial Services

प्रशस्ति पत्र
Commendation Certificate

This Certificate of Commendation is hereby proudly presented to "Life Insurance Corporation of India" for securing the "First" position in the Insurance Company's Category, in recognition of the effective implementation of the Official Language Policy and outstanding performance in the field of Official Language during the Financial Year 2025-26.

श्री चन्द्रदीप कुमार झा/ Shri Chandradeep Kumar Jha
सांख्यिकीय सलाहकार / Statistical Advisor

उदयपुर/ Udaipur
दिनांक/Dated: 10-04-2026

भारत सरकार, वित्त मंत्रालय, द्वारा निगम को राजभाषा कार्यान्वयन हेतु प्रथम पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया।

आशीर्वाद साहित्यिक संस्था द्वारा 24.02.2026 को भारतीय जीवन बीमा निगम को राजभाषा में उत्कृष्ट कार्य हेतु 33वां आशीर्वाद भाषा- सेतु पुरस्कार 2025 प्रदान किया गया ।

# राजभाषा पुरस्कार वर्ष 2025

# संसदीय राजभाषा समिति द्वारा निरीक्षण एवं समन्वय कार्य

संसदीय राजभाषा समिति द्वारा निरीक्षण एवं निगम द्वारा समन्वय कार्य का संचालन दिनांक 09.09.2026 से 12.09.2026, हैदराबाद

संसदीय राजभाषा समिति द्वारा हैदराबाद मण्डल कार्यालय का दिनांक 11.09.2026 को राजभाषा निरीक्षण किया गया।
इस अवसर पर उपस्थित माननीय सांसद तथा निगम के वरिष्ठ अधिकारीगण।

संसदीय राजभाषा समिति द्वारा करीमनगर मण्डल कार्यालय का दिनांक 11.09.2026 को राजभाषा निरीक्षण किया गया।
इस अवसर पर उपस्थित माननीय सांसद तथा निगम के वरिष्ठ अधिकारीगण।

# जुहू समुद्र तट - प्रकृति का वरदान

**अनुपमा तांबे**
प्र.अ., सूचना प्रौद्योगिकी,
केंद्रीय कार्यालय

कोई दस-बारह दिन पहले की बात है। जुलाई महीने के पहले सप्ताह में हुई मूसलाधार बारिश के बाद मुंबई की एक खबर से सभी लोगो के दिलों में एक अजीब-सा डर ज़रूर पैदा हुआ होगा। मुंबई के जुहू तट पर कचरे के अंबार का रीलनुमा दृश्य देख कर मन बहुत ही दुखी हुआ, मनुष्य के लालच और प्रकृति की अवहेलना से मन दुखी हो गया। जुहू तट का वह दृश्य हमें यही याद दिलाता है कि प्रकृति अपने पास कोई भी चीज़ संभाल कर नहीं रखती और सही वक्त पर सूद समेत वापस लौटाती है, फिर चाहे वो नेकी हो या फिर कोई बुराई। इन वीडियो और न्यूज़ से मुझे बरबस अपने मुंबई के सबसे लोकप्रिय जुहू चौपाटी के बारे में कुछ ज्यादा जानकारी हासिल करने की जिज्ञासा जाग उठी।

बचपन में हम लोग पापा के साथ जुहू तट पर घूमने जाते थे, हमारी इतवार की छुट्टी का ये सबसे बड़ा आकर्षण का केंद्र था। जुहू-चौपाटी पर मिलने वाली भेल, नारियल पानी और घोडा-गाड़ी या ऊंट की सवारी हम बच्चों के सब से पसंदीदा खेल थे। तब हमें कहाँ पता था कि ये समुद्र की रेत, पानी, हवा उन जानवरों की सेहत के लिए अच्छी नहीं है। हमारे मनोरंजन और कुछ लोगों के धनार्जन की लालसा की कीमत ये बेजुबान जानवर अपनी जान जोखिम में डालकर चुका रहे हैं।

जुहू तट अथवा जूहू बीच का इतिहास भी कुछ कम रोचक नहीं है। 19 वीं शताब्दी में जुहू मुख्य भूमि से अलग एक छोटा-सा द्वीप हुआ करता था, तब इसे जुवेम (Juvem) कहते थे। पोर्तुगाली में जिसका मतलब Youth होता है। शुरुआती दिनों में यहां पर कोली समुदाय (मछुआरे) के लोग रहा करते थे, जो अपनी उपजीविका के लिए मछलियाँ पकड़ा करते थे। इस द्वीप को मुंबई की जमीन से जुड़ते-जुड़ते वर्ष 1846 आ गया। इस नेक काम को जिसने पूरा किया उनका नाम है "श्री जमशेदजी जिजिभाई"। जिन्होंने एक पुल का निर्माण करके आज के जुहू-बीच द्वीप को मुंबई शहर की जमीन के साथ हमेशा के लिए जोड़ दिया। यहाँ पर टाटा फैमिली ने जमीन खरीद कर पहला बंगला बनाया और आज का किस्सा तो सबको पता है। अपनी हिन्दी फिल्म सृष्टि की कई हस्तियाँ यहां पर रहने में अलग ही गर्व महसूस करती हैं।

आमची मुंबई में जुहू बीच की महत्ता देश में और बढ़ने का कारण एक और हैं जुहू का विमान क्षेत्र (हवाई अड्डा)। अक्टूबर 1932 में सर जे.आर.डी. टाटा ने कराची से पहली उड़ान भर कर अपना विमान जुहू के मैदान पर सफलता पूर्वक उतारा था। इसके पहले 1928 में यहां पर देश का पहला नागरिक विमानन अड्डा (जुहू एरोड्रम) स्थापित किया गया।

भारत देश का स्वतंत्रता संग्राम भी जुहू चौपाटी ने थोड़ा करीब से देखा है- अहिंसापूर्ण सत्याग्रही महात्मा गांधी जी जब कभी मुंबई आते थे, तब आध्यात्मिक शांति और सुकून पाने के लिए जुहू जाते थे और थोड़ी सैर भी किया करते थे। देश के कई स्वतन्त्रता सेनानियों के चिंतन, मनन, चर्चा और गुप्त मुलाकातों का भी मुंबई का यह जुहू तट गवाह है।

अब चलते हैं इतने सारे प्लास्टिक या अन्य तरह के कचरे के जमा होने के कारणों की खोज में। तो इस बारे में खोज करने के बाद पता चला कि देश की कई सारी नदियां अरब या हिन्द महासागर में मिलती हैं। ये नदियां अपने साथ पानी मिट्टी के साथ शहरों और कारखानों का कचरा भी सीधे समुद्र में लाती हैं। आज कल की आधुनिक जीवन शैली के कारण लोग बोतलबंद पानी पीना ज्यादा पसंद करते हैं। ना कोई ज़िम्मेदारी ना संभालने का जोखिम और बाज़ार में बहुत ही आसानी से मिलने वाली चीज आज पानी बन गया

है। किन्तु सूर्य और चंद्रमा के गुरुत्वाकर्षण के कारण बारिश के मौसम में ज्वार भाटा आने पर समुद्र में बड़ी बड़ी लहेरें उठती हैं और भाटा आने पर लहरें वापस लौटते हुए ये सारा कचरा हमें गिफ्ट कर देती हैं। इसको रोकने के उपाय भी हैं, सिर्फ अच्छे मन से प्रयास करने की जरूरत है।

1) प्लास्टिक का कम उपयोग करना एवं रीसाइकल होने वाले प्लास्टिक का निर्माण करना, समुद्र में सीधे कोई कारखानों का वेस्ट, विषैला पानी ना जाने देना।

2) समुद्र के किनारे कोई बड़े इवैंट ना करना, उसकी साफ सफाई और देख रेख करना। लाइफ गार्ड और कई संस्थाओं की मदद से यह किया जा सकता है।

3) समुद्री जीवों एवं मछलियों की सुरक्षा के लिए समुद्र शैवाल को क्षति हो ऐसे केमिकल्स को समुद्र में जाने से रोकना होगा। नहीं तो ऐसा करने वाले कारखानों पर ज्यादा पेनल्टी लगाना।

भारत के प्लास्टिक मैन श्री राजगोपाल वसुदेवन के बारे में बताना चाहूंगी जिन्होंने अपने अथक प्रयासों से प्लास्टिक के कचरे से मजबूत और टिकाऊ सड़कें बनाने की अलग ही तकनीक खोज निकाली है। जिससे पर्यावरण की रक्षा होती है और सड़कें भी मजबूत बनती हैं। इसे अगर व्यापक पैमाने पर अपनाया जाए, तो सीमेंट और कोंकरीट के कारण होने वाले वायू प्रदूषण को कंट्रोल कर सकते हैं; सिर्फ थोड़े-से सहयोग और लगन की जरूरत है।

हमारा जुहू बीच बच्चें, महिलाएँ, वृद्ध या फिर युवाओं को बहुत ज्यादा अपने और आकर्षित कर रहा है। समुद्र की रेत पर की गई वॉक, समुद्र के पानी की आश्वस्त करने वाली आवाज हमें बताती है कि हमें सुकून और शांति के लिए सब कुछ छोड़ने को तैयार रहना चाहिए। भगवान का शुक्र और मुंबा देवी के आशीर्वाद के कारण ही जुहू बीच पर कभी बड़ा हादसा नहीं हुआ। यह जरूर हुआ कि दो-चार नावें और समुद्री जहाज बह कर किनारे आकर फँस गए, पर मुंबई के नाविकों की टीम ने अपने हौसले से उन्हें बाहर निकाल लिया और कभी कोई ऑइल गिर जाता है तो उसको भी रोकने का काम करती है। मुंबई की नमकीन हवा, आर्द्रता और इसकी वायु को शुद्ध रखने का काम भी जुहू-बीच हमारे लिए करता है।

मुंबई के लिए तो समुद्र एक सक्षम रक्षक की भांति हैं जो कई सारे समुद्री तूफानों से हमें बचाता आया है, अतः इसकी अच्छी तरह से देखभाल करना भी हम सब जिम्मेदार नागरिकों का कर्तव्य है। और इसी ज़िम्मेदारी का वहन करने के बाद प्रकृति हम सभी को सही मायने में शान्ति, सुकून प्रदान करती है और निरंतर प्रयास कर अपने लक्ष्य को पाने के लिए प्रोत्साहित करती है, जो सच में हम मानवों को दिया हुआ एक अनन्य साधारण वरदान है।

अंततः रोबर्ट वायलंड के शब्दों में "समुद्र दिल को झकझोरता है, कल्पना को प्रेरणा देता है और अपनी आत्मा को उच्च कोटी का आनंद प्रदान करता है "।

# 'परम पूज्य' मुफ्तराम

**सुविधा विवेक शहाने**
स.प्र.अ. (ई.डी.एम.एस. विभाग),
मुंबई मण्डल-2

हमारे सोसाइटी के शर्मा जी का एक ही मूलमंत्र था... 'सलाह हमेशा मुफ्त दो, और दवा हमेशा दूसरों के पैसों से खाओ'। लोग उन्हें प्यार से 'मुफ्तराम' कहते थे। शर्मा जी के पास दुनिया की हर बीमारी का अचूक इलाज था, भले ही उन्होंने विज्ञान की किताब आखिरी बार पांचवीं कक्षा में चूहे से बचाने के लिए अलमारी में छुपाई हो। उनके अनुसार, अगर किसी के सिर में दर्द है, तो गलती सिर की नहीं, बल्कि उस चाय की है जो उसने सुबह पी थी।

एक दिन शर्मा जी को अचानक लगा कि उनके दाहिने पैर के अँगूठे में कुछ अजीब सी सनसनाहट हो रही है। अब जो इंसान पूरी दुनिया को डॉक्टर समझकर दवाइयाँ बाँटता था, वह खुद डॉक्टर के पास कैसे जाता? अपनी मर्दानगी और 'वैद्यराज' वाली छवि को बचाने के लिए उन्होंने खुद ही अपना इलाज करने की ठानी।

उन्होंने सबसे पहले अपने सबसे परम मित्र, यानी गूगल देवता को याद किया। गूगल पर उन्होंने टाइप किया- 'दाहिने पैर के अँगूठे में सनसनाहट का क्या मतलब है?' गूगल ने दो सेकंड में जो जवाब दिया, उसे पढ़कर शर्मा जी के माथे पर पसीना आ गया। गूगल के अनुसार, यह सनसनाहट या तो किसी दुर्लभ अफ्रीकी मक्खी के काटने से हुई थी, और अगले पैंतालीस मिनट में उनका पूरा पैर गन्ने की तरह सूखने वाला था।

शर्मा जी घबराकर घर से बाहर भागे। रास्ते में उन्हें वर्मा जी मिल गए। वर्मा जी मोहल्ले के घोषित 'नब्ज-विशेषज्ञ' थे, जिन्होंने आज तक सिर्फ अपनी पत्नी की नब्ज तब टटोली थी, जब वे उनसे शॉपिंग के लिए पैसे मांग रही थी।

शर्मा जी को लंगड़ाते देख वर्मा जी ने अपनी आँखें सिकोड़ीं और बोले, "शर्मा भाई, चाल में वो कशिश नहीं रही। क्या मामला है?"

शर्मा जी ने कांपते होठों से कहा, "अरे क्या बताएं वर्मा जी, अँगूठे में सुबह से कोई भूत नाच रहा है। सनसनाहट हो रही है।"

वर्मा जी ने तुरंत अपना चश्मा नाक पर टिकाया और एक लंबी सांस लेकर बोले, "अरे! यह तो सरासर 'वायु-विकार' है। तुम रात को गोभी खाकर सोए होगे। इसका एक ही शर्तिया इलाज है। नीम की सात पत्तियां लो, उन्हें कड़वे तेल में उबालो और उसमें थोड़ा सा अदरक का रस मिलाकर पैर पर रगड़ो। फिर देखो, अँगूठा ऐसा भागेगा कि तुम पीटी ऊषा को पीछे छोड़ दोगे।"

शर्मा जी घर आए। उन्होंने पत्नी से कहा कि नीम की पत्तियां लाओ। पत्नी ने एक नजर शर्मा जी पर डाली, जो सोफे पर ऐसे लेटे थे जैसे जंग से लौटे घायल सैनिक हों। पत्नी ने तंज कसा, "नीम की पत्तियां तो ठीक हैं, लेकिन पहले चप्पल से वो बबूल का कांटा तो निकाल लो, जो सुबह से तुम्हारे अँगूठे में चुभा हुआ है!"

शर्मा जी ने पैर देखा। सचमुच, एक छोटा सा कांटा अँगूठे के किनारे फंसा हुआ था। कांटा निकलते ही सनसनाहट गायब हो गई। लेकिन व्यंग्य की पराकाष्ठा तो इसके बाद शुरू हुई। शर्मा जी को लगा कि अगर उन्होंने यह सच मोहल्ले को बता दिया, तो उनकी साख मिट्टी में मिल जाएगी। लोग कहेंगे कि 'ज्ञान के महासागर' शर्मा जी एक कांटे से डर गए!

अगले दिन शर्मा जी पूरे पैर पर सफेद पट्टी बांधकर, हाथ में लाठी लेकर बाहर निकले। मोहल्ले की नुक्कड़ पर जैसे ही वे पहुंचे, 'मुफ्त सलाहकारों' की पूरी फौज इकट्ठा हो गई।

मिश्रा जी ने देखते ही कहा, "शर्मा जी, ये क्या हाल बना रखा है? डॉक्टर के पास मत जाना भाई, ये एलोपैथी वाले सीधे ऑपरेशन की बात करते हैं। तुम ऐसा करो, रोज सुबह खाली पेट लौकी का जूस पियो। चाहे पैर टूटा हो या दिल, लौकी सब जोड़ देती है।"

तभी वहां गुप्ता जी आ गए, जो खुद को ऋषि - मुनि का साक्षात् अवतार समझते थे। उन्होंने मिश्रा जी को डांटते हुए कहा, "धत्त तेरे की! लौकी का जूस इस ठंडे मौसम में? शर्मा जी का पैर हमेशा के

लिए सुन्न करना है क्या? शर्मा जी, आप मेरी सुनो। आधी रात को जब चांद पूरा गोल हो, तब छत पर जाकर पैर को पूर्व दिशा में रखकर बैठ जाओ। सारी नकारात्मक ऊर्जा आसमान सोख लेगा।"

शर्मा जी मन ही मन हंस रहे थे और सोच रहे थे कि एक छोटे से कांटे ने पूरे मोहल्ले के भीतर के 'छुपे हुए डॉक्टरों' को बाहर निकाल दिया है। उन्होंने अपनी लाठी को थोड़ा और मजबूती से पकड़ा और गंभीर आवाज में बोले, "मित्रों, आप सबकी सलाह सिर माथे पर। दरअसल, डॉक्टर ने कहा है कि यह कोई मामूली मोच नहीं है। यह 'लिगामेंट का कॉस्मिक डिसबैलेंस' है।"

यह भारी-भरकम अंग्रेजी शब्द सुनकर पूरा मोहल्ला शांत हो गया। किसी को समझ नहीं आया कि इसका मतलब क्या है, लेकिन हार न मानते हुए मिश्रा जी बोले, "हाँ, मैं भी यही कहने वाला था। ये लिगामेंट का लफड़ा बहुत खराब होता है।"

व्यंग्य इस बात का है कि हमारे समाज में कोई यह स्वीकार नहीं करना चाहता कि उसे कुछ नहीं पता। हर व्यक्ति हर विषय का विशेषज्ञ है। राजनीति से लेकर रॉकेट साइंस तक, और जुकाम से लेकर कैंसर तक, हर मोड़ पर आपको एक 'परम पूज्य मुफ्तराम' मिल ही जाएगा।

शर्मा जी एक हफ्ते तक पट्टी बांधकर घूमते रहे, मुफ़्त के फल और सांत्वना बटोरते रहे। एक दिन जब वे अपनी पट्टी खोलकर आराम से चाय पी रहे थे, तभी टीवी पर एक विज्ञापन आया, जिसमें डॉक्टर कह रहा था - 'बिना सलाह के कोई भी दवा न लें'

शर्मा जी ने चाय की चुस्की ली, टीवी की तरफ देखा और मुस्कुराकर बोले, "अरे, इस टीवी वाले को कुछ नहीं पता। इसे कहो, मुझसे आकर मिले। टीवी के स्क्रीन की खराबी का इलाज मेरे पास है.....।

कविता

# मेरे दो गोविंद

एक लक्ष्य जीने का,
दूसरा कारण जीने का,
मेरे दो गोविंद

एक के लिए मैं सदा साध्य,
दूसरे की कृपा हो, तो वे साध्य,
मेरे दो गोविंद

सच्चे सगे केवल पिता-माता,
उनके बाद,
मेरे दो गोविंद

एक जीने को बाध्य करे,
दूसरा जीवन को साध्य करे,
मेरे दो गोविंद

एक के कष्ट हरने को मैं तत्पर,
दूसरा मेरे कष्ट हरने को तत्पर,
मेरे दो गोविंद

अपने कर्तव्यपथ पर,
न हारने को मैं व्याकुल,
मेरी हार के बाद भी मुझे
गले लगाने को व्याकुल,
मेरे दो गोविंद

विजय का साथ तो सब देते,
तृष्णा के पीछे तो सब पड़ते,
मेरी पराजय में भी मुझे थामते,
मेरे दो गोविंद

दूसरे गोविंद से ये प्रार्थना
कि पहले गोविंद का साथ देना,
सदा - सर्वदा,
क्योंकि वो मेरा गोविंद,
और...

आप तो सबके गोविंद
जीवन अकल्पनीय आपके बिना,
जीवन संघर्ष आपके बिना,
मेरे गोविंद को तार देना,
हे मेरे प्रभु गोविंद

**एन. आर. श्रीधर 'अविनाश'**
उ.श्रे.स., नगर शाखा 2 (264),
आगरा

# योगक्षेमं वहाम्यहम् से जेन बीटा तक: विश्वास की अनंत यात्रा

**हेमन्त भाटी**
प्र.अ.(का. एवं औ.संबंध विभाग),
मण्डल कार्यालय, उदयपुर

"तकनीक भविष्य का निर्माण करती है,
पर विश्वास भविष्य को सुरक्षित करता है।"

श्रीमद्भगवद्गीता का अमर वचन "योगक्षेमं वहाम्यहम्" केवल आध्यात्मिक संदेश नहीं, बल्कि जीवन की सुरक्षा और उत्तरदायित्व का शाश्वत दर्शन है। योग अर्थात आवश्यकताओं की पूर्ति और क्षेम अर्थात् प्राप्त उपलब्धियों की रक्षा। यही दर्शन भारतीय जीवन बीमा निगम (एलआईसी) की आत्मा है। पिछले लगभग सात दशकों से एलआईसी केवल बीमा का व्यवसाय नहीं कर रहा, बल्कि करोड़ों भारतीय परिवारों के विश्वास, सुरक्षा और भविष्य का संरक्षक बनकर राष्ट्र निर्माण में अपनी भूमिका निभा रहा है।

आज भारत एक नए युग के द्वार पर खड़ा है। कृत्रिम-बुद्धिमत्ता (AI), डिजिटल अर्थव्यवस्था और तीव्र तकनीकी परिवर्तन के बीच जन्म लेने वाली जेन बीटा भारत की पहली कृत्रिम-बुद्धिमत्ता आधारित (AI Native) पीढ़ी होगी। यह पीढ़ी तकनीक के साथ बड़ी होगी, त्वरित निर्णय लेगी और हर सेवा में सरलता, पारदर्शिता तथा व्यक्तिगत अनुभव की अपेक्षा करेगी। स्वाभाविक है कि उसकी बीमा संबंधी सोच भी आज की पीढ़ियों से भिन्न होगी।

जेन बीटा के लिए बीमा केवल एक पॉलिसी नहीं, बल्कि जीवन के हर चरण में साथ देने वाला स्मार्ट सुरक्षा तंत्र होगा। वह ऐसी सेवाएँ चाहेगी जो मोबाइल पर उपलब्ध हों, कुछ ही मिनटों में खरीदी जा सकें, कृत्रिम-बुद्धिमत्ता के माध्यम से उसकी आवश्यकताओं के अनुरूप हों तथा दावा निपटान में गति और पारदर्शिता सुनिश्चित करें। भविष्य का ग्राहक सुविधा खरीदेगा, परंतु अपना विश्वास उसी संस्था को देगा जिसकी विश्वसनीयता समय की कसौटी पर सिद्ध हो चुकी हो।

यहीं भारतीय जीवन बीमा निगम की सबसे बड़ी शक्ति निहित है!

एलआईसी ने सात दशकों में करोड़ों परिवारों के सुख-दु:ख का साथी बनकर यह सिद्ध किया है कि विश्वास किसी तकनीक से नहीं, बल्कि निरंतर उत्तरदायित्व निभाने से अर्जित होता है। देश के दूरस्थ गाँवों से लेकर महानगरों तक इसकी पहुँच, विशाल अभिकर्ता नेटवर्क, समय पर दावा भुगतान तथा सेवा के प्रति प्रतिबद्धता ने इसे भारतीय जनमानस का विश्वसनीय संस्थान बनाया है। यही विरासत जेन बीटा के साथ एलआईसी का सबसे बड़ा परिचय होगी।

निस्संदेह भविष्य केवल विरासत के सहारे नहीं जीता जा सकता।बदलते समय के साथ एलआईसी को भी कृत्रिम-बुद्धिमत्ता आधारित ग्राहक सेवा, डेटा विश्लेषण, डिजिटल ऑनबोर्डिंग, साइबर सुरक्षा, व्यक्तिगत वित्तीय परामर्श तथा नवीन बीमा समाधानों को और अधिक सशक्त बनाना होगा। किंतु यह परिवर्तन केवल तकनीक का नहीं, बल्कि विश्वास को नई पीढ़ी की भाषा में व्यक्त करने का होगा।

आने वाले समय में बीमा का स्वरूप भी व्यापक होगा। जीवन सुरक्षा के साथ स्वास्थ्य, दीर्घायु, मानसिक स्वास्थ्य, साइबर जोखिम, जलवायु परिवर्तन और वित्तीय स्वतंत्रता जैसे विषय भी बीमा का अभिन्न अंग बनेंगे। जेन बीटा ऐसी संस्था को चुनेगी जो केवल जोखिम का प्रबंधन न करे, बल्कि जीवन के प्रत्येक पड़ाव पर मार्गदर्शक बनकर साथ चले। एलआईसी के पास अनुभव, विशेषज्ञता और सामाजिक उत्तरदायित्व - तीनों का अद्वितीय संगम है।

भारतीय जीवन बीमा निगम की एक और विशेषता उसे विशिष्ट बनाती है। यह केवल एक वित्तीय संस्था नहीं, बल्कि राष्ट्र की विकास यात्रा का सहभागी है। देश की आधारभूत संरचना, आर्थिक प्रगति और सामाजिक सुरक्षा में इसका योगदान यह दर्शाता है कि एलआईसी का उद्देश्य लाभ के साथ-साथ राष्ट्रहित भी है। यही मूल्य आने वाली पीढ़ियों को भी उससे जोड़ेंगे, क्योंकि जेन बीटा केवल उत्पाद नहीं, उद्देश्य से जुड़ना चाहेगी।

आज आवश्यकता इस बात की है कि वित्तीय साक्षरता को बचपन से ही जीवन का संस्कार बनाया जाए। यदि नई पीढ़ी बचत, निवेश और बीमा का महत्व समय रहते समझेगी, तो वह अधिक आत्मनिर्भर और उत्तरदायी नागरिक बनेगी। इस दिशा में एलआईसी की भूमिका भविष्य में और अधिक महत्वपूर्ण होने वाली है।

अंतत: जेन बीटा की बीमा पसंद का निर्णय केवल तकनीक से नहीं होगा। उसका अंतिम आधार होगा - विश्वास, पारदर्शिता, संवेदनशीलता और दीर्घकालिक सुरक्षा। ये चारों मूल्य भारतीय जीवन बीमा निगम की पहचान रहे हैं और भविष्य में भी इसकी सबसे बड़ी शक्ति बने रहेंगे।

"योगक्षेमं वहाम्यहम्" केवल एलआईसी का ध्येय वाक्य नहीं, बल्कि करोड़ों भारतीय परिवारों से किया गय अटूट वचन है, जिसे इस संस्था ने दशकों से निभाया है। यही विश्वास की निरंतरता एलआईसी को जेन बीटा की भी पहली पसंद बनाएगी। क्योंकि बदलते समय में तकनीक का स्वरूप बदल सकता है, पर विश्वास का मूल्य कभी नहीं बदलता।

# कथक - एक साधना

**रुता रेडकर**
प्र.अ. (सूचना प्रौद्योगिकी विभाग),
केंद्रीय कार्यालय

वैदिक काल से ही नृत्यकला आध्यात्मिक उन्नति और मनोरंजन, दोनों का साधन रही है। जिन नृत्यों को नियम कायदों (शास्त्रों) में बाँधा गया, उन्हें "शास्त्रीय नृत्य" कहा जाने लगा। और जिन नृत्यों में शास्त्रीय नियम लागू नहीं हो सके, वे "लोकनृत्य" कहलाए। मेरे लिए कथक केवल एक शास्त्रीय नृत्य नहीं, बल्कि जीवन जीने की कला है।

भारतीय नृत्य कला की सबसे बड़ी खासियत यह है कि यह एक तरफ भावाश्रित (भावनाओं पर आधारित) है और दूसरी तरफ लयाश्रित (ताल-लय पर आधारित) है। हमारे देश में नृत्य को सिर्फ मनोरंजन का साधन नहीं माना जाता, बल्कि इसे भगवान की पूजा-आराधना समझा जाता है।

कथक उत्तर भारत का प्रसिद्ध शास्त्रीय नृत्य है। कथक का अर्थ है "कथा करे सो कथक कहावे", यानी जो कथा कहे, वही कथक कहलाए। नृत्य की शुरुआत वाल्मीकि मुनि से मानी जाती है, जिन्होंने सबसे पहले लव-कुश को रामायण-गान की शिक्षा दी थी। इसीलिए कथक करने वाले लोग "कुशीलव" कहे जाते थे।

माना जाता है कि प्राचीन काल में इन कथकों की नियुक्ति मंदिरों में होती थी, जहाँ वे संगीत और नृत्य के जरिए पौराणिक कथाएँ जनता के सामने प्रस्तुत करते थे। इन्हीं कथकों द्वारा किया जाने वाला नृत्य ही 'कथक नृत्य' है।

### कथक नृत्य की स्वतंत्रता

मेरे लिए कथक केवल एक कला नहीं, बल्कि जीवन का उत्सव, स्वास्थ्य का आधार और आत्मा की साधना है। कथक नृत्य जितना स्वतंत्र है, उतनी शायद ही कोई और नृत्य शैली हो। हर कथक नर्तक अपने अलग अंदाज़ में नृत्य शुरू करता है और अपनी पसंद के हिसाब से उसे सजाता है। कथक के नियमित रियाज़ ने मेरे भीतर अनुशासन, धैर्य, आत्मविश्वास और सकारात्मक सोच का विकास किया। जीवन की चुनौतियों का सामना करने की शक्ति मुझे कथक से ही मिली। आज मैं जो भी हूँ, उसमें कथक का बहुत बड़ा योगदान है। कथक ने मेरी एकाग्रता और मानसिक स्थिरता को भी अत्यधिक विकसित किया है। इसका लाभ मुझे केवल नृत्य में ही नहीं, बल्कि कैरम जैसे खेलों और अपने कार्यालयीन कार्यों में भी मिला। किसी भी कार्य को पूरी लगन, धैर्य और एकाग्रता से करने की क्षमता मुझे कथक की साधना से प्राप्त हुई है।

### कथक के तीन घराने

1. जयपुर घराना - 2. लखनऊ घराना 3. बनारस घराना

### भारतीय नृत्यों में घुंघरू की खासियत एवं महत्व

सभी भारतीय नृत्य शैलियों में कलाकार पैरों में घुंघरू बांधते हैं, तबला-पखावज से निकलने वाले हर एक बोल को कथक नर्तक अपने घुंघरुओं से बहुत सफाई से गूँजाते हैं। मेरे लिए कथक ही ध्यान (मेडिटेशन) है। जब मैं घुँघरू बाँधकर रियाज़ करती हूँ, तब मेरा मन स्वतः शांत, एकाग्र और आनंदमय हो जाता है। लय के हर रूप को पैरों की थाप (पदाघात) से प्रस्तुत किया जाता है, पैरों की यह ध्वनि घुंघरू ही पैदा करते हैं। कथक नृत्य शैली में इन पदाघातों का सबसे ज़्यादा महत्व है।

### कथक के दो प्रमुख भाग हैं:

1. **नृत्त पक्ष** - इसमें ठाट, आमद, बोल, तोड़े-टुकड़े, ततकार जैसी चीजें शामिल होती हैं। चक्कर (भ्रमरी) का प्रदर्शन। हर बोल के अंत की तिहाई अक्सर इन्हीं चक्करों से पूरी होती है।

2. **अभिनय पक्ष** - इसमें भाव-प्रदर्शन होता है। इसके अंतर्गत गत-निकास, गत-भाव और पदाभिनय प्रस्तुत किया जाता है। गत भाव में अकेला नर्तक अलग-अलग किरदार निभाते हुए एक पूरी कहानी सुनाता है। पदाभिनय में नर्तक/नर्तकी किसी ठुमरी, या भजन के बोलों को अपनी मुद्राओं और भावों से व्यक्त करते हैं।

**वेशभूषा (कपड़े) एवं वाद्य-यंत्र**

पुरुष नर्तक चूड़ीदार पैजामा, कुरता या अंगरखा पहनते हैं और कमर में दुपट्टा बांधते हैं। स्त्रियों की वेशभूषा के आजकल तीन रूप प्रचलित हैं साड़ी / लहंगा-चोली व दुपट्टा / मुगल अंदाज़ का चूड़ीदार पैजामा, जैकेट व दुपट्टा, गले, कान और हाथों में उचित गहने भी पहने जाते हैं।

कथक नृत्य में बजाए जाने वाले वाद्य बहुत सीमित होते हैं। इसमें तबला, पखावज और सारंगी का मुख्य स्थान है।

**मेरे जीवन में कथक : एक साधना, एक सकारात्मक परिवर्तन**

कथक का नियमित अभ्यास मेरे लिए संपूर्ण शारीरिक व्यायाम का कार्य करता है। इसलिए मुझे अलग से किसी अन्य शारीरिक गतिविधि की आवश्यकता महसूस नहीं होती। इस साधना ने मुझे शारीरिक रूप से स्वस्थ, स्फूर्तिवान और ऊर्जावान बनाए रखा है। यही कारण है कि मैं उच्च रक्तचाप (बी.पी.) और मधुमेह (डायबिटीज़) जैसे जीवनशैली से जुड़े रोगों से दूर हूँ। निरंतर अभ्यास का प्रभाव मेरे चेहरे की प्राकृतिक आभा, आत्मविश्वास और व्यक्तित्व पर भी स्पष्ट दिखाई देता है।

मेरा दृढ़ विश्वास है कि यदि प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में किसी न किसी कला को स्थान दे, तो उसका जीवन अधिक स्वस्थ, संतुलित और सकारात्मक बन सकता है। कथक ने मुझे केवल नृत्य नहीं सिखाया, बल्कि जीवन को सुंदरता, अनुशासन, संवेदनशीलता और आत्मिक आनंद के साथ जीना भी सिखाया है।

कविता

# आगाज़

ऐ निगम, ऐ निगम, हम ये खाते कसम
तेरी उन्नति का कारवां हम बढ़ा जाएंगे
लक्ष्य क्या चीज है, तेरे सदके में हम
प्रतिद्वन्दियों के छक्के छुड़ा जाएंगे
ऐ निगम, ऐ निगम...

तेरे लाभों की थाली में लाये हैं हम
प्लान हर लाभ के, प्लान सब काम के
सुरक्षा सबकी करें, है हमारा ये प्रण
वचन ग्राहकों से हम ये निभा जाएंगे
ऐ निगम, ऐ निगम...

भ्रष्ट मुक्त रहा है सदा हमारा निगम
योगक्षेम वहाम्यहं है हमारा मिशन
न होने दें कभी गबन लोकहित परमधर्म
लौ सभी के दिलों में, हम जला जाएंगे
ऐ निगम, ऐ निगम...

आओ लें हम ये प्रण, हम सभी बीमाजन
देश में रहे अमन, न होने दें कहीं दमन
लक्ष्य से होकर दक्ष, करके कार्य निष्पक्ष
विकासपथ हम सभी को दिखा जाएंगे....
ऐ निगम, ऐ निगम...

जीते हैं हम सदा, और जीतेंगे हम सदा
देश की शान है, ये अपना प्यारा निगम
फलक पे विश्व तिरंगा, हम लहरा जायेंगे। ....
ऐ निगम, ऐ निगम, हम ये खाते कसम
तेरी उन्नति का कारवां हम बढ़ा जाएंगे

**दुलीचन्द**
प्र.अ. (ग्राहक सेवा केन्द्र),
दिल्ली मण्डल कार्यालय - 2

# कोई काम छोटा नहीं होता और कोई भी काम करने वाला छोटा नहीं होता

**नयना उपाध्याय**
प्र.अ. (आई.पी.पी),
प.क्षे.का.

"कर्म ही पूजा है।" यह प्रसिद्ध उक्ति हमें सिखाती है कि किसी भी कार्य का सम्मान करना चाहिए। वास्तव में, "कोई काम छोटा नहीं होता और कोई भी काम करने वाला छोटा नहीं होता।" किसी व्यक्ति का सम्मान उसके काम से नहीं, बल्कि उसकी ईमानदारी, परिश्रम और निष्ठा से होता है। समाज की प्रगति हर वर्ग के लोगों के संयुक्त प्रयास से ही संभव होती है। किसी संस्थान की प्रगति उसके प्रत्येक कर्मचारी की निष्ठा में है।

महात्मा गांधी ने कहा था, "श्रम की गरिमा को समझे बिना कोई समाज महान नहीं बन सकता।" उनका मानना था कि हर व्यक्ति को श्रम का सम्मान करना चाहिए। उन्होंने स्वयं आश्रम में सफाई का कार्य करके यह संदेश दिया कि कोई भी काम छोटा नहीं होता। उन्होंने यह सिद्ध किया कि जो व्यक्ति अपने हाथों से काम करने में संकोच करता है, वह सच्चे अर्थों में आत्मनिर्भर नहीं बन सकता।

हमारे समाज में किसान, मजदूर, सफाई कर्मचारी, शिक्षक, डॉक्टर, सैनिक, इंजीनियर, चालक और डाकिया-सभी अपने-अपने कार्यों के माध्यम से समाज की सेवा करते हैं। यदि किसान खेतों में मेहनत न करे, तो हमें अन्न नहीं मिलेगा। यदि सफाई कर्मचारी अपना कार्य बंद कर दें, तो शहरों में गंदगी फैल जाएगी और अनेक बीमारियाँ जन्म लेंगी। यदि बिजली मिस्त्री, प्लंबर या चालक अपना काम न करें, तो हमारा दैनिक जीवन रुक जाएगा। इससे स्पष्ट है कि हर कार्य का अपना महत्व है।

एक प्रसिद्ध कहावत है- "मेहनत का फल मीठा होता है।" सफलता का रहस्य किसी बड़े पद में नहीं, बल्कि ईमानदारी से किए गए परिश्रम में छिपा होता है। इतिहास गवाह है कि अनेक महान व्यक्तियों ने छोटे कार्यों से शुरुआत की और अपनी मेहनत के बल पर सफलता के शिखर तक पहुँचे।

भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम इसका श्रेष्ठ उदाहरण हैं। साधारण परिवार में जन्म लेने वाले डॉ. कलाम बचपन में समाचार-पत्र बाँटते थे। कठिन परिश्रम, अनुशासन और शिक्षा के प्रति समर्पण ने उन्हें महान वैज्ञानिक और भारत का राष्ट्रपति बना दिया। उनका जीवन हमें सिखाता है कि कोई भी काम छोटा नहीं होता; छोटा होता है केवल हमारा दृष्टिकोण।

इसी प्रकार दशरथ मांझी ने अकेले अपने श्रम और दृढ़ संकल्प से पहाड़ काटकर रास्ता बना दिया। उनके पास न धन था, न आधुनिक साधन, लेकिन उनकी मेहनत और लगन ने असंभव को संभव कर दिखाया। उनका जीवन इस बात का प्रमाण है कि श्रम और संकल्प से बड़ी कोई शक्ति नहीं होती।

आज भी अनेक लोग किसी व्यक्ति का मूल्यांकन उसके पद, वेतन या व्यवसाय के आधार पर करते हैं। यह सोच बदलने की आवश्यकता है। हमें बच्चों को बचपन से ही यह शिक्षा देनी चाहिए कि हर व्यक्ति सम्मान का अधिकारी है। विद्यालयों में श्रमदान, स्वच्छता अभियान और सामूहिक कार्यों के माध्यम से श्रम के प्रति सम्मान की भावना विकसित की जा सकती है।

स्वामी विवेकानंद ने कहा था, "उठो, जागो और तब तक मत रुको जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाए।" यह संदेश बताता है कि सफलता का आधार निरंतर परिश्रम है, न कि काम का प्रकार।

अंततः यह कहना उचित होगा कि समाज का प्रत्येक कार्य आवश्यक है और प्रत्येक श्रमिक सम्मान का पात्र है। हमें कभी भी किसी व्यक्ति को उसके पेशे के आधार पर छोटा नहीं समझना चाहिए। "कार्य की महानता उसके आकार में नहीं, बल्कि उसे करने वाले की निष्ठा में होती है।"

जब हम हर कार्य और हर कर्मयोगी का सम्मान करेंगे, तभी एक समान, संवेदनशील और प्रगतिशील समाज का निर्माण होगा। इसलिए हमें सदैव याद रखना चाहिए कि कोई काम छोटा नहीं होता और कोई भी काम करने वाला छोटा नहीं होता।

# पश्चिम क्षेत्र का निरीक्षण

**अजय कुलकर्णी**
सहायक सचिव (मा.स.वि. एवं प्रशिक्षण),
केंद्रीय कार्यालय, मुंबई

मैं सितंबर 2002 में पदोन्नति पर एलआईसी के पश्चिम क्षेत्रीय कार्यालय के निरीक्षण विभाग में सहायक प्रशासनिक अधिकारी के रूप में नियुक्त हुआ। मेरी जिम्मेदारी महाराष्ट्र, गोवा और गुजरात राज्यों में स्थित शाखाओं तथा मंडल कार्यालयों के निरीक्षण कार्य की थी। पश्चिम क्षेत्र में 400 से अधिक शाखाएँ और 23 मंडल कार्यालय थे, जिनका प्रत्येक वर्ष निरीक्षण किया जाना आवश्यक था। यह दायित्व जितना चुनौतीपूर्ण था, उतना ही सीखने और नए अनुभव प्राप्त करने का अवसर भी प्रदान करने वाला था।

जब मुझे इस पदस्थापना का आदेश मिला, तो मैं अत्यंत उत्साहित था। मुझे बचपन से ही यात्रा करने का शौक रहा है, इसलिए मैंने इसे अपने कार्य के साथ-साथ तीन राज्यों को निकट से देखने और समझने का सुनहरा अवसर माना। एलआईसी में आने से पहले, एक ऑडिट फर्म में ऑडिट असिस्टेंट के रूप में कार्य करते हुए मुझे कुछ दौरे करने का अवसर मिला था। लगभग डेढ़ वर्ष की उस नौकरी के दौरान मैंने केवल चार ऑडिट यात्राएँ की थीं, जो मुख्यतः धुले और सिलवासा तक सीमित थीं। इसके विपरीत, एलआईसी में निरीक्षण यात्राएँ कहीं अधिक व्यापक और चुनौतीपूर्ण थीं। कार्य का दायरा बहुत बड़ा था और मुझे ऐसे अनेक स्थानों पर जाने का अवसर मिला, जहाँ शायद अन्यथा कभी जाना न हो पाता। बाद में, निरीक्षण विभाग में तीन वर्ष पूरे कर आईपीपी सेल में स्थानांतरित होने के बाद जब मैंने पीछे मुड़कर देखा, तो महसूस किया कि इस अवधि ने मुझे व्यावसायिक और व्यक्तिगत-दोनों ही स्तरों पर अत्यंत समृद्ध बनाया। यह मेरे सेवाकाल के सबसे संतोषजनक चरणों में से एक था।

मेरी पहली निरीक्षण यात्रा पुणे की थी। मेरा पैतृक गाँव पुणे के निकट होने के कारण, बचपन से ही वहाँ मेरा आना-जाना रहा था। इसलिए अपने भ्रमण जीवन की शुरुआत एक परिचित शहर से होना मेरे लिए बहुत सहज रहा। कार्यालयीन कार्य के अतिरिक्त मुझे शहर घूमने, सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग लेने तथा मित्रों और रिश्तेदारों से मिलने का भी अवसर मिला। इस कारण मुझे कभी घर की याद नहीं सताई। यह एक आदर्श शुरुआत थी और धीरे-धीरे मैं लगातार यात्राएँ करने वाली नौकरी की दिनचर्या का अभ्यस्त हो गया। प्रारंभ में मेरे परिवार के लिए भी यह परिवर्तन आसान नहीं था, पर समय के साथ वे भी इस जीवनशैली के अनुरूप ढल गए।

पश्चिम क्षेत्र में सामान्यतः तीन अधिकारियों की टीम लगभग अठारह से उन्नीस दिनों की एक यात्रा में कम-से-कम पाँच शाखाओं का निरीक्षण करती थी, जबकि दो अधिकारियों की टीम को न्यूनतम चार शाखाओं का निरीक्षण करना होता था। प्रत्येक दौरे के बाद हमें मुंबई स्थित क्षेत्रीय कार्यालय में एक सप्ताह से भी कम समय के लिए लौटने का अवसर मिलता, जिसके बाद अगली यात्रा की तैयारी शुरू हो जाती। अधिकांश यात्राएँ रविवार को प्रारंभ होती थीं, इसलिए हर बार घर से विदा लेना मेरे और मेरे परिवार-दोनों के लिए भावनात्मक रूप से कठिन होता था।

इन तीन वर्षों में मैंने अनुभव किया कि किसी भी निरीक्षण यात्रा की सफलता काफी हद तक टीम के सदस्यों के आपसी तालमेल पर निर्भर करती है। जब सहकर्मी मिल-जुलकर काम करते थे, तब व्यस्ततम कार्यक्रम भी आनंददायक बन जाता था। यात्रा का स्थान भी अनुभव को प्रभावित करता था। छोटे कस्बों में अच्छे ठहरने की व्यवस्था और संतोषजनक भोजन मिलना कई बार चुनौतीपूर्ण होता था।

निरीक्षण विभाग ने मुझे अपने पूरे सेवाकाल का एक महत्वपूर्ण पाठ सिखाया- हर परिस्थिति के अनुरूप स्वयं को ढालना। हर चार-पाँच दिन में हमें एक नए नगर में जाना पड़ता था, जहाँ भोजन,

आवास, मौसम और सामान बाँधने-खोलने की निरंतर प्रक्रिया के साथ तालमेल बैठाना पड़ता था। इसके साथ ही अलग-अलग सहकर्मियों और विभिन्न शाखाओं के कर्मचारियों के साथ कार्य करना भी सीखना होता था। मैंने पाया कि यदि दृष्टिकोण सकारात्मक हो, तो हर परिवर्तन सहज लगने लगता है।

शाखाओं के कर्मचारी सामान्यत: सहयोगी और सीखने के इच्छुक होते थे। वे अपनी व्यावहारिक कठिनाइयों को खुलकर बताते थे और जब उन्हें तार्किक सुझाव या व्यवहारिक समाधान दिए जाते, तो वे उन्हें सहर्ष स्वीकार कर लागू भी करते थे। अनेक अधिकारी यह जानने में रुचि रखते थे कि अन्य मंडल कार्यालयों में कौन-सी श्रेष्ठ कार्यप्रणालियाँ अपनाई जा रही हैं, ताकि वे अपनी शाखाओं में भी उनका लाभ उठा सकें। सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि वे संवेदनशीलता और निष्पक्षता की अपेक्षा रखते थे। जो निरीक्षण अधिकारी उनकी समस्याओं को समझता और उनके साथ न्यायपूर्ण व्यवहार करता, वह सहज ही उनका विश्वास और सम्मान प्राप्त कर लेता था। बाद के वर्षों में प्रदर्शन मूल्यांकन पर बढ़ते जोर के कारण अनेक शाखाएँ निरीक्षण से पहले स्वयं भी तैयारी करने लगी थीं, जिससे उनकी कार्यप्रणाली में सुधार हो सके।

निरीक्षण कार्य का सबसे संतोषजनक पक्ष यह था कि प्रत्येक शाखा का निरीक्षण पूरा कर रिपोर्ट अंतिम रूप देने पर एक विशेष उपलब्धि का अनुभव होता था। यह संतोष मिलता था कि मेरा कार्य संगठन को और अधिक सुदृढ़ एवं प्रभावी बनाने में योगदान दे रहा है।

इस कार्य ने मेरी निर्णय लेने की क्षमता को भी काफी विकसित किया। एक ही दिन में कई विभागों का निरीक्षण करते-करते परिस्थितियों का शीघ्र, निष्पक्ष और व्यापक आकलन करने की आदत विकसित हो गई। यदि किसी शाखा द्वारा अपनाई गई कार्यप्रणाली के पीछे उचित और तार्किक कारण होते, तो उन्हें स्वीकार करना भी उतना ही आवश्यक था। यह दायित्व मानव स्वभाव को समझने का भी एक उत्कृष्ट माध्यम बन गया। केवल शाखा कर्मचारियों के ही नहीं, बल्कि साथी निरीक्षण अधिकारियों के व्यवहार को भी निकट से देखने का अवसर मिला। प्रत्येक यात्रा अपने साथ कोई-न-कोई नया अनुभव और नई सीख लेकर आती थी।

इन यात्राओं ने मेरे व्यक्तिगत जीवन को भी समृद्ध बनाया। पश्चिम क्षेत्र के अनेक सहकर्मियों और परिचितों से स्थायी मित्रता स्थापित हुई। जब भी समय मिलता, मैं आसपास के ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और प्राकृतिक महत्व के स्थलों का भ्रमण अवश्य करता। गोवा के मनोहारी समुद्र तट, ऊना प्रवास के दौरान दीव, केशोद से गिर वन, भावनगर से वेलावदर ब्लैकबक राष्ट्रीय उद्यान, कोल्हापुर से राधानगरी अभयारण्य, सातारा से महाबलेश्वर और पंचगनी, कोल्हापुर का पन्हाला किला और अंबाबाई मंदिर, वेरावल से द्वारका और सोमनाथ, तथा अनेक ज्योतिर्लिंगों के दर्शन आज भी मेरी स्मृतियों में ताज़ा हैं। इन यात्राओं ने पश्चिम भारत की समृद्ध सांस्कृतिक और प्राकृतिक विरासत को निकट से जानने का अवसर दिया।

हालाँकि हर अनुभव सुखद नहीं था। नवंबर 2003 में जब हम परभणी के लिए शाम की ट्रेन से रवाना होने वाले थे, तभी पता चला कि शहर में कुछ दुर्भाग्यपूर्ण घटनाओं के कारण दंगे भड़क उठे हैं। फिर भी निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार हमें जाना ही था। सौभाग्य से शाखा प्रबंधक और सहायक शाखा प्रबंधक (विक्रय) ने हमारी सुरक्षा के लिए हर संभव सावधानी बरती। पूरे सफर के दौरान शहर का वातावरण तनावपूर्ण बना रहा, लेकिन हमने अपना कार्य बिना किसी बाधा के पूरा किया। अन्य अवसरों पर महाराष्ट्र और गुजरात में भीषण वर्षा और बाढ़ जैसी परिस्थितियों का सामना करना पड़ा। ऐसे हर कठिन समय में एलआईसी के सहकर्मियों ने जिस आत्मीयता और सहयोग की भावना का परिचय दिया, उसने संगठन के मजबूत पारिवारिक वातावरण का अनुभव कराया। इन घटनाओं ने मुझे और अधिक धैर्यवान, आत्मविश्वासी तथा परिस्थितियों का सामना करने में सक्षम बनाया।

आज पीछे मुड़कर देखता हूँ तो महसूस करता हूँ कि निरीक्षण विभाग में बिताए वे तीन वर्ष केवल एक प्रशासनिक दायित्व नहीं थे, बल्कि जीवन की एक महत्वपूर्ण पाठशाला थे। इस अवधि ने मेरी दृष्टि को व्यापक बनाया, निर्णय क्षमता को परिपक्व किया, परिस्थितियों के अनुरूप स्वयं को ढालना सिखाया और मुझे अनेक उत्कृष्ट व्यक्तियों तथा अविस्मरणीय स्थानों से परिचित कराया। सबसे बढ़कर, इसने मुझे गहरा व्यावसायिक संतोष दिया और ऐसी अनमोल स्मृतियाँ दीं जिन्हें मैं जीवन भर संजोकर रखूँगा।

# बने रहना प्रथम स्थान, निगम का ऊंचा होता रहे मान

**युगल किशोर शर्मा**
प्र.अ. (ईडीएमएस/आरएमएफ विभाग),
दिल्ली मण्डल-3

### प्रथम स्थान पर बनाए रखने में हित साधन

जैसा कि हम सब को विदित है कि भारतीय जीवन बीमा निगम एक सितंबर 2026 को अपनी स्थापना की 70वीं वर्षगांठ बड़ी धूमधाम एवं गौरवमयी मुस्कान के साथ मना रहा है। इस खास मौके पर एलआईसी की सात दशकों की स्वर्णाक्षरों में लिखी गयी विजय गाथा के कई पहलुओं से परिचित होना हम आप सबके लिए स्वाभिमान का प्रतीक होगा। इसलिए निगम की कार्यप्रणाली में नीतियों के कार्यान्वयन एवं उसके संबन्धित पक्षों पर विवेचना की प्रासंगिकता व्यवसाय बढ़ाने के साथ साथ बीमा बाजार में प्रथम स्थान पर टिके रहने के जुनून से जुड़े कुछ पहलुओं की चर्चा की उपादेयता बनी रहेगी। एलआईसी की कार्यप्रणाली का उद्देश्य ना केवल निगम के उद्देश्यों की प्रतिपूर्ति में आने वाली बाधाओं को दूर करना है, बल्कि भविष्य के लिए उन क्रियाकलापों का भी ध्यान रखना है जो दीर्घकाल तक बीमा क्षेत्र में एलआईसी को प्रथम स्थान पर बनाए रखने में हित साधन का काम कर सकते हैं।

### डिजिटल माध्यम के पंच, उत्कृष्ट सेवा के मंच

सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में डिजिटल ट्रांसफॉर्मेशन के लिए निगम ने जो लक्ष्य निर्धारित किए हैं उनमें सेल्स सुपर साथी ऐप का प्रचार प्रसार करना इसलिए आवश्यक है ताकि सितंबर 2026 तक 50% एजेंट, मार्च 2027 तक 75% और जून 2027 तक 100% अभिकर्ता इस ऐप का सदुपयोग कर सकें। जितना ज्यादा अभिकर्ता डिजिटल ज्ञान से सक्षम होगा, उतना ही ज्यादा विश्वास के साथ निजी कंपनियों के प्रतिद्वंद्वि से मुक़ाबला करने में सफल होगा। इस कड़ी में वह वर्तमान पॉलिसी धारकों को माई कस्टमर ऐप से सितंबर 2026 तक 50 लाख यूज़र और मार्च 2027 तक 1 करोड़ को जोड़ने के लिए बढ़ावा देने से ग्राहक के हित में ज्यादा कारगर होगा। एलआईसी के वेब पोर्टल सेल्फ सर्विस चैनल के प्रति आकर्षण बढ़ेगा जिससे एलआईसी के ग्राहक कार्यालयों में कम आएंगे। सभी शाखाएं एवं सैटेलाइट यूनिट जितना ज्यादा अपनी वेबसाइट और मोबाइल ऐप्स के डिजिटल वर्कफ़्लो को प्रोत्साहित करेंगी तो पॉलिसीधारकों की निगम के प्रति वफादारी में भी इजाफा होगा। वैसे भी सर्विस के मामलों में हमारे सीएलआईए चैनल "उत्कृष्टता के केंद्र" बन गए हैं। अत: डिजिटल माध्यम के तकनीकी पंच लगने से उत्कृष्ट सेवा के मंच भारतीय जीवन बीमा निगम की चौतरफा उन्नति प्रगति तरक्की में सार्थक योगदान दे रहे हैं।

### मानव संसाधन विकास में राजभाषा हिन्दी की भूमिका खास

मानव संसाधन विकास के महत्व को रेखांकित करने के लिए राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3(3) के तहत केंद्र सरकार के मंत्रालयों, विभागों, कार्यालयों, उपक्रमों और बैंकों में 14 विशिष्ट दस्तावेजों को हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में अनिवार्य रूप से जारी करना आवश्यक बनाया हुआ है। इसका मुख्य उद्देश्य सरकारी कामकाज में द्विभाषिकता (हिंदी और अंग्रेजी) को सुनिश्चित करना है। इस श्रृंखला में भारतीय जीवन बीमा निगम के क/ख/ग क्षेत्रों के अंतर्गत आने वाले सभी मण्डल कार्यालयों से संबद्ध कई विभागों में राजभाषा कार्यों का निष्पादन उत्तम तरीकों से सम्पन्न हो रहा है। विगत वर्ष हमारे निगम की थीम, "सशक्तिकरण, ऊर्जा संचार, निरंतर विस्तार" हमारे निगम की राजभाषा के प्रयोग उपयोग सदुपयोग के लिए प्रगतिशील सोच एवं देश के विभिन्न प्रान्तों में बढ़ते राजभाषा के सकारात्मक प्रभाव के निरंतर विस्तार के प्रयासों को दर्शाती है। वर्तमान में संचार और तकनीक के क्षेत्र में लगातार बढ़ते तकनीकी के विस्तार से मानव संसाधन विकास में राजभाषा हिन्दी की भूमिका खास थी, है एवं रहेगी।

### दिखाएंगे दमखम निगम रहेगा प्रथम

वर्तमान सूत्र वाक्य (थीम), "लक्ष्य से प्रेरित सेवा में समर्पित", निगम सर्वांगीण विकास के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाता है। इसका अर्थ यह माना जा सकता है कि निगम के मुख्य उद्देश्यों और लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए समर्पित होकर निगम से जुड़े हर वर्ग एवं संवर्ग को समर्पित होकर सेवा करना है। वैसे भी जब निगम का चहुंमुखी विकास होगा तो निगम से जुड़े एवं कार्यरत मानव संसाधन का भी आर्थिक, सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक उत्थान होकर रहेगा। विपणन से जुड़े हर प्रकार के अभिकर्त्ता, प्रशासनिक विभागों से जुड़े निगम कर्मी एवं अधिकारीगण निगम के थीम में निहित सूत्र वाक्य के साथ सोशल मीडिया हैंडल्स - जैसे एलआईसी इंडिया फोर एवर, फेसबुक, एक्स, इन्स्टाग्राम को लाइक / फॉलो / शेयर में बढ़ोतरी करके भी डिजिटल संसार में अपने पक्ष का प्रचार प्रसार करके प्रतिद्वंद्विता में सदैव आगे रहने में कोई कसर नहीं छोड़ेंगे। यदि विपणन वाहिनी वाले दिखाएंगे दमखम, तो हमारा निगम सदा प्रथम बना रह सकेगा। अतएव हम सबका एक ही सपना है कि हमारा प्यारा निगम प्रथम स्थान पर बना रहे एवं निगम का सदा मान ऊंचा होता रहे। जिससे 70 वीं वर्षगांठ मनाने का जश्न हमारे मन मस्तिष्क पर विशिष्ठ छाप छोडने में गुणात्मक वृद्धि कर पाएगा। जय भारत जय भारतीय जीवन बीमा निगम।

# सादा जीवन उच्च विचार

**संजीवनी जी. फडनीस**
उ.श्रे.स. (सूक्ष्म बीमा विभाग),
बेलगावी मंडल कार्यालय

"अन्तो नास्ति पिपासाया: संतोष: परमं सुखम्
तस्मात्सन्तोषमेवेह धनं पश्यन्ति पण्डिता:।।"

अर्थात् इच्छाओं, लालच या तृषा का कोई अंत नहीं होता, जैसे जैसे इच्छाएं पूरी होती हैं, वैसे वैसे नई इच्छाएं पैदा होने लगती हैं। वास्तविक संतोष ही सबसे बडा और सर्वोच्च सुख है। इसलिए ज्ञानी पण्डित लोग इस दुनिया में संतोष को ही सबसे बड़ा, धन मानते हैं।

सादगीभरा जीवन और उच्च विचार, संतोष और सुख की खान हैं। इससे ही हमारे अंदर मानवीयता का समावेश होता है। ऐसी जीवनशैली और आचरण में जो सुख है, वह कृत्रिम ऐश्वर्यशाली और उलझन भरे जीवन में कहाँ मिलता है?

काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर- ये सादे जीवन के शत्रु हैं। हमारे संतों ने, ऋषिमुनियों ने अपने ग्रंथों के माध्यम से सदैव सादा जीवन अपनाने की शिक्षा दी है, क्योंकि इसी में सबका भला है। इस सादे जीवन के अभाव के कारण ही आजकल के जीवन में असंतोष, हड़बड़ी, मारामारी, व्यर्थ की चिन्ता, भागदौड़, ईर्ष्या, तनाव, रोग, शोक - आदि बढ़ गये हैं।

भगवान गौतम बुद्ध ने सिखाया है कि "जीवन दुखों से भरा है, जिसका मुख्य कारण है - हमारी असीमित इच्छाएं और मोहमाया । इन बंधनों से मुक्ति पाने का मार्ग भी है- यह मार्ग हमारे भीतर ही मौजूद है।"

जन्म, बुढापा, बीमारी और अंतत: मृत्यु सब दु:ख के ही रूप हैं। हमारी असीमित इच्छाएं और किसी वस्तु या व्यक्ति से अत्यधिक लगाव ही दु:ख की जड़ है। अपनी इच्छाओं को नियंत्रित करके हम इस पीड़ा से मुक्त हो सकते हैं। सही विचार, सही कर्म, सही दृष्टि का पालन करके दु:खों का अंत किया जा सकता है।

लगभग 50-60 वर्ष के पूर्व लोगों के पास एक ही जूते का जोड़ा रहा करता था, वह फट गया तो सिलवाकर इस्तेमाल करते थें। किन्तु आजकल हर किसी के पास कम से कम दो या तीन जोड़ी जूते या चप्पल हुआ करते हैं, जिसमें हर रोज के इस्तेमाल के अलग, पार्टी फंक्शन में पहनने के अलग, मॉर्निंग वॉक के अलग इत्यादि। इसी प्रकार कपड़ों की भी बात थी। रोज पहनने के तीन जोड़ी कपडे और एक या दो जोड़ी नये कपड़े शादी-ब्याह समारोह में पहनने के लिए रहते थे। इसके विपरीत आज के ज़माने में हर व्यक्ति के कम से कम 25 से 50 जोड़ी कपड़े रहते हैं।

एक ही घर में रहनेवाले हर सदस्य का नहाने का साबून अलग, टूथपेस्ट अलग, डिओडरंट अलग, यह पश्चिमी जीवनशैली का अनुकरण है। इस प्रकार की जीवनशैली हमारे रोजमर्रा के खर्चे बढ़ा रही है।

मनुष्य चांद पर पहुँच चुका है, उसी पुराने ढंग से जीवन व्यतीत करने की क्या आवश्यकता है? ऐसे विचार मन में आ सकते हैं। हमें अपने खर्चों पर नियंत्रण रखने की जरूरत है। जहाँ हो सके वहां हम अपने साधन सुविधाओं का न्यायसंगत रूप से इस्तेमाल करें।

पुराने जमाने में शादी-ब्याह होता था तो घर के सदस्य अपने रिश्तेदारों और पड़ोसियों की मदद से पूरी तैयारी करते थे। उसके विपरीत आजकल शादी-ब्याह के हर काम कॉंट्रॅक्ट पर होते हैं, जैसे की हल्दी, मेहंदी, संगीत, बारात इत्यादि। बॉलिवुड की फिल्में देखकर उनका अनुकरण किया जा रहा है। इसके बजाय अपनी आमदनी के हिसाब से और खर्च करने की क्षमता के अनुसार सोचना ज्यादा उचित होगा। कुछ चुनिंदा अमीर लोग जिस प्रकार से शादी-ब्याह, पार्टी, फंक्शन

मनाते हैं, वही रुझान या प्रवृत्ति बन जाती है। मध्यमवर्गीय माता-पिता केवल अपने बच्चों की खुशी के लिए कर्ज निकालकर अपने बच्चों के ब्याह अपनी क्षमता से अधिक खर्च करके मनाते हैं।

उदाहरण के तौर पर देखा जाए तो, विवाह का आमंत्रण पत्र काफी महंगे कार्ड पर छपाते हैं, जो कि कुछ आमंत्रित अतिथि, उस कार्ड को खोलकर तक नहीं देखतें। यहाँ से आरम्भ होनेवाला व्यय किस हद तक पहुँचता है? आइए एक नज़र डालते हैं। हजारों मेहमानों को बुलाया जाता है। जब वे मेहमान कार्यक्रम में उपस्थित होते हैं तब ठीक तरह से कौन आये कौन नहीं, इस पर भी ध्यान नहीं दे पाते, जो उपस्थित रहते हैं - उन्हें 6 महीने के बाद किसका ब्याह कब हुआ-याद भी नहीं रहता है ! विवाह का निश्चय या मंगनी के नाम पर भी अनगिनत "गैर धार्मिक" प्रथाएं भी प्रचलित हैं। विवाहपूर्व ही वधुवर दोनों को आस-पास बिठाकर एक-दूसरे को मालाएं पहनवाई जाती हैं। फिर केक्-कटिंग, नाच-गाना, भोजन, पेय का खर्च तो एक ब्याह के जितना ही होता है। विवाह से पहले का प्री-वेडिंग शूट का खर्चा अलग! मानो कि किसी फिल्म की शूटिंग चल रही हो। इसमें दूल्हा-दुल्हन दोनों अलग अलग तरह के पोशाक पहनकर अजीबोगरीब पोज़ देते हुए तस्वीरें और व्हिडियोज़ बनवाते हैं और ब्याह के दिन बड़े बड़े पर्दों पर इनका प्रदर्शन होता है!

किस दिशा में जा रहे हैं हम? क्या हमारी संस्कृति सभ्यता लुप्त होती जा रही है? जिस देश में नारी को पूजनीय स्थान दिया जाता था, यदि वही नारी अपनी मर्यादा, सीमाओं को लांघ रही हो और सभी हदें पार कर रही हो, तो हमारी संस्कृति-सभ्यता की रक्षा कैसे होगी?

विवाह मंडप की लाखों रुपयों की सजावट, हजारों रुपयों के पटाखे फोडना, महँगे कपडे और आभूषण (जो शायद आगे जाकर कभी भी पहने न जानेवाले), हजारो रुपये देकर ब्युटीशियन को बुलाना जो प्राकृतिक सौंदर्य ढककर एक हिरोइन जैसा दिखने में सहायता करेगी - इतना सारा खर्चा केवल चंद घंटों के लिए? इतना खर्चा करने के बावजूद भी आजकल के विवाह कितने दिनों तक टिके रहेंगे - कोई भरोसा नहीं।

एक विवाह का अर्थ है दो परिवारों का मेल-जोल और नवविवाहितों के नवजीवन का शुभारम्भ। इस पवित्र बंधन में बंधने जा रहे जोड़े को उनके आपस के परिवारों के रीती-रिवाज़ जानने की और बड़ों के अशीर्वाद की आवश्यकता अधिक रहती है।

पैसे बर्बाद करने के बजाय कम खर्चे में सरल तरीके से ब्याह, पार्टियां मनाए जाऐं तो कितनी बचत होगी ! उन्हीं बचे हुए पैसों से नवविवाहितों के लिए गृहोपयोगी जीवनावश्यक चीजों की खरीदारी की जा सकती है। इसी प्रकार से जन्मदिन, नामकरण, गोदभराई कार्यक्रम भी सरल तरीके से मनाये जा सकते हैं।

हमे केवल साक्षर बनकर न रहकर संस्कारी, बुद्धिमान और विचारवान बनना है । स्वतंत्रता और स्वेच्छाचार को गलती से एक जैसा समझा जाता है। स्वतंत्रता का अर्थ है कि व्यक्ति बिना किसी भय के अपनी इच्छा, विवेक और क्षमताओं के अनुसार पूरी जिम्मेदारी के साथ, बगैर किसी को हानि पहुंचाते हुए अपने निर्णय स्वयं ले सके और अपना विकास कर सके। इसके विरुद्ध, स्वेच्छाचार का अर्थ है मनमाना आचरण या जो जी में आए वैसा ही करना, परिणाम चाहे कुछ भी हो।

हमारे देश के आदर्श व्यक्ति पूर्व प्रधान मंत्री श्री लाल बहादुर शास्त्रीजी, श्रेष्ठ वैज्ञानिक एवं पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम जी, महानतम दूरदर्शी सिविल इंजिनीयर सर एम. विश्वेश्वरय्या, साहित्यकार, शिक्षाविद समाज सुधारक श्री ईश्वरचंद्र विद्यासागर जी और ऐसे अनेक महान व्यक्तियों का जीवन सादगीभरा था। उनकी जीवनशैली अनुकरणीय है।

"देर आए दुरुस्त आए" समय रहते सचेत नागरिक बनेंगे ।

जीवन जितना सादा रहेगा, तनाव उतना ही आधा रहेगा ।

# नदी मेरी माँ

**श्रीकांत कांबले**
प्र.अ. (केंद्रीय अंकेक्षण विभाग),
योगक्षेम

वह केवल जल नहीं, जीवन की सबसे कोमल स्मृति है।

धरती पर यदि किसी ने माँ के अर्थ को सबसे सुंदर ढंग से जिया है, तो वह नदी है।

पहाड़ों की गोद में जन्म लेने वाली वह नन्ही-सी जलधारा जब पहली बार चट्टानों के बीच मुस्कराती हुई बहती है, तब उसे शायद यह भी नहीं पता होता कि आगे चलकर उसे कितनी प्यास बुझानी है, कितने खेतों को हरियाली देनी है, कितने गाँवों को जीवन देना है और कितने दु:ख अपने भीतर समेट लेने हैं।

उसकी यात्रा किसी राजसी वैभव से नहीं, बल्कि संघर्ष से शुरू होती है। कहीं ऊँची चट्टानें उसका रास्ता रोकती हैं, कहीं गहरी खाइयाँ उसे डराती हैं, कहीं तीखी धूप उसे तपाती है। लेकिन वह रुकना नहीं सीखती। वह बहना सीखती है। शायद इसलिए कि उसे मालूम है... जीवन का अर्थ मंज़िल नहीं, प्रवाह है।

नदी का स्वभाव बिल्कुल माँ जैसा होता है। माँ भी तो जीवन भर बहती रहती है। कभी अपने सपनों को बहा देती है, कभी अपनी इच्छाओं को, कभी अपनी थकान को और कभी अपने आँसुओं को। वह अपने हिस्से की धूप सहकर भी बच्चों के लिए छाँव बचाकर रखती है। नदी भी वैसी ही है। वह अपने जल को कभी अपने लिए नहीं रोकती। खेतों को देती है, जंगलों को देती है, पशु-पक्षियों को देती है, प्यासे राहगीर को देती है। देने के बाद भी उसके चेहरे पर कभी अभिमान नहीं आता।

शायद इसलिए हमारी संस्कृति ने उसे केवल नदी नहीं कहा, माँ कहा।

संध्या के समय किसी घाट पर जाकर बैठिए। आरती की लौ जब जल पर काँपती है, घंटियों की ध्वनि हवा में घुलती है और छोटे-छोटे दीप नदी की लहरों पर तैरते हुए दूर निकल जाते हैं, तब ऐसा लगता है जैसे समय भी कुछ क्षणों के लिए ठहर गया हो। कोई अपनी मनोकामना लेकर आया है, कोई अपने बिछड़े हुए प्रियजनों को याद कर रहा है, कोई जीवन की नई शुरुआत के लिए प्रार्थना कर रहा है और कोई अंतिम विदाई देकर लौट रहा है।

नदी सबको चुपचाप देखती रहती है।

वह किसी से कुछ नहीं पूछती।

उसे यह जानने की उत्सुकता नहीं होती कि सामने खड़ा व्यक्ति कौन है, किस धर्म का है, किस जाति का है या कितनी दौलत का मालिक है। उसके लिए हर चेहरा समान है, क्योंकि हर मन कभी न कभी प्यासा होता है।

यही तो माँ का भी स्वभाव है। उसकी गोद में कोई बड़ा नहीं होता,कोई छोटा नहीं होता। उसके लिए सभी संतानें समान होती हैं।

बचपन में नदी हमें खेलना सिखाती है। उसकी रेत पर बने घरौंदे शायद पहली बार हमें यह बताते हैं कि हर चीज़ हमेशा के लिए नहीं होती। जवानी में वही नदी हमें संघर्ष का अर्थ समझाती है। और बुढ़ापे में उसके किनारे बैठकर लगता है कि जीवन भी इसी जल की तरह बहता हुआ कब हाथों से निकल गया, पता ही नहीं चला।

नदी के किनारे सभ्यताएँ जन्म लेती हैं। गीत जन्म लेते हैं। लोककथाएँ जन्म लेती हैं। किसान की उम्मीदें वहीं से हरियाली बनती हैं। मछुआरे की नाव वहीं से रोज़ी कमाती है। किसी कवि को उसकी पहली कविता वहीं मिलती है, किसी साधु को उसका पहला ध्यान। नदी केवल जल नहीं बहाती, वह स्मृतियाँ बहाती है, संस्कृतियाँ बहाती है, पीढ़ियों का इतिहास बहाती है।

जब दो नदियाँ संगम पर मिलती हैं, तब वे यह नहीं सोचतीं कि कौन बड़ी है और कौन छोटी। वे अपना अस्तित्व खोती नहीं, उसे और

विशाल बना देती हैं। मनुष्य यदि संगम से यह एक सीख भी ले ले कि जीवन का सौंदर्य साथ बहने में है,तो शायद दुनिया के आधे संघर्ष अपने-आप समाप्त हो जाएँ।

आज जब हम नदियों को कूड़े से भर देते हैं,उनके किनारों पर अतिक्रमण कर लेते हैं और उनके जल को प्रदूषित कर देते हैं, तब लगता है जैसे हम अपनी ही माँ के आँचल को मैला कर रहे हैं। यह केवल पर्यावरण का संकट नहीं है, यह हमारी संवेदनाओं का भी संकट है। जिस दिन हमने नदी को माँ की जगह संसाधन समझ लिया,उसी दिन हमने अपने भीतर की करुणा का एक हिस्सा खो दिया।

उस शाम मैं बहुत देर तक नदी के किनारे बैठा रहा। मेरे पास कोई प्रार्थना नहीं थी,कोई इच्छा नहीं थी,कोई शिकायत भी नहीं थी। मैं केवल उसे बहते हुए देख रहा था। उसकी हर लहर जैसे मुझसे कुछ कह रही थी।

अचानक मुझे अपनी माँ याद आ गई।

वह भी तो जीवन भर ऐसे ही बहती रही। कभी हमारे लिए,कभी परिवार के लिए, कभी रिश्तों के लिए। उसने भी अपने दु:खों को मुस्कान के नीचे छिपाकर रखा, ठीक वैसे ही जैसे नदी अपनी गहराइयों में न जाने कितने रहस्य छिपाए रखती है।

लौटते समय मैंने एक बार पीछे मुड़कर नदी को देखा। वह पहले की तरह ही बह रही थी...निस्वार्थ, शांत और ममतामयी।

तब मन ने धीरे से कहा...

"दुनिया में माँ के बाद यदि किसी ने बिना कुछ माँगे सबसे अधिक दिया है, तो वह नदी है।

इसलिए नदियाँ केवल बहती नहीं... वे हर युग में माँ बनकर हमारे भीतर जीवित रहती हैं।"

कविता

# अंत से अनंत तक

तुम्हारा मेरा क्या है नाता, यह मैं नहीं जानती,
पर तुमसे बातें करके, अजब सुकून हूँ पाती

सुख-दुख बाँटने को, अटूट विश्वास लगते हो,
दूर रहकर भी मुझसे, सबसे पास लगते हो।

एक ऐसा रिश्ता, जिसका कोई भविष्य नहीं,
पर इसका अंत हो, ऐसा भी कोई दृश्य नहीं।

यह तो बस मन से मन का, एक पावन जुड़ाव है,
मानो अनंत समंदर पर, ये सूर्योदय का पड़ाव है।

अठखेली करती लहरें, मानों हो सुथरा श्वेत किनारा,
न कोई आस, न आसक्ति, फिर भी खिंचाव प्यारा।

सुर-ताल मिलकर, जैसे बन जाती एक लय,
इस निश्चल जुड़ाव में, खो जाता है मेरा भय।

कोरा कैनवास हो तुम, कितने साफ़ और निश्छल,
ईश्वर का बनाया चित्र हूँ मैं, चंचल और अविरल।

कितने भी जन्म लें हम, यह नाता पवित्र रहेगा,
दुनिया के अलग रंगों से बना, अनोखा चित्र रहेगा।

कमल खिले हैं पंक में, पर भँवरा गुंजन करता है,
दमकती दामिनी पहले, फिर सावन धरती भिगोता है।

दिये की उस साफ़ लौ से, प्रकाश फैलता है,
दूर रहकर स्नेही दिल, आपस में मिलता है।

हमारा रिश्ता भी, इसी अटूट विश्वास पर चलता है,
भौतिक अंत से छूटकर, अनंत की ओर बढ़ता है।

**वृषाली आनंद लाड**
प्र.अ. (नव व्यवसाय),
मुंबई मंडल - 3

# स्वस्थ जीवन शैली

**गिरिजा सी. जी**
उ.श्रे.स., शाखा -77ई,
त्रिशूर

मानव एक सामाजिक प्राणी है। अपने और समाज के प्रति अनेक दायित्व की पूर्ति करने से ही उनका जीवन सार्थक बनता है। इस दायित्व की पूर्ति केवल मन से नहीं हो सकती, तन का भी साथ में सक्षम होना अनिवार्य है। स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन का वास होता है।

वैज्ञानिक उन्नति और टेक्नोलोजी ने हमारे जीवन शैली को पूरी तरह से बदल दिया है। लोग अपने बिज़ी शेड्यूल और व्यक्तिगत मुद्दों के बीच फंसे हुए हैं, जिसका बहुत बुरा असर अपने स्वास्थ्य पर पड़ता है जिसके कारण जीवनशैली बदल जाती है। अच्छी जीवनशैली के लिए मुख्यत: दो चीज़ों पर ध्यान देना बहुत ज़रूरी है। सबसे पहले खाद्य पदार्थ और दूसरी दिनचर्या जिसका असर सबसे ज़्यादा स्वास्थ्य पर पड़ता है। हमें यह समझना होगा कि अपने आप के लिए कुछ समय देना बेहद ज़रूरी है।

स्वस्थ जीवन शैली के ज़रूरी नियम में सबसे पहले स्वस्थ आहार ही आता है। संतुलित आहार आवश्यक है। दिन में कम से कम तीन बार संतुलित आहार लेना अनिवार्य है। रात में खाने को हल्का रखने से आसानी से नींद आ जाती है। खाने में ज़्यादातर हरी सब्जियाँ, फल और अनाज शामिल करने से हमारे शरीर को प्रोटीन की मात्रा पूरी तरह मिलती है।

इसके पश्चात ज़रूरी है अच्छी नींद लेना। साधारण आदमी को दिन में लगभग सात या आठ घंटे की नींद की ज़रूरत है। आजकल बच्चे से लेकर बुजुर्ग तक नींद को कम करके इंटरनेट, मोबाईल आदि सामूहिक माध्यम में ऐसे जुड़े हुए हैं कि अपने स्वास्थ्य खो बैठते हैं। पूरी नींद ना लेने से हृदयरोग से लेकर मोटापे जैसी बीमारियाँ आने की संभावना है। जो व्यक्ति जल्दी सोकर जल्दी उठता हैं, वह स्वस्थ, बुद्धिमान और ज़िन्दगी में सफल बन जाता है।

हमें अपना स्वास्थ्य बनाये रखने के लिए बाज़ार में बिकने वाले अस्वास्थकर पेय पदार्थों एवं नशीली चीजों से दूर रहना आवशयक है। तनाव काफी हानिकारक है इससे वज़न बढ़ता है। साथ में कई बीमारियों के शिकार भी हो जाते हैं । रोजाना उठकर व्यायाम करने से तनाव काफी हद तक दूर होता है तथा जीवन शैली में बदलाव करने से तरोताज़ा महसूस होता है। हमें नहीं भूलना चाहिए कि स्वस्थ जीवन शैली एक अच्छे जीवन की नींव है। पर इसका पालन करने के लिए हमें दृढ़ संकल्प लेना पड़ता है।

नकारात्मक सोच को छोड़ कर सकारात्मक रहना स्वस्थ जीवनशैली प्रदान करने में बहुत योगदान रहेगा। अपने आसपास स्वच्छता बनाये रखने की ज़रूरत होती है। यह इतना महत्वपूर्ण है कि यदि अपने आसपास सफाई रखेंगे, तो इससे वातावरण स्वच्छ रहेगा। यदि वातावरण स्वच्छ रहें तो हम अपने आपको स्वस्थ रख सकते हैं।

स्वास्थ्य को सबसे बड़ा धन कहा गया है, यदि पैसा हाथ से निकल जाए तो उसे पुन: प्राप्त किया जा सकता है, परन्तु एक बार स्वास्थ्य बिगड़ जाए तो उसे पूर्व स्थिति में लाना मुश्किल होता है। अच्छे स्वास्थ्य में एक तरह का सौन्दर्य होता है, जिससे मन में उमंग और उत्साह होता है। दूसरी तरफ बिगड़े हुए स्वास्थ्य वाला व्यक्ति हर समय उदास, दु:खी और विचलित रहता है।

रोज़ाना अच्छे आहार के साथ-साथ यह भी कोशिश करें कि सप्ताह में उपवास ज़रूर करें, या महीने में एक बार। दिन भर कभी भी असहज महसूस करें, तो गहरी साँस लें, इससे ताज़गी महसूस करेंगे। रोज़ाना फल ज़रूर खाएँ, नमक का अधिक उपयोग न करें, पानी का सेवन करते रहें, व्यायाम कर लें, सही समय पर सोकर जल्दी से उठने की आदत आदि का पालन करें तो हमारा स्वास्थ्य अच्छा बन जाएगा

मानव जीवन प्रकृति का वरदान है। यदि हम स्वस्थ दिनचर्या का पालन नियमित तौर पर करते हैं, तो ज़िंदगी का हर एक दिन लाजवाब बन जाएगा। जीवन एक ही बार मिलता है, उसका पालन-पोषण करने में हमें अवश्य ही ध्यान देना चाहिए ।

# एक नन्ही बच्ची ने सिखाया 'माइंडस्पेस' का असली अर्थ

**ऋषिकेश आंबये**
उप सचिव (बैंक एवं वै.चैनल विभाग),
सूचना प्रौद्योगिकी, केंद्रीय कार्यालय

पिछले सप्ताहांत की बात है। हमेशा की तरह घर से पैदल निकलकर माइंडस्पेस तक जाना और फिर लौट आना, यही मेरा कार्यक्रम था। कहते हैं कि उम्र बढ़ने के साथ कदमों की रफ्तार भले धीमी हो जाए, लेकिन चलने का शौक बढ़ जाता है। कभी हम मैदानों में दौड़ा करते थे, आज मोबाइल पर कदम गिनते हुए चलते हैं।

चलते समय मेरी नज़र कभी घड़ी पर जाती, कभी मोबाइल पर। कितने कदम पूरे हुए, कितनी कैलोरी खर्च हुई और अभी कितनी दूरी तय करनी है, मन लगातार यही गणित करता रहता। साथ ही मुंबई की व्यस्त सड़कों पर वाहनों से बचते हुए चलना भी किसी साधना से कम नहीं। यहाँ पैदल चलने के लिए ध्यान, योग और सजगता... तीनों का एक साथ अभ्यास करना पड़ता है।

माइंडस्पेस पहुँचा तो वहाँ रोज़ जैसा ही जीवंत दृश्य था। ऊँची-ऊँची इमारतें, तेज़ रफ्तार ज़िंदगी, कार्यालयों से निकलते लोग, मोबाइल की दुनिया में खोए चेहरे और जगह-जगह बातचीत में मशगूल समूह। कुछ युवा सिगरेट के कश लगाते हुए भी दिखाई दिए। उन्हें देखकर लगा मानो किसी विज्ञापन का दृश्य चल रहा हो।

इसी बीच मेरी दृष्टि लगभग दस-बारह वर्ष की एक बच्ची पर जाकर ठहर गई। साँवला रंग, आँखों पर चश्मा और साइकिल चलाती हुई वह अपनी ही दुनिया में मग्न थी। अचानक उसने साइकिल रोकी। मुझे लगा शायद वह थक गई होगी। पर ऐसा नहीं था। उसने साइकिल एक ओर खड़ी की, दोनों हाथों से हल्की-सी ताल दी और अपने ही आनंद में गुनगुनाने लगी...

"निगाहें मिलाने को जी चाहता है..."

क्षणभर के लिए मैं ठिठक गया। चारों ओर नए गीतों, रैप, रील्स और डीजे की धुनों का शोर था, लेकिन उनके बीच यह नन्ही बच्ची एक पुराना हिंदी गीत पूरे मन से गा रही थी। उसकी आवाज़ धीमी थी, पर अत्यंत मधुर। चेहरे पर निष्कपट आनंद झलक रहा था। वह किसी श्रोता के लिए नहीं गा रही थी। वहाँ न कोई मंच था, न कैमरा और न ही सोशल मीडिया पर साझा करने की कोई चिंता। वह केवल अपने लिए गा रही थी।

शायद वह सुर साध रही थी, शायद स्वयं ही अपनी श्रोता और स्वयं अपनी परीक्षक थी, या शायद वह केवल संगीत का आनंद ले रही थी। मैंने उसे कुछ ही क्षण सुना, लेकिन उन कुछ क्षणों ने मन को गहरे तक छू लिया।

उस दिन माइंडस्पेस में हज़ारों लोग थे, सैकड़ों वाहन थे और असंख्य आवाज़ें थीं। फिर भी घर लौटते समय मेरे साथ जो स्मृति चल रही थी, वह उसी बच्ची की मधुर आवाज़ थी।

तभी मन में एक विचार कौंधा... यही माइंडस्पेस है, जहाँ एक मन सिगरेट के धुएँ में आनंद खोजता है और दूसरा मन पुराने गीतों के सुरों में। सच तो यह है कि माइंडस्पेस केवल एक स्थान का नाम नहीं, बल्कि मन की दिशा का भी प्रतीक है।

मन वास्तव में अद्भुत है। वही मन किसी को धुएँ की ओर ले जाता है और वही मन किसी को संगीत की ओर। वही मन क्षणिक सुख के पीछे भागता है और वही मन शाश्वत सुरों में तृप्ति खोज लेता है। (और मेरे जैसे कुछ लोग दस किलोमीटर पैदल चलने में आनंद ढूँढ़ते रहते हैं!)

जीवन में अंतर केवल हमारी पसंद का होता है। हमें धुएँ में खोना है या सुरों में जीना है... निर्णय हमारा अपना है।

उस बच्ची ने एक और बात याद दिला दी। अच्छे गीत कभी पुराने नहीं होते। समय बदलता है, पीढ़ियाँ बदलती हैं, तकनीक बदलती है, लेकिन कुछ धुनें समय की सीमाओं को पार कर अमर हो जाती हैं। शायद यही कारण है कि वह बच्ची उस गीत से जुड़ सकी और वही गीत सुनकर मुझे भी अनायास आनंद की अनुभूति हुई।

सच ही तो है... अच्छे सुरों की कोई उम्र नहीं होती। सैर समाप्त हुई, दिन भी बीत गया। लेकिन आज भी कभी-कभी वह मधुर स्वर कानों में गूँज उठता है - "निगाहें मिलाने को जी चाहता है..."

और तब लगता है कि इस भागदौड़ भरी दुनिया में अभी भी बहुत कुछ ऐसा शेष है, जो मन को धुआँ नहीं, बल्कि सुर देता है। जब तक हमारे आसपास ऐसी मासूम आवाज़ें गूँजती रहेंगी, तब तक आशा, संवेदना और संगीत की सरिता कभी नहीं रुकेगी।

उस दिन की पदयात्रा शरीर के स्वास्थ्य के लिए थी, लेकिन लौटते समय उस नन्ही बच्ची ने मेरे मन का भी सुंदर व्यायाम करा दिया।

# राजभाषा पुरस्कार प्राप्त करने का सरल मार्ग

**रोहित सोनुर्लेकर**
राजभाषा अधिकारी
(का. एवं औ. संबंध विभाग),
गोवा मंडल, पश्चिम क्षेत्र

**पुरस्कार पाने के लिए असल में क्या करना होगा**

हमें यह ध्यान में रखना होगा कि यदि हमें मंज़िल पर पहुँचना है तो तैयारी बहुत पहले से और छोटे-छोटे कदमों से करनी पड़ती है।

हमें भी इसकी तैयारी वर्ष की शुरुआत से ही करनी चाहिए।

हर वर्ष भारत सरकार, गृह मंत्रालय (राजभाषा विभाग) द्वारा राजभाषा कार्यान्वयन हेतु एक वार्षिक कार्यक्रम जारी किया जाता है, जिसमें 'क', 'ख' और 'ग' क्षेत्रों के लिए अलग-अलग लक्ष्य तय किए जाते हैं। हमें इन सभी लक्ष्यों का ध्यान रखना होगा और उनके अनुसार अनिवार्य रूप से काम करना होगा।

साथही, राजभाषा नियम, 1976 एवं राजभाषा अधिनियम 1963 के अधीन बनाए गए नियमों के उपबंधों के समुचित अनुपालन के लिए केन्द्रीय कार्यालय से प्राप्त जांच बिंदु संबंधी परिपत्र के आधार पर अपने अधीनस्थ कार्यालयों के लिए राजभाषा कार्यान्वयन हेतु प्रभावी जांच बिंदु बनाए जाएँ एवं उनका अनुपालन सुनिश्चित किया जाए।

वार्षिक कार्यक्रम और जांच बिंदुओं को ध्यान में रखते हुए केंद्रीय कार्यालय ने उनका अनुपालन मंडलों की राजभाषा कार्यान्वयन कार्य संबंधी उपलब्धियों का विवरण देने के लिए एक प्रोफार्मा तैयार किया है और इसी आधार पर हर उपलब्धि को रेटिंग दी गई है। कुल अधिकतम अंक 2500 हैं। जो मंडल सबसे ज़्यादा अंक प्राप्त करता है, उसे उस क्षेत्र में 'अध्यक्षीय राजभाषा शील्ड' और 'प्रबन्ध निदेशक कप' के लिए विजेता घोषित किया जाता है।

**महत्वपूर्ण कार्यो की जानकारी नीचे दी गयी है।**

1) **धारा 3(3) का अनुपालन:** यह सुनिश्चित किया जाए कि सभी 12 दस्तावेज़ द्विभाषी रूप में जारी हों, सभी का द्विभाषी प्रारूप इंट्रानेट साइट पर उपलब्ध होने पर 100 अंक दिए जायेंगे।

2) तिमाही रिपोर्ट के अनुसार कार्यालय द्वारा भेजे गए मूल पत्र/ई-मेल लक्ष्य तक या उससे अधिक, 300 अंक दिए जायेंगे। 'क' क्षेत्र में 100%, 'ख' में 90% और 'ग' क्षेत्र में 60% का लक्ष्य तय किया है।

3) **हिन्दी में टिप्पणियां लिखना:** मंडल कार्यालय यह सुनिश्चित करे कि उनके अधीनस्थ सभी विभागों में सभी फाईलों पर हिन्दी टिप्पणियां भारत सरकार द्वारा जारी किए गए वार्षिक कार्यक्रम में दिये गये लक्ष्यों के अनुरूप ही लिखी जा रही हैं। इसके अतिरिक्त उपस्थिति पंजी पर अवकाश संबंधी टिप्पणियां हिन्दी में लिखी जायें।टिप्पणियों के नमूने सुविधा के लिए वेबसाईट पर उपलब्ध कराए। हिंदी में टिप्पणियां लक्ष्य तक या उससे अधिक 100 अंक दिए जायेंगे, लक्ष्य से कम प्रत्येक प्रतिशत के लिए एक ऋणांक अर्थात् -1. 'क' क्षेत्र के लिए 100%, 'ख' 55% और 'ग' क्षेत्र 35% का लक्ष्य तय किया है।

4) **मण्डल एवं शाखा कार्यालयों द्वारा भारत सरकार, राजभाषा विभाग के पोर्टल पर ऑनलाइन तिमाही प्रगति रिपोर्ट का प्रेषण:** तिमाही समाप्ति पर अगले माह की तारीख को प्रेषित रिपोर्टों के आधार पर अंकों का आबंटन किया जाता है।

   05 तारीख तक भेजने पर 25 अंक, 06 से 10 तारीख तक भेजने पर 15 अंक, 11 से 15 तारीख तक भेजने पर 5 अंक और उसके बाद भेजने पर (-)10 अंक. 100 अंक दिए जायेंगे।

   मंडल कार्यालय को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि वे अपने विभागों की तिमाही रिपोर्टों पर सख्ती से फॉलो-अप करें, उन्हें एक साथ समेकित करें और अगले महीने की 5 तारीख से पहले भारत सरकार, राजभाषा विभाग के ऑनलाइन पोर्टल पर अपलोड करें।

5) मण्डल कार्यालयों के विभागों एवं शाखा कार्यालयों से प्राप्त तिमाही रिपोर्ट की समीक्षा समय पर करे। सभी तिमाही रिपोर्ट की समीक्षा 10 दिन में करने पर 100 अंक दिए जायेंगे।

   11-20 दिन में समीक्षा करने पर 75 अंक, 21-30 दिन में समीक्षा करने पर 50 अंक, 31-40 दिन में समीक्षा करने पर 25 अंक और 41 दिन या उसके बाद समीक्षा करने पर 0 अंक दिए जायेंगे।

6) राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों के प्रत्येक तिमाही में मंडल कार्यालय /शाखा कार्यालयों में आयोजन सुनिश्चित किया

जाये। प्रत्येक बैठक की तिथि में कम से कम 3 महिने का अंतराल सुनिश्चित किया जाये। बैठक का कार्यवृत्त क्षेत्रीय कार्यालय को अनिवार्य रूप से प्रेषित किया जाये। प्रत्येक तिमाही की बैठक उसी तिमाही में आयोजित करने पर प्रत्येक तिमाही के लिए 25 अंक-अधिकतम 100 अंक प्रतिशत के आधार पर दिए जायेंगे। किसी तिमाही की बैठक आगामी तिमाही में आयोजित करने पर कोई अंक नहीं दिया जाएगा। बैठक की कार्यसूची व कार्यवृत्त अवश्य लगाएँ।

7) अन्य प्रबंधकीय बैठकें, (डीएमसी/ज़ेडएमसी) जिनकी कार्यसूची व कार्यवृत्त हिंदी में लिखे जाएँ। प्रत्येक बैठक के लिए 25 अंक, बैठक की कार्यसूची व कार्यवृत्त लगाएँ। अधिकतम 100 अंक प्रतिशत के आधार पर दिए जायेंगे।

8) मंडल कार्यालय के सभी विभागाध्यक्ष यह सुनिश्चित करें कि उनके विभाग की वेबसाईट पूर्णत: द्विभाषी हो। अंग्रेजी की वेबसाईट के साथ ही हिन्दी वेबसाईट को भी अद्यतन किया जाए। कार्यालय की इंट्रानेट साइट विभागों के द्विभाषी पेज के आधार पर अधिकतम अंक 50 और मण्डल के राजभाषा विभाग का अद्यतित पृष्ठ (मण्डल स्वतंत्र साइट) अधिकतम अंक 50, कुल अंक-100।

9) पुस्तकालय में पुस्तकों की खरीद पर किए जाने वाले व्यय का 50% हिन्दी पुस्तकों की खरीद पर अनिवार्यत: खर्च किया जाए, शेष 50% में से भी अधिकतम व्यय प्रादेशिक भाषा की पुस्तकों पर व न्यूनतम व्यय अंग्रेजी पुस्तकों पर किया जाए। संबन्धित मण्डल कार्यालय द्वारा वर्ष के दौरान पुस्तकों की खरीद: पुस्तकों के क्रय हेतु न्यूनतम बजट 5000 रुपए एवं हिन्दी पुस्तकों पर व्यय का न्यूनतम लक्ष्य 50% हिन्दी पुस्तकों पर हुए खर्च के प्रत्येक प्रतिशत के लिए 2 अंक दिए जायेंगे। कुल अंक-100।

10) राजभाषा अधिकारी एवं राजभाषा सहायक द्वारा सभी अधीनस्थ शाखा कार्यालयों एवं मंडल कार्यालय के सभी विभागों का गुणवत्ता प्रबंधकीय विश्लेषण एवं निरीक्षण किया जाना आवश्यक है। मण्डल के विभागों /शाखा कार्यालयों का निरीक्षण-केवल राजभाषा अधिकारी द्वारा किए गए निरीक्षण के आंकड़े प्रेषित करना है। प्रत्येक निरीक्षण के लिए 0.5 (आधा) कुल अंक-100।

11) प्रत्येक वित्तीय वर्ष के आरंभ में केवल मंडल के कर्मचारियों एवं अधिकारियों की पदस्थापना, स्थानांतरण, पदोन्नति एवं सेवानिवृत्ति की स्थिति में हिन्दी ज्ञान संबंधी नामावली (रोस्टर) तत्काल अद्यतन किया जाना सुनिश्चित करें। हिन्दी रोस्टर के अनुसार प्रवीणता प्राप्त कर्मचारियों को नियम 8(4) के तहत नवीनतम व्यक्तिश: आदेश जारी करने की तिथि एवं उसकी प्रति कार्यालय प्रमुख द्वारा हस्ताक्षरित कराई जाए। प्रतिशत के आधार पर कुल अंक-100

12) कार्मिकों को हिन्दी प्रशिक्षण हेतु भारत सरकार, राजभाषा विभाग द्वारा आयोजित प्रवीण, प्रबोध, प्राज्ञ और पारंगत परीक्षाओं को सफलतापूर्वक पास करने के लिए प्रोत्साहित करें और उन्हें इन परीक्षाओं को पास करने पर मिलने वाले नकद प्रोत्साहन का लाभ उठाने के लिए प्रेरित करें। मापदंड- अंक प्रशिक्षित कार्मिकों का प्रतिशत प्रत्येक प्रतिशत के लिए एक अंक। कुल अंक-100 दिए जायेंगे।

13) प्रत्येक तिमाही में राजभाषा विभाग, मंडल कार्यालय द्वारा कार्यालय के विभागों एवं शाखाओं में अधिकारियों/कर्मचारियों को अपना अधिकाधिक कार्य हिन्दी में करने के लिए प्रोत्साहित करने हेतु हिन्दी कार्यशाला आयोजित की जाए। कार्यशाला में राजभाषा नियम-अधिनियमों के अलावा कम्प्यूटर पर हिन्दी प्रयोग हेतु प्रशिक्षण अनिवार्यत: दिया जाये। इसमें भाग लेने वालों की संख्या 15 से कम न हो। प्रत्येक कार्यशाला के लिए 10 अंक + कर्मचारियों के लिए 15 अंक= प्रत्येक कार्यशाला के लिए कुल 25 अंक, अधिकतम 100 अंक दिए जायेंगे।

14) वार्षिक कार्यक्रम और जांच बिंदुओं के अनुसार सभी नियमों और विनियमों को लागू करना सुनिश्चित करें ताकि मंडल के राजभाषा विभाग को "उत्कृष्ट" निरीक्षण श्रेणी प्राप्त हो सके। राजभाषा विभाग को प्राप्त निरीक्षण श्रेणी के लिए अंकों का आबंटन: (i) उत्कृष्ट/Excellent 100 अंक, (ii) बहुत अच्छा/Very Good 50 अंक और (iii) अन्य /Other 00 अंक। अधिकतम 100 अंक दिए जायेंगे।

15) अधीनस्थ शाखा कार्यालयों को राजभाषा कार्यान्वयन में प्राप्त निरीक्षण श्रेणी (i) उत्कृष्ट/Excellent, (ii) बहुत अच्छा/ Very Good और (iii) अन्य /Other प्रतिशत के आधार पर अधिकतम 100 अंक दिए जायेंगे।

16) राजभाषा कार्यान्वयन के लिए प्रतियोगिता अवधि में गृह मंत्रालय राजभाषा विभाग भारत सरकार, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, निगम एवं अन्य साहित्यक संस्थाओं द्वारा प्राप्त पुरस्कार के लिए पुरस्कार अंक - प्रथम पुरस्कार 100, द्वितीय पुरस्कार 75 तृतीय पुरस्कार 50 और प्रोत्साहन पुरस्कार 25 अधिकतम 300 अंक दिए जायेंगे।

सभी पुरस्कारों के संबंध में प्राप्त प्रमाणपत्र की प्रति जोड़ें तथा प्रत्येक श्रेणी में केवल एक ही पुरस्कार मान्य होगा।

17) प्रत्येक वर्ष मंडल कार्यालय द्वारा अनिवार्य रूप से राजभाषा गृह पत्रिका का प्रकाशन किया जाये। पत्रिका की डिजीटल ई-पत्रिका प्रति एवं कम मात्रा में मुद्रित प्रति प्रकाशित की जा सकती है। प्रकाशन प्रक्रिया इस प्रकार शुरु की जाए कि उसे हिंदी पखवाड़े के दौरान विमोचित किया जा सके। प्रकाशन की तिथि/नाम के लिए 50 अंक, साइट पर पत्रिका की ई प्रति की उपलब्धता के लिए 25 अंक और साइट पर उपलब्ध प्रकाशित अन्य/अतिरिक्त ई - पत्रिका विवरण के लिए 25 अंक।

18) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में मंडल कार्यालय एवं अधीनस्थ सभी शाखाओं द्वारा अनिवार्य रूप से हिस्सा लिया जाये। नराकास का सदस्य यदि मंडल कार्यालय है तो उसका प्रतिनिधित्व वरिष्ठ मंडल प्रबंधक एवं प्रबंधक (का. एवं औ. सं.)/ राजभाषा अधिकारी द्वारा किया जाना चाहिये। यदि शाखा कार्यालय नराकास का सदस्य है तो उसका प्रतिनिधित्व वरिष्ठ/ शाखा प्रबंधक द्वारा किया जाना आवश्यक है। बैठक का कार्यवृत्त क्षेत्रीय कार्यालय को भी प्रेषित किया जाये। नराकास प्रथम और द्वितीय बैठक के लिए अधिकतम 100 अंक दिए जायेंगे।

19) शाखाओं एवं मंडल के सभी विभागाध्यक्ष यह सुनिश्चित करें कि उनके कार्यालय एवं विभाग के सभी कम्प्यूटरों पर हिन्दी साफ्टवेयर उपलब्ध है व सभी कर्मचारियों को कम्प्यूटर पर हिन्दी में काम करने के लिए प्रशिक्षण हेतु राजभाषा विभाग द्वारा समय-समय पर आयोजित की जाने वाली हिंदी कार्यशाला में नामित किया जाना भी सुनिश्चित करें। हिन्दी ई-फीप मोड्यूल का अधिकतम उपयोग सुनिश्चित किया जाए। अवकाश यात्रा रियायत, वाउचर आदि हिन्दी ई-फीप मोड्यूल में तैयार किए जाएं। प्रत्येक मॉड्यूल के प्रत्येक प्रिंट/ई-प्रति के लिए 1 अंक अधिकतम 25 अंक हर तिमाही में। अधिकतम 100 अंक दिए जायेंगे।

20) मंडल कार्यालय के विपणन विभाग के प्रमुख द्वारा यह सुनिश्चित किया जाना चाहिये कि प्रिंट मीडिया, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया तथा बैनर-होर्डिंग पर व्यय किए जाने हेतु अनुमानित बजट की 50% राशि केवल हिन्दी के विज्ञापनों पर खर्च की जा रही है। साथ ही, उन्हें यह भी ध्यान रखना चाहिए कि शेष 50% राशि में से अधिकतम राशि प्रादेशिक भाषाओं के विज्ञापनों पर तथा अत्यल्प राशि अंग्रेजी पर खर्च हो। विज्ञापनों पर खर्च का सही प्रतिशत बनाए रखने पर अधिकतम 100 अंक दिए जायेंगे।

21) कर्मचारियों के लिए 'हिंदी ज्ञानपीठ' मॉड्यूल में चार सब-मॉड्यूल दिए गए हैं, जो रोज़मर्रा के कामकाज में ज्ञान बढ़ाने और हिंदी में पत्राचार को बढ़ावा देने के लिए बहुत उपयोगी हैं। कुल कार्मिकों की संख्या के आधार पर सभी 04 सब मॉड्यूल पास करने वाले कार्मिकों की संख्या- क क्षेत्र के लिए, न्यूनतम 02 सब मॉड्यूल पास करने वाले कार्मिकों की संख्या - ख क्षेत्र के लिए तथा न्यूनतम 01 सब मॉड्यूल पास करने वाले कार्मिकों की संख्या - ग क्षेत्र के लिए अधिकतम 100 अंक दिए जायेंगे।

**अन्य महत्वपूर्ण कार्य**

ऊपरोक्त दिए गए प्रोफ़ार्मा के अलावा, कुछ और काम भी हैं जो इन लक्ष्यों को हासिल करने में मदद करते हैं। इनमें से कुछ ज़रूरी लक्ष्य नीचे दिए गए हैं।

1. सुनिश्चित करें कि कार्यालय की सभी रबर की मोहरें, नामपट्ट, सूचना पट्ट, आदि द्विभाषी तथा साईनबोर्ड त्रिभाषी अर्थात प्रादेशिक भाषा, हिन्दी व अंग्रेजी में हैं और यह भी देखें कि शब्दों का आकार अंग्रेजी से छोटा न हो। इसमें सबसे उपर क्षेत्रीय भाषा इसके पश्चात् हिन्दी और तत्पश्चात् अंग्रेजी का क्रम रखा जाये। यदि मुख्य क्षेत्रीय भाषा हिन्दी हो तो पहले हिन्दी, तत्पश्चात् अंग्रेजी।
2. शाखाओं एवं मंडल के विभागों में कार्यरत सभी कर्मचारियों एवं अधिकारियों को स्पष्ट रूप से यह निर्देश दिया जाये कि किसी भी स्थिति में हिन्दी में प्राप्त/हिन्दी में हस्ताक्षरित पत्रों का उत्तर/ पावती हिन्दी में ही दिया जाए। इस प्रकार के सभी पत्रों का अभिलेख जावक पंजी में रखा जाये।
3. कार्यालय के सभी फॉर्मों, कोडों, मैन्युअलों, पत्रशीर्ष, रजिस्टरों के शीर्ष इत्यादी का मुद्रण करने से पहले यह सुनिश्चित कर लें कि इन सामग्री का मुद्रण द्विभाषी में अर्थात् हिन्दी व अंग्रेजी में किया जाए। मंडल कार्यालय यह सुनिश्चित करें कि उनके कार्यालय के सभी विभागों एवं अधीनस्थ सभी शाखाओं की फाईलों व रजिस्टरों पर शीर्षक द्विभाषी लिखे जायें। रजिस्टरों में सभी प्रविष्टियाँ हिन्दी में ही की जाएँ।
4. यह सुनिश्चित किया जाए कि शाखाओं एवं मंडल द्वारा भेजे जानेवाले अग्रेषण पत्र एवं अनुस्मारक (ई-मेल सहित) हिन्दी में भेजे जाएं।
5. राजभाषा के प्रति जागरूकता फैलाने तथा समस्त कार्य हिन्दी में करने के लिए सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को प्रेरित करने हेतु सितंबर माह में प्रत्येक मंडल कार्यालय एवं सभी शाखा कार्यालयों में हिन्दी पखवाड़ा का आयोजन दिनांक 14 सितंबर से 28 सितंबर तक किया जाए। हिंदी पखवाड़े के दौरान हिंदी में ज़्यादा से ज़्यादा काम करें, जिससे साल भर में समग्र वृद्धि हासिल हो सके।

6. शाखाओं एवं मंडल के अधिकारी यह सुनिश्चित करें कि किसी भी प्रकार के भेजे जानेवाले एवं प्राप्त हिन्दी पत्रों (ई-मेल सहित) की प्रविष्टि आवक-जावक पंजियों में आवश्यक रूप से की जाये। हिन्दी तिमाही रिपोर्ट भरते समय इन पंजियों से भी आंकड़े लिये जायें।
7. प्रत्येक सोमवार को अपना समस्त कार्यालयीन कामकाज यथा- आवक-जावक पंजी में प्रविष्टि, टिप्पणी लेखन आदि हिंदी में ही किया जाये। ताकि आपके हिंदी के पत्राचार में वृद्धि हो।
8. तिमाही रिपोर्ट के साथ-साथ मासिक प्रगति रिपोर्ट भी तैयार करें ताकि आप मंडल और शाखा की प्रगति और उपलब्धियों की समीक्षा कर सकें। यदि उपलब्धि प्रतिशत में कोई कमी पाई जाती है, तो आप उस तिमाही के बचे हुए महीनों में उसे पूरा कर सकते हैं।
9. जहाँ भी आपको कोई परेशानी हो, हिंदी के काम के लिए तो आप गूगल की भी सहयता लेकर इसका प्रयोग कर सकते हैं, हिंदी में बातचीत और पत्राचार में बेहतर परिणाम पाने के लिए सभी ईमेल में ईमेल सिग्नेचर का इस्तेमाल करें।
10. अपनी डिवीज़न साइट के अंतर्गत राजभाषा के लिए एक अलग वेबसाइट बनाएं, ताकि हमारे कर्मचारी हिंदी में अपने रोज़मर्रा के कामकाज में इसका बेहतर इस्तेमाल कर सकें और हिंदी में पत्राचार बढ़ा सकें।
11. हिंदी पाठकों के लिए हिंदी किताबों की एक अलग लाइब्रेरी है, जिसमें हर साल नई हिंदी किताबें जोड़ी जाती हैं और हिंदी के प्रति उनकी रुचि बढाईए। हिंदी पुस्तकों की लाइब्रेरी ऐसी प्रमुख जगह पर बनाई जाए, जहाँ पाठक आसानी से पहुँच सकें।

**गोवा मंडल, राजभाषा कार्यान्वयन विभाग की उल्लेखनीय उपलब्धियाँ**

(1) भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा मंडल कार्यालय, गोवा को 'ग' क्षेत्र श्रेणी उपक्रम में संघ की राजभाषा नीति के श्रेष्ठ निष्पादन के लिए पुरस्कार।

| वर्ष | स्थान /पुरस्कार | दिनांक | वितरण समारोह स्थान |
|---|---|---|---|
| 2025 | प्रथम | 20.01.2026 | इंदौर, मध्य प्रदेश |
| 2024 | प्रथम | 17.02.2025 | जयपुर, राजस्थान |
| 2023 | प्रथम | 23.11.2023 | मुंबई, महाराष्ट्र |
| 2022 | प्रथम | 03.03.2023 | रायपुर, छत्तीसगढ |

(2) भारतीय जीवन बीमा निगम, केन्द्रीय कार्यालय द्वारा राजभाषा कार्यान्वयन हेतु 'ग' क्षेत्र के लिए गोवा मंडल कार्यालय को पुरस्कार।

| वर्ष | स्थान | पुरस्कार | वितरण समारोह स्थान |
|---|---|---|---|
| 2025-26 | प्रथम | अध्यक्षीय शील्ड | व. मं. प्र. सम्मेलन |
| 2024-25 | प्रथम | अध्यक्षीय शील्ड | व. मं. प्र. सम्मेलन |
| 2023-24 | प्रथम | अध्यक्षीय शील्ड | व. मं. प्र. सम्मेलन |
| 2022-23 | द्वितीय | प्रबंध निदेशक कप | व. मं. प्र. सम्मेलन |

(3) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, उत्तरी गोवा से राजभाषा के उत्कृष्ट कार्यान्वयन के लिए पुरस्कार प्राप्त।

| वर्ष | स्थान | पुरस्कार |
|---|---|---|
| 2025 | प्रथम पुरस्कार | शील्ड |
| 2024 | प्रोत्साहन पुरस्कार | कप |

हम भारत सरकार और अपने उच्च कार्यालयों द्वारा समय-समय पर जारी सभी नियमों, अधिनियमों, निर्देशों, वार्षिक कार्यक्रमों और चेक-पॉइंट्स का सख्ती और पूरे उत्साह के साथ पालन कर रहे हैं। इसके बहुत अच्छे नतीजे मिले हैं और पिछले 4 वर्षों में हमें भारत सरकार, गृह मंत्रालय, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति और अपने केंद्रीय कार्यालय से कई पुरस्कार मिले हैं।

अगर आप 'अध्यक्षीय शील्ड' या 'प्रबंध निदेशक कप' पाने के लिए प्रोफ़ार्मा में दी गई बातों का गंभीरता से पालन करते हैं, तो आप निश्चित रूप से भारत सरकार के गृह मंत्रालय के राजभाषा पुरस्कार और अपने अधिकार क्षेत्र की 'नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति' के पुरस्कार के लिए भी पात्र हो सकते हैं।

हमारी उपलब्धि के मुख्य बिंदु कार्यशाला के दौरान कर्मचारियों में उत्साह पैदा करके उचित प्रशिक्षण प्रदान करना, हमारे मंडल एवं शाखा स्तर पर ठोस निर्णयों के साथ तिमाही बैठकों का गंभीरता से संचालन करना और समय-समय पर समीक्षा के साथ उनका 100% कार्यान्वयन करना है।

मुझे यकीन है कि आप सभी अपने-अपने ऑफ़िस में राजभाषा हिंदी की प्रगति के लिए बेहतरीन काम कर रहे हैं, लेकिन अगर समय-सीमा और हिंदी में काम की प्रतिशत वृद्धि का पालन नहीं किया जाता है, तो आपका परिश्रम व्यर्थ है। अगर आप हर महीने और हर तिमाही में अपनी गतिविधियों की समीक्षा करते हैं, तो आप किसी भी पुरस्कार को पाने से दूर नहीं हैं।

राजभाषा हिंदी के प्रभावी कार्यांवयन में 12 "प्र"- प्रेरणा, प्रयास, प्रोत्साहन, प्रेम, पुरस्कार, प्रशिक्षण, प्रयोग, प्रचार, प्रसार, प्रबंधन, प्रोन्नति व प्रतिबद्धता की भूमिका तो रहती ही है। जब आप राजभाषा के कार्यान्वयन के लिए पूरी लगन और समर्पण के साथ अपनी दिलो-जान लगा देंगे, तो आप वास्तव में स्वयं प्रेरित महसूस करेंगे और अपने काम का भरपूर आनंद लेंगे। अंततः सफलता निश्चित रूप से आपकी ओर आकर्षित होगी।

कविता

# भाग्यशाली जन्मदिन

**दीपा आगाशे**
एम.पी.पी.आर. (कार्मिक विभाग),
केंद्रीय कार्यालय

क्या होता है जन्मदिन ?
बस एक आम दिन
या बस एक तारीख
या महज एक और पलटा हुआ पन्ना कैलेंडर का ?
या फिर कोई अलग-सा दिन ?
जशन-ए-खास...मुबारक-बाद या
खिलखिलाता त्योहार उम्र मनाने का
क्या उम्र सच में बढ़ जाती है इस एक दिन में ?
क्या बूढ़े हो जाते हैं हम ?
जिंदगी छूटने लगती है कंपकंपाते हाथों से ?
या महकने लगते हैं उम्मीदों के फूल, उभर उभर कर
जीवन वृक्ष की शाखों पर नए सिरे से ?
क्या कोई बता पायेगा ?
कि क्या बदल गया जन्मदिन से पहली वाली कल की रात में.. ?
और आज निकल आई सुबह धूप की नई किरणों की
सौगात में... ?

श्रीमान, ये सारे विवाद तो उनके लिए हैं
जो उम्र के पीछे भागते रहते हैं ...
एक थके हुए दिन से होकर दुसरी अंधियारी रात तक
और एक सुस्त रात से गुजरकर दूसरे दिन की धूप की खैरात
तक
पर वो लोग... वो लोग..
जिनके जागने की आहट पर धूप निकलने लगती ...
और जिनके नक़्श-ए-कदम पर राहें
खुद अपना रुख बदलने लगती हैं...
वो लोग जिनके शब्द मात्र से पलटने लगते हैं
प्राचीन ग्रंथपुरुष अपने पन्ने।
जिनके लिए मौसम भी बदल लेते हैं अपने फुलवारियों के
गहने।

उन श्रेष्ठ महापुरुषों को...,
उन्हें क्या फर्क लगता होगा जन्मदिन पर ?
वो तो कल की रात भी श्रेष्ठ नेता थे ....
जन-परिवार के धाता थे...
उन्हें आज भी अपनी आहट को संभालना है,
अपने पग चिन्हों को सँवारना है...
आज भी उन्हें चलना है लेकर अपने कन्धों पर नये दिन
को...
ताकि आज शाम का सूरज समय से ढल सके ।
और चांद जो आज छुपने कि बजाय रोशनी फैलाना चाह रहा
है ...
उसे धीरज देकर आसमान पर लाया जा सके।
जन्मदिन तो उनका जरूर मनाएँ, उनको अपने प्रेम से
नहलाएं ।
उनके नक्शे कदम पर चल, अपना जीवन सजाएँ ।
वो दिन जो स्वयं भाग्यशाली है,
क्योंकि कोई महान व्यक्ति उस दिन जन्मा है।

कविता

# भावना से सद्भावना तक

**भारती निकुंभ**
सहायक, नव-व्यवसाय,
मंडल कार्यालय, छत्रपती संभाजीनगर

भावना है मन का दर्पण
सद्भावना इसकी पहचान
जहाँ हृदय में प्रेम बसता
वहीं बसता सच्चा इन्सान

भावना वह स्पंदन है
जो हृदय में जन्म लेकर
मानव को मानव होने का बोध कराता है
भावना कल्याण का संकल्प बन जाती है
तभी उसका नाम सद्भावना होता है

भावना यदि करुणा बन जाए
सूखी धरती भी हरियायी
एक मधुर मुस्कान किसी की
जीवन भर का साथ निभाए

सद्भावना का दीप जलाकर
नफरत का अंधकार मिटाएँ
धर्म जाति भाषा से ऊपर
मानवता का गीत सुनाएँ

यही भारतीय जीवन दर्शन
जहां सेवा केवल कर्म नहीं
बल्कि पूजा मानी जाती है
इसी भावना का साकार रूप है
योगक्षेमं वहाम्यहम्

यह केवल ध्येय वाक्य नहीं
विश्वास का अमर वचन है
जो सुरक्षा के साथ साथ
आत्मीय उत्तरदायित्व का भी प्रतीक है

सात दशकों की यात्रा में
अनगिनत सपनों को सुरक्षा मिली
असंख्य परिवारों को संबल मिला
और करोडों विश्वासों ने
एक नाम एल आय सी के साथ अपना भविष्य जोडा

यह यात्रा केवल उपलब्धि नहीं
अपितु सेवा समर्पण और विश्वास की यात्रा है
हर पॉलिसी के पीछे किसी परिवार का सपना है
हर दावे के पीछे किसी के जीवन का विश्वास है
हर मुस्कान के पीछे कर्तव्यनिष्ठ कर्मयोगीयों का मौन परिश्रम

आइए हम अपने व्यवहार में विनम्रता
अपने निर्णयों में निष्पक्षता हृदय में सदभावना
ताकी आनेवाला प्रत्येक दिन सुरक्षित और अधिक मानवीय बने
जब भावना सद्भावना का रूप धारण करती है
तब सेवा दायित्व नहीं विश्वास का उत्सव बनती है

और तब सचमुच योगक्षेमं वहाम्यहम्
केवल शब्द नहीं रहते करोड़ों भारतीयों के
आशा सुरक्षा और विश्वास का
अमर प्रकाश बनकर जगमगाते हैं

भावना है मन का दर्पण
सद्भावना इसकी पहचान
जहाँ हृदय में प्रेम बसता
वहीं बसता सच्चा इन्सान

# संसदीय राजभाषा समिति निरीक्षण हेतु विशेष दिशा निर्देश

1. केंद्रीय कार्यालय/क्षेत्रीय कार्यालय या समिति कार्यालय से सीधे निरीक्षण की सूचना प्राप्त होते ही संबन्धित कार्यालय के प्रभारी तथा राजभाषा प्रभारी को तुरंत सूचित करना।
2. तत्पश्चात उपलब्ध कराई गई निरीक्षण प्रश्नावली को सुचारु रूप से भरना तथा दी गई निरीक्षण समयावधि के अनुसार सारे दस्तावेजों को एकत्रित करना।
3. यदि पूर्व मे कार्यालय का संसदीय राजभाषा समिति या आलेख एवं साक्ष्य समिति द्वारा निरीक्षण किया जा चुका है तो वर्तमान निरीक्षण हेतु प्रश्नावली मे आंकड़े भरते समय पुराने आंकड़े भी ब्रैकेट () मे भरें जाएंगे तथा पिछले निरीक्षण की अनुपालन रिपोर्ट अनुलग्नक के रूप मे लगाई जाएगी।
4. नियंत्रक कार्यालयों से उनके पृष्ठों को एकत्रित करना तथा उन्हे भी निरीक्षण प्रश्नावली मे सम्मिलित करना।

   प्रश्नावली के विभिन्न पृष्ठों का कार्यालय वार विवरण

| पृष्ठ संख्या | प्रश्नावली का विवरण |
|---|---|
| 3 - 39 | निरीक्षित कार्यालय के पृष्ठ |
| 40 - 43 | यदि शाखा कार्यालय का निरीक्षण है तो मण्डल कार्यालय द्वारा भरें जाएंगे अन्यथा खाली रहेंगे (वाटरमार्क मे लागू नहीं लिखा जाएगा) |
| 44 - 47 | क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा भरें जाएंगे अन्यथा क्षेत्रीय कार्यालय का निरीक्षण होने पर खाली रहेंगे (वाटरमार्क मे लागू नहीं लिखा जाएगा) |
| 48 - 57 | केंद्रीय कार्यालय द्वारा भरा जाना |
| 58 - 69 | वित्तीय सेवाएँ विभाग द्वारा उपलब्ध कराना |
| 70 - 72 | केंद्रीय कार्यालय द्वारा भरा जाना |
| 73 - 99 | राजभाषा संबंधी नियम एवं अधिनियम जिनकी जानकारी सभी को होना आवश्यक है। |

5. प्रश्नावली पूर्ण रूप से भरने तथा सभी आवश्यक अनुलग्नकों को लगाने के पश्चात प्रश्नावली को जांच तथा समीक्षा हेतु निर्देशानुसार नियत तिथि पर वित्तीय सेवाएँ विभाग वित्त मंत्रालय, जीवन दीप भवन, दूसरी मंजिल,संसद मार्ग नई दिल्ली, मे लेकर जाना।
6. वित्तीय सेवाएँ विभाग द्वारा समीक्षा प्राप्त होने के पश्चात प्रश्नावली पूर्ण कर (सभी अनुलग्नकों सहित) संसदीय राजभाषा समिति सचिवालय, 11 तीन मूर्ति मार्ग, नई दिल्ली मे मूल रूप से हस्ताक्षरित प्रति जमा करना।
7. समिति सचिवालय मे प्रश्नावली जमा होने के पश्चात कार्यालय मे निरीक्षण हेतु निरीक्षण प्रश्नावली की प्रतियाँ (14 मूल हस्ताक्षरित तथा 11 प्रतियाँ) तैयार करवाना।
8. निरीक्षण के दौरान राजभाषा प्रदर्शिनी हेतु सभी दस्तावेज़ एवं सामग्री (उपलब्ध कारवाई गई सूची के अनुसार) तैयार करना।
9. निरीक्षण के दौरान समिति द्वारा पूछे जाने वाले सभी प्रश्नों का संयम पूर्वक उत्तर देना।

# संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उपसमिति द्वारा निरीक्षण

संसदीय राजभाषा समिति द्वारा दिल्ली मण्डल कार्यालय-1 का दिनांक 09.09.2025 को राजभाषा निरीक्षण किया गया।
इस अवसर पर उपस्थित माननीय सांसद तथा निगम के वरिष्ठ अधिकारीगण।

संसदीय राजभाषा समिति द्वारा गांधीनगर मण्डल कार्यालय का दिनांक 13.09.2025 को राजभाषा निरीक्षण किया गया।
इस अवसर पर उपस्थित माननीय सांसद तथा निगम के वरिष्ठ अधिकारीगण।

संसदीय राजभाषा समिति द्वारा इंदौर मण्डल कार्यालय का दिनांक 17.10.2025 को राजभाषा निरीक्षण किया गया।
इस अवसर पर उपस्थित माननीय सांसद तथा निगम के वरिष्ठ अधिकारीगण।

संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उपसमिति द्वारा दिनांक 19.11.2025 को मुंबई मण्डल कार्यालय-3 का निरीक्षण किया गया। इस अवसर पर उपस्थित माननीय सांसद तथा निगम के वरिष्ठ अधिकारीगण।

संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उपसमिति द्वारा दिनांक 19.11.2025 को मुंबई मण्डल कार्यालय-4 का निरीक्षण किया गया। इस अवसर पर उपस्थित माननीय सांसद तथा निगम के वरिष्ठ अधिकारीगण।

संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उपसमिति द्वारा दिनांक 20.01.2026 को कानपुर मण्डल कार्यालय का निरीक्षण किया गया। इस अवसर पर उपस्थित माननीय सांसद तथा निगम के वरिष्ठ अधिकारीगण।

संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उपसमिति द्वारा दिनांक 22.01.2026 को वाराणसी मण्डल कार्यालय का निरीक्षण किया गया।
इस अवसर पर उपस्थित माननीय सांसद तथा निगम के वरिष्ठ अधिकारीगण।

संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उपसमिति द्वारा दिनांक 06.03.2026 को अमृतसर मण्डल कार्यालय का निरीक्षण किया गया।
इस अवसर पर उपस्थित माननीय सांसद तथा निगम के वरिष्ठ अधिकारीगण।

संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उपसमिति द्वारा दिनांक 13.05.2026 को कोट्टायम मण्डल कार्यालय का निरीक्षण किया गया।
इस अवसर पर उपस्थित माननीय सांसद तथा निगम के वरिष्ठ अधिकारीगण।

संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उपसमिति द्वारा दिनांक 13.05.2026 को एर्णाकुलम मण्डल कार्यालय का निरीक्षण किया गया।
इस अवसर पर उपस्थित माननीय सांसद तथा निगम के वरिष्ठ अधिकारीगण।

संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उपसमिति द्वारा दिनांक 11.06.2026 को शिमला मण्डल कार्यालय का निरीक्षण किया गया।
इस अवसर पर उपस्थित माननीय सांसद तथा निगम के वरिष्ठ अधिकारीगण।

संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उपसमिति द्वारा दिनांक 11.06.2026 को चंडीगढ़ मण्डल कार्यालय का निरीक्षण किया गया।
इस अवसर पर उपस्थित माननीय सांसद तथा निगम के वरिष्ठ अधिकारीगण।

संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उपसमिति द्वारा दिनांक 18.07.2026 को रायपुर मण्डल कार्यालय का निरीक्षण किया गया।
इस अवसर पर उपस्थित माननीय सांसद तथा निगम के वरिष्ठ अधिकारीगण।

यह कलमकारी शैली में बनाई गई हिरणों की चित्रकला है। हिरण कोमलता, शांति और प्रकृति के साथ सामंजस्य के प्रतीक हैं।

**अमिता गवाणकर**
प्र.अ. (मा.सं.वि.एवं प्रशिक्षण विभाग),
केंद्रीय कार्यालय

# पॉलिसी एक बार, फ़ायदे बार-बार.

7 सितंबर 2026 से उपलब्ध

**एलआईसी की बीमा प्लेटिनम जीवन सुरक्षा, गारंटीड एडिशन्स और अन्य कई लाभ प्रदान करती है, साथ ही आपके भविष्य को और समृद्ध बनाती है।**

प्रस्तुत है

## एलआईसी की बीमा प्लेटिनम

यूआईएन: 512N397V01 | प्लान नं.: 770

नॉन-पार, नॉन-लिंक्ड, जीवन, व्यक्तिगत, बचत योजना

### मुख्य विशेषताएँ:

- गारंटीड एडिशन्स - प्रत्येक ₹1,000/- के कुल वार्षिकीकृत प्रीमियम पर ₹70/- की दर से प्रतिवर्ष प्रीमियम भुगतान अवधि (Premium Paying Term-PPT) के दौरान अर्जित होंगे
- बूस्टर इनकम बेनिफिट - PPT के बाद 5वें वर्ष के अंत में मूल बीमा राशि का 70%
- नियमित आय लाभ - भुगतान अवधि (Policy Term minus PPT) के दौरान मूल बीमा राशि का 10% प्रतिवर्ष समाप्ति पर
- मौजूदा एलआईसी पॉलिसीधारकों तथा दिवंगत पॉलिसीधारकों के नामितों/लाभार्थियों के लिए रिबेट
- राइडर लाभों के माध्यम से बीमा सुरक्षा बढ़ाने का विकल्प

ऑनलाइन भी उपलब्ध

LIC/R1/2026-27/17/Hin

क्यूआर कोड स्कैन करें और My LIC App डाउनलोड करें

विज़िट करें: licindia.in

कॉल सेन्टर सर्विस (022) 6827 6827

हमारा वॉट्सएप नं. 8976862090 कहिए 'Hi'

LIC
भारतीय जीवन बीमा निगम
LIFE INSURANCE CORPORATION OF INDIA

हर पल आपके साथ

अधिक जानकारी के लिए, अपने बीमा एजेन्ट/अपनी निकटतम एलआईसी शाखा से संपर्क करें/www.licindia.in पर जाएं

हमें यहाँ फ़ॉलो करें: LIC India Forever | IRDAI Regn No.: 512

**धोखेधड़ी वाले फ़ोन कॉल्स तथा झूठे/भ्रामक प्रस्तावों से सावधान रहें.** आईआरडीएआई या इनके कर्मचारी बीमा व्यवसाय जैसे कि बीमा पॉलिसियों की बिक्री, बोनस की घोषणा या प्रीमियम्स के निवेश, राशियां लौटाना जैसी कोई भी गतिविधियों में शामिल नहीं होते हैं. जिन पॉलिसीधारकों या संभावित ग्राहकों को ऐसे फ़ोन कॉल्स मिलें, वे कृपया पुलिस में इसकी शिकायत दर्ज करें. **कृपया बिक्री के समापन से पहले बिक्री पुस्तिका को ध्यान से पढ़ लें.**